GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

Class No. H
Book No. 891.553
N. L. 38. Am 325k
MGIPC—S1—19 LNL/62—27-3-63—100,000.

قصہ چہار درویش

TALES OF CHAHAR DURVEISH.

চারি জন ফকিরের বৃত্তান্ত ।

किस्सा चारदरवेशका ॥

FORMERLY TRANSLATED FROM THE PERSIAN IN TO THE OORDOO LANGUAGE,
BY DIRECTION OF MR. JOHN GILCHRIST.

Now Published from the Oordoo in the Nagree Language to enable those who are not well Conversant with the Oordoo Language, to Read the interesting Tales Contained in the above Work.

जो इस्से पहले मीर अमन देहलीके रहनेवालेने फारसीसे उरदू भाषामें हुकुमसे
मिस्तर जान गिलक्रिस्ट साहब बहादुरके तरजुमा कियाथा अब उस्को
औखयोगारायना पण्डितने उसी कोमल भाषा नागरी हरफोंमें तरजुमा
किया कि सब अमीर शौकीन और किस्सा कहानीके पढने सुनेवाले
जो फारसी विद्यामें दखल नहीं रखतेहैं वुह इस किस्सेसे
महरूम नरहैं इसलिये अपने छापेखानेमें छपवाया ॥

श्रीयुक्त मधुसूदन शील स्कूलबुकसुसैटीके यन्त्रशोधकके द्वारा यह पुस्तक शोधा गया

काश्मीरीययन्त्रालय

यह किताब जिनको लेनेकी इच्छा होवे उन्हें महानगर कलकत्ते बांसतलेकी गली
३० संख्या हवेली इसछापेखानेमें मिलेगी । सम्वत् १९०४ ॥

PRINTED AT THE CAHSHMERIAN PRESS, BANSTOLLAH LANE, CHITPORE ROAD.
CULCUTTA.—1847.

NOT TO BE LENT OUT
SHELF LISTED
IMPERIAL LIBRARY
15. AUG. 02
[illegible]
H
891.553
Am 325 k

सुबहान अल्लाह क्याशानै है कि जिसने ऐक मुट्ठी खाकसे क्या क्या सूरतें और मट्टीकी मूरतें पैदाकीं बावजूद दो रंगके ऐक गोरा ऐक काला और यही नाक कान हाथ पांव सबको दियेहैं तिसपर रंगबरंगकी शकलें जुदी जुदी बनाईं कि ऐककी सज धजसे दूसरेका डील डौल मिलता नहीं करोड़ों खलकतमें जिस्को चाहिये पहचान लीजिये आसमान उस्के दरियाय वहदतका ऐक बुला बुलाहै और जमीन पानीका बताशा लेकिन यह तमाशाहै कि समन्दर हजारों लहरें मारताहै पर उस्का बाल बेका नहीं कर सका जिस्की यह कुदरत और सता हो उस्की हम्द और सनामें जुबान इनसानकी गोया गूंगीहै कहे तो क्या कहे बेहतर योंहै कि जिस बातमें दम नमार सके चुपका होरहे॥

अरशसेले फरशतक जिस्का कि यह सामानहै।
हमद उस्की गर लिखा चाहूं तो क्या इमकानहै॥
जब पयमबरने कहा हो मैंने पहचाना नहीं।
फिर जो कोई दावी करे इसका बड़ा नादानहै॥
रात दिन यह मेहरोमह फिरतेहैं सनअत देखते।
पर हर ऐक वाहिदकि सूरत दीदये हैरानहै॥

जिसका सानी और मुक़ाबिल है न होवेगा कभू ।
जैसे यकताको खुदाई सब तरह शायान है ॥
लेकिन इतना जानताहूं खालिको राजिक है वुह ।
हर तरहसे मुझ पर उसका लुत्फ़ और अहसान है ॥
हमदे [illegible]और नाते अहमदको यहांकर इखतताम ।
अब मैं आगाज़ उसको करताहूं जो है मनजूरकाम ॥
या इलाही वास्ते अपने नबी के आलके ।
कर यह मेरी गुफ़्तगू मकबूल तबये खासो आम ॥

जो साहबदाना और हिन्दुस्तानकी ज़बान बोलनेवाले हैं उनकी खिदमतमें गुज़ारिश करताहूं कि यह किस्सा चार दरवेशका इबतदामें अमीर खुसरो देहलवीने इस तकरीबसे कहा कि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ज़रीजरबख़्श जो उनके पीरथे और दरगाह उनकी दिल्लीमें किलेसे तीन कोस लाल दरवाजेके बाहर मटिया दरवाजेसे आगे लाल बंगलेके पासहै उनकी तबियत मांदी हुई तब मुरशिदका दिल बहलानेकेवास्ते अमीर खुसरो यह किस्सा हमेश कहते और बीमारदारीमें हाज़िर रहते अल्लाहने चन्दरोज़में शफ़ादी तब उन्होंने गुसल सेहतके दिन यह दुआदी कि जो कोई इस किस्सेको सुनेगा खुदाके फ़ज़लसे तनदुरुस्त रहेगा जबसे यह किस्सा फ़ारसीमें मुरव्विज हुआ ॥

और एक हज़ार दोसौ पन्दरह बरस हिजरी और अठारहसौ एक ईसवीमें जान गिलक्रिस्ट साहेब बहादुरके हुकुमसे मीर अमन दिल्लीवालेने इस किताबको उरदू ज़बानमें तरजुमा कियाथा मगर अकसर लोग जो फ़ारसी हरफोंसे वाकिफ़ियत नहीं रखतेहैं वे लोग इस अजीब किस्सेके पढ़नेसे महरूम रहतेहैं इस लिये संबत १९०३ और सन १८४७ ईसवीमें श्रीलक्ष्मीनारायण पण्डितने नागरीके जाननेवाले शौकीन लोगोंके पढ़नेकेवास्ते उरदूसे नागरी हरफोंमें लिखा कि हरएक नागरीके जाननेवाले इस किस्सेके पढ़नेसे दिल बहलावें और इस गुनहगारको यादकरें और जहां कहीं गलती रही हो तो माफ़ करें ॥

॥ शुरू किस्सेका ॥

अब आगाज़ किस्सेका करताहूं ज़रा कान धरकर सुनो और मुन्सिफ़ीकरो सैरमें चार दरवेशके यों लिखाहै और कहनेवालेने कहाहै कि आगे रूमके मुल्कमें कोइ शहेनशाहथा कि नौशेर्वांनकीसी अदालत और हातमकीसी सखावत उसकी ज़ातमेंथी नाम उसका आज़ादबख़्त और शहर कुस्तुन्तुनिय जिसको इस्तम्बोल कहतेहैं उसका पायतख़्तथा उसके वक़्तमें रईयत आबाद ख़ज़ाना मामूर लश्कर मोरफ़्फ़ा ग़रीबगुर्बा आसूदः ऐसे चैनसे गुज़रान करते और खुशीसे रहते कि हरएकके घरमें दिन ईद और रात शबबरातथी और जितने चोरचकार जेबकतरे सुबह खेजे उठाइगीरे दगाबाज़थे सबको नेस्तोनाबूद कर कर नाम निशान उनका अपने मुल्क भरमें नरक्खाथा सारी रात दरवाजे घरोंके बंद नहोते और दूकानें बाज़ारकी खुली रहतीं राही मुसाफ़िर जंगल मैदानमें सोना उछालते चले जाते कोइ नपूछता कि तुम्हारे मुंहमें कैदांतहैं और कहां जातेहो ॥

उस बादशाहके अमलमें हज़ारों शहरथे और कई सुलतान नालबन्दी देते ऐसी बड़ी सलतनत पर एक साअत अपने दिलको ख़ुदा की याद और बंदगीसे ग़ाफ़िल नरहता आराम दुनियाका जो चाहिये सब मौजूदथा लेकिन (फ़रज़न्द) कि ज़िन्दगानी का फलहै उसकी क़िसमतके बाग़में नथा इस ख़ातिर अक्सर फ़िक्रमंद रहता और पांचों वक़्तकी निमाज़के बाद अपने करीमसे कहता कि ऐ अल्लाह मुझ आजिज़को तूने अपनी इनायतसे सब कुछ दिया लेकिन इस अंधेरे घरका दीया नदिया यही अरमान जीमें बाक़ीहै कि मेरा नाम लेवा और पानी देवा कोइ नहीं और तेरे ख़ज़ाने ग़ैबमें सब कुछ मौजूदहै एक बेटा जीता जागता मुझे दे तो मेरा नाम और इस सलतनतका निशान क़ायम रहे इसी उम्मेदमें बादशाह की उमर चालीस बरसकी होगई एक दिन

शीशः महलमें निमाज़ अदा करकर वज़ीफा पढ़ रहेथे एकबारगी आईनेकी तरफ ख़याल जो करतेहैं तो एक सफेद बाल मूछोंमें नज़र आया कि मानिन्द तारे मुश्तरीके चमक रहाहै बादशाह देखकर आज़ुर्दः हुवे और ठंडी सांस भरी फिर दिलमें अपने सोच किया कि अफसोस तूने इतनी उमर नाहक बरबाद करदी और इस दुनियाकी हिर्समें एक आलमको जेरो जबर किया इतना मुल्क जो लिया अब तेरे किस काम आवेगी आख़िर यह सारा माल असबाब कोइ दूसरा उड़ावेगा तुझे तो पैग़ाम मौतका आचुका अगर कोइ दिन जियेभी तो बदनकी ताक़त कम होगी इसे यह मालूम होताहै कि मेरी तक़दीरमें नहीं लिखा कि वारिस छतर और तख़्तका पैदा हो आख़िर एक रोज़ मरनाहै और सब कुछ छोड जानाहै इसे यही बेहतरहै कि मैंही इसे छोड़दूं और बाकी जिन्दगी अपने ख़ालिककी यादमें काटूं ॥

यह बात अपने दिलमें ठहराकर पाईं बागमें जाकर सब मुसाहिबोंको जवाब देकर फरमाया कि कोई आजसे मेरे पास न आवे सब दीवान आममें आया जाया करें और अपने काममें मुस्तइद रहें यह कहकर आप एक मकानमें जाबैठे और मुसल्ला बिछाकर इबादतमें मशगूल हुवे सिवाय रोने और आह भरनेके कुछ काम न था इसी तरह बादशाह आज़ादबख़्तको कई दिन गुज़रे शामको रोजा खोलनेके वक्त एक छुहारा और तीन घूंट पानी पीते और तमाम दिनरात जाय निमाज़पर पड़ रहते इस बातका बाहर चर्चा फैला रफ्तः२ तमाम मुल्कमें ख़बर गई कि बादशाहने बादशाहतसे हाथ खींच कर गोशेनिशीनी इख़तियार की चारोंतर्फ ग़नीमों और मुफ़सिदोंने सिर उठाया और कदम अपनी हदसे बढ़ाया जिसने चाहा मुल्क दबालिया और सरंजाम सरकशीका किया जहां कहीं हाकिमथे उनके हुकुममें ख़लल अज़ीम वाके हुवा हर एक सूबेसे अरज़ी बद अमलीकी आनेलगी दरबारी उमरा जितनेथे जमाहुवे और सलाह मसलहत करने लगे आख़िर यह तजवीज़ ठहरी कि नवाब वज़ीर आक़िल और दानाहै और बादशाहका मोक़र्रिब और मोतमदहै और दर्जेमेभी सबसे बड़ाहै उन्हो ख़िदमतमें चलें देखें वुह क्या मुनासिब जानकर कहताहै सब उमरः अमीर वज़ीरके पास आये और कहा बादशाहकी यह सूरत और मुल्ककी वुह हक़ीकत अगर चंदे और तग़ाफुल हो तो इस मेहनतका मुल्क लिया हुआ मुफ़्तमें जाता रहेगा फिर हाथ आना बहुत

मुश्किलहै वज़ीर पुराना क़दीम नमकहलाल और अक्लमंद नामभी खिर्दमन्द इसम
बामुसम्माथा बोला अगर्चे बादशाहने हुज़ूरमें आनेको मनाकियाहै लेकिन् तुम चलो
मैंभी चलताहूं खुदा करे बादशाहकी मरज़ी आवे जो हुज़ूर बुलावे यह कह कर उसको
अपने साथ दीवान आम तलक लाया उसको वहां छोड़कर आप दीवान ख़ासमें आया
और बादशाहकी ख़िदमतमें महलीके हाथ कहला भेजा कि वह पीर गुलाम हाज़िरहै
कई दिनोंसे जमाल जहां आरा नहीं देखा उम्मेदवारहूं कि एक नज़र देखकर क़दम-
बोसी करूं तो ख़ातिरजमा हो यह अर्ज वज़ीरकी बादशाहने सुनी अज़बस्के क़दामत
और ख़ैर ख्वाही और तदबीर और जांनिसारी उसकी जानतेथे और अकसर उसकी
बात मानतेथे बाद तअम्मुलके फर्माया ख़िरदमन्दको बुलालो बारे जब परवानगी हुई
वज़ीर हुज़ूरमें आया आदाब बजा लाया और दस्तबस्तः खड़ारहा देखा तो बादशाहकी
अजब सूरत बन रहीहै कि ज़ारबिज़ार रोने और दुबलापेसे आंखोंमें हलके पड़गयेहैं
और चेहरा ज़र्द होगयाहै ख़िरदमन्दको ताब न रही बेइख्तियार दौड़कर क़दमों पर
जागिरा बादशाहने हाथसे सिर उसका उठाया और फरमाया लो मुझे देखा ख़ातिर्जमा
हुई अब जाओ ज्यादा मुझे नसताओ तुम सल्तनत् करो ख़िरदमन्द सुनकर डाढ़मारकर
रोया और अर्जकी गुलामको आपके तसद्दुक और सलामतीसे हमेशः बादशाहत मोय-
स्सरहै लेकिन जहां पनाहकी यक बयक इस तरहकी गोशः गीरीसे तमाम मुल्कमें
तहलका पड़ गयाहै और अंजाम इसका अच्छा नहीं यह क्या ख़याल मिज़ाज मुबारकमें
आया अगर इस ख़ानेज़ाद मौरूसीकोभी महरम इस भेदका कीजिये तो बेहतरहै जो
कुछ अक़्ल नाक़िसमें आवे इल्तिमास करे गुलामोंको जो यह सर्फराज़ियां बख्शीहैं
इसी दिनकेवास्ते कि बादशाह ऐशो आराम करें और नमकपरवर्दे तदबीरमें मुल्ककी
रहें खुदा नख्वास्तः जब फिकिर मिजाज आलीको लाहक हुई तो बन्दः हाय बादशाही
किस दिन काम आवेंगे बादशाहने कहा सच कहताहै पर जो फिकिर मेरे जीमेंहै सो
तदबीरसे बाहरहै ॥ सुन ऐ ख़िरदमन्द मेरी सारी उमर इसी मुल्कगीरीके दर्दसरमें
कटी अब यह सिनो साल हुआ आगे मौत बाक़ीहै सो उसकाभी पैग़ाम आया कि सियाह
बाल सफेद हो चले वह मसलहै (सारी रात सोये अब सुबहकोभी नजागें) अबतलक

एक बेटा पैदा नहुआ जो मेरी खातिरजमा होती इस लिये दिलसख्त उदास हुआ और मैं सब कुछ छोड़ बैठा जिस्का जी चाहे मुल्कके मामलेमें मुझे कुछ काम नहीं बल्के कोई दिनमें यह इरादा रखताहूं कि सब छोड़ छाड़ कर जंगल और पहाड़ोंमें निकल जाऊं और मुंह अपना किसीको नदिखाऊं इसी तरह यह चन्द रोजको जिन्दगी बसर करूं अगर कोई मकान खुश आया तो वहां बैठकर बन्दगी अपने माबूदकी बजालाऊंगा शायद आकबत बखैर हो और दुनियाको तो खूब देखा कुछ मजा नपाया इतनी बात बोलकर और एक आह भरकर बादशाह चुप हुवे खिरदमन्द उनके बापका वजीर था जब ये शाहजादेथे तबसे मुहब्बत रखताथा अलावः दाना और नेक अंदेशथा कहने लगा खुदाकी जिनाबसे नाउम्मेद होना हरगिज मुनासिब नहीं जिसने अठारह हजार आलमको एक हुकुममें पैदा किया तुम्हें ओलाद देनी उस्के नजदीक क्या बड़ी बातहै किब्ले आलम इस तसव्वरे बातिलको दिलसे दूर करो नहीं तो तमाम आलम दरहम बरहम होजायगा और यह सलतनत किस किस मेहनत और मशक्कतसे तुम्हारे बुजुर्गोंने और तुमने पैदा कीहैं एक दममें हाथसे निकल जावेगी और बेखबरीसे मुल्क वेरान होजायगा खुदा नखास्तः बदनामी हासिल होगी इस परभी बाज पुर्स रोजे कयामतकी हुआ चाहे कि तुझे बादशाह बनाकर अपने बन्दोंको तेरे हवाले कियाथा तू हमारी रहमतसे मायूस हुआ और रईयतको हैरान परेशान किया इस सवालका क्या जवाब दोगे पस इबादतभी उस रोज काम नआवेगी इसवास्ते कि आदमीका दिल खुदाका घरहै और बादशाह फक्त अदलकेवास्ते पूछे जायेंगे गुलामकी बे अदबी मआफ हो घरसे निकल जाना और जंगल जंगल फिरना जोगियों और फकीरोंका कामहै नकि बादशाहोंका तुम अपने जोग काम करो खुदाकी याद और बन्दगी जंगल पहाड़ पर मोकूफ नहीं आपने यह बैत सुनी होगी ॥

खुदा इस पास यह ढूंढे जंगलमें ।
ढुंढेरा शहरमें लड़का बगलमें ॥

अगर मुनसफी फरमाइये और इस फिदवीकी अरज कबूल कीजिये तो बेहतर योंहै कि जहांपनाह हरदम और हरसाअत ध्यान अपना खुदाकी तरफ लगाकर दोआ मांगा करें उसकी दरगाहसे कोई महरूम नहीं रहा दिनको बन्दोबस्त मुल्कका और

इनसाफ अदालत गरीब गुरबाको फरमावें तो बन्दे खुदाके दामने दौलतके सायेमें अमनो आमान खुश गुजरान रहें और रातको इबादत कीजिये और दरूद पयम्बरकी रूहे पाकको नियाज करकर दरवेश गोशेनशीन मुतव्किलोंसे मदद चाहिये और तालिब यतीम असीर अयालदारों मुहताजों और रांड़ बेवावोंको जर दीजिये ऐसे अच्छे कामों और नेक नीयतोंकी बरकतसे खुदा चाहे तो उम्मैदवारी है कि तुम्हारे दिलके मकसद और मतलब सब पूरे हो और जिसवास्ते मिजाज आली मुकद्दर हो रहा है वुह आरजूबर आवे और खुशी खातिर शरीफको होजावे परवरदिगारकी एनायत पर नजर रखिये कि वुह एक दममें जो चाहता है सो करता है बारे खिरदमन्द वजीरकी ऐसी ऐसी अरज मारूज करनेसे आजादबख्तके दिलको ढाढस बंधी फरमाया अच्छा तू जो कहता है भला यहभी करदेखें आगे जो अल्लाह की मरजी है सो होगी जब बादशाहके दिलको तसल्ली हुई तब वजीरसे पूछा कि और सब अमीरोदबीर क्या करते हैं और किस तरह हैं उसने अरज की कि सब अरकाने दौलत किबले आलमके जानो मालको दोआ करते हैं आपकी फिकिरसे सब हैरानो परेशान हो रहे हैं जमाल मुबारक अपना दिखाईये तो सबकी खातिरजमा होवे चिनांचे इस वक्त दीवाने आममें हाजिर हैं यह सुनकर बादशाहने हुकुम किया इनशा अल्लाह तआला कल दरबार करूंगा सबको कहदो हाजिर रहें खिरदमन्द यह वादा सुनकर खुश हुआ और दोनो हाथ उठाकर दोआ दी कि जबतलक यह जमीनो आसमान बरपा हैं तुम्हारा ताजो तख्त कायम रहे और हुजूरसे रोखसत होकर खुशी खुशी बाहर निकला और यह खुश खबरी उमरावोंसे कही सब अमीर हंसी खुशी घरको गये सारे शहरमें आनन्द होगई रईयत परजा मगन हुवे कि कल बादशाह बारे आम करेगा सुबहको सब खानेजाद आला अदना और अरकाने दौलत छोटे बड़े अपने अपने पाये और मरतबे पर आकर खड़े हुवे और मुन्तजिर जल्वे बादशाहीकेथे ॥

जब पहर दिन चढ़ा एक बारगी परदा उठा और बादशाहने बरामद होकर तख्ते मुबारक पर जलूस फरमाया नौबतखानेमें शादियाने बजने लगे सभोंने नजरें मुबारक बादोंकी गुजरानीं और मुजरे गाहमें तसलीमातो कोरनिशात बजा लाये मवाफिक कदरो मंजिलतके हर एकको सर्फराजी हुई सबके दिलको खुशी और चैन

हुआ जब दोपहर हुई बरखास्त होकर अन्दरूने महल दाखिल हुवे खासानोश्जां फरमाकर ख़ाब गाहमें आराम किया उस दिनसे बाद शाहने यही मुकर्रर किया कि हमेशः सुबहको दरबार करना और तीसरे पहरमें किताबका शगल या दरूद वजीफा पढ़ना और खुदाको दरगाहमें तोबाः इस्तगफार करकर अपने मतलबको दुआ मांगनी एक रोज किताबमे भी लिखा देखा कि अगर किसी शखसको ममया फिकिर ऐसी लाहक हो कि उस्का इलाज तदबीरसे नहोसके तो चाहिये कि तकदीरके हवाले करे और आप गोरिस्तान्को तरफ रजू करे दरूद पयम्बरकी रूहको उनको बखशे और अपने तईंभी नाबूद समझकर दिलको इस गफलते दुनियवीसे हुशियार रखे और खुदाकी कुदरतको देखे कि मुझसे आगे कैसे कैसे साहबे मुलकोखजानः इस जमीन पर पैदा हुवे लेकिन आसमांने सबको अपनी गरदिशमें लाकर खाकमें मिला दिया यह कहावत है ॥

चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रो।

दो पाटनके बीच आ साबत गया न को ॥

अब जो देखिये सिवाय एक मट्टीके ढेर इनका कुछ निशान बाकी नहीं रहा और सब दौलत दुनिया घरबार आल औलाद आशना दोस्त नौकर चाकर हाथी घोड़े छोड़कर अकेले पड़े हैं यह सब इनके कुछ काम नआया बलके अब कोई नामभी नहीं जान्ता कि ये कौनथे और कबरके अन्दरका अहवाल मालूम नहीं कि कीड़े मकोड़े चूंटी सांप उनको खागये या उनपर क्या बीती और खुदासे कैसी बनी ये बातें अपने दिलमें सोचकर सारी दुनियाको पेखनेका खेल जाने तब उसके दिलका गुञ्चा हमेशा शिगुफ्तः रहेगा किसी हालत पजमुर्दा नहोगा यह नसीहत जब किताबमें मुताला की बादशाह को खिरदमन्द वजीरका कहना याद आया और दोनोको मुताबिक पाया यह शौक हुआ कि इस पर अमल करूं लेकिन् सवार होकर और भीड़ भाड़ लेकर बादशाहोंकी तरहसे जाना और फिरना मुनासिब नहीं बेहतर यह है कि लिबास बदलकर रातको अकेले मुकाबिरोंमें या किसी मर्द खुदा गोशेनशीनकी खिदमतमें जाया करूं और शब-बेदार रहूं शायद इन मरदोंके वसीलेसे दुनियाकी मुराद और आकबतकी मुराद मुयस्सर हो यह बात दिलमें मुकर्रर कर कर एक रोज रातको मोटे झोटे कपड़े पहेनकर कुछ रुपै अशरफी लेकर चुपके किलेसे बाहर निकले और मैदानकी राहली

जाते जाते एक गोरिस्तानमें पहुंचे निहायत सिदके दिलसे दरूद पढ़ रहेथे और उस वक्त बादे तुन्द चल रहीथी बल्कि आंधी कहा चाहिये एक बारगी बादशाहको दूरसे एक शोलासा नजर आया कि मानिन्द सुबहके तारेके रौशनहै दिलमें अपने खयाल किया कि इस आंधी और अंधेरेमें यह रौशनी खाली हिकमतसे नहीं या यह तिलस्म है कि अगर फिटकरी या गंधक चिरागमें बत्तीके आस पास छिड़क दीजिये तो कैसीही हवा चले चराग गुल नहोगा या किसी वलीका चरागहै कि जलताहै जो कुछ हो सोहो चलकर देखा चाहिये शायद इस शमैकेनूरसे मेरेभी घरका चराग रौशनहो और दिलकी मुराद मिले यह नियतकरके उस तरफको चले जब नजदीक पहुंचे देखा तो चार फकीर बेनवा कफनियां गलेमें डाले और सिर जानूपर धरे आलम बेहोशीमें खामोश बैठेहैं और उनका यह आलमहै जैसे कोई मुसाफिर अपने मुल्क और कौमसे बिछड़कर बेकसी और मुफलिसीके रंजोगममें गिरफतार होकर हैरान रहजाताहै इसी तरहसे ये चारोंबकश दीवार होरहेहैं और एक चराग पत्थर पर धरा टिम-टिमा रहाहै हरगिज हवा उसको नहीं लगती गोया फानूस उसका आसमान बनाहै कि बेखतरे जलताहै ॥

आजादबख्तको देखतेही यकीन आया कि मुकर्रर तेरी आरजू इन मरदाने खुदाकी कदमकी बर्कतसे बर आवेगी और तेरी उम्मेदका सूखा दरखत इनकी तवज्जुहसे हरा होकर फलेगा इनकी खिदमतमें चलकर अपना अहवाल कहू और मजलिसका शरीक हो शायद तुझपर रहम खाकर दुआ करें जो बेनियाजके यहां कबूल हो यह इरादा करकर चाहा कि कदम आगे धरे वोहीं अकलने समझाया कि ऐ बेवकूफ जलदी नकर जरा देखले तुझे क्या मालूमहै कि ये कौनहै और कहांसे आयेहैं और किधर जातेहै क्या जाने यह देवहैं या गूले बियाबानी हैं कि आदमीकी सूरत बनकर बाहम मिल बैठेहैं बहर सूरत जलदी करना और इनके दरमियान जाकर मुखिल होना खूब नहीं अभी एक गोशेमें छिपकर हकीकत इन दरवेशोंकी जाना चाहिये आखिर बादशाहने यही किया कि एक कोनेमें उस मकानके चुपका जाबैठा कि किसीको उसके आनेकी आहटकी खबर नहुई अपना ध्यान उनकी तरफ लगाया कि देखिये आपुसमें क्या

बात चीत करतेहैं इत्तफाकन ऐक फकीरको छींक आई शुक्र खुदाका किया वो तीनों कलन्दर उसकी आवाजसे चौंकपड़े चरागको उकसाया और अपने अपने बिस्तरों पर हुक्के भरभर पीने लगे ऐक उन आजादोंमेंसे बोला कि यारो ने हम दर्द और रफीको ने अजी मर्द हम चार सूरतें आसमानकी गरदिशसे और दिनरातके इनकलाबसे दरबदर खाकबसर ऐकमुद्दत फिरे अलहमदुलिल्लाह कि तालेकी मदद और किसमतकी यावरीसे आज इस मुकाम पर बाहम मुलाकात हुई और कलका हाल कुछ मालूम नहीं कि क्या पेश आवे ऐक जगह रहें या जुदा जुदा हो जावें रात बड़ी पहाड़ होतीहै अभीसे पड़ पड़ रहना खूब नहीं इससे यह बेहतरहै कि अपनी अपनी सरगुजश्त जो इस दुनियामें जिस पर बीती हो बशरते कि झूठ इसमें कौड़ी भर नहो बयान करे तो बातोंमें रात कट जाय जब थोड़ीसी शबबाकी रहे तब लोट पोट रहेंगे सभोंने कहा याहादी जो कुछ इरशाद होताहै हमने कबूल किया पहले आपही अपना हाल जो गुजरा शुरू कीजिये तो हम मुस्तफीदहों ॥

॥ सैर पहेले दरवेशकी ॥

पहेला दरवेश दो जानूहो बैठा और अपनी सैरका किस्सा इस तरहसे कहने लगा यामाबूद अल्लाह जरा इधर मुतवज्जेहहो और माजरा इस बेसरोपाका सुनो ॥

यह सर्गुजश्त मेरी जरा कान् धर सुनो।
मुझको फलकने कर दिया जेरो जबर सुनो ॥
जो कुछ कि पेश आई है शिद्दत मेरे तईं।
उसका बयान करताऊं तुम सरबसर सुनो ॥

ऐ यारो मेरी पैदाइश और वतन बुजुर्गोंका मुलके यमनहै वालिद इस आजिजका मुलकुलतुज्जार खाजः अहमद नाम बड़ा सौदागरथा उस वक्तमें कोई महाजन या बैपारी उनके बराबर नथा अकसर शहरोंमें कोठियां और गुमाश्ते खरीद फरोफरो-खतकेवास्ते मुकर्ररथे और लाखों रुपै नकदो जिनस मुलक मुलककी घरमें मौजूदथी उनके यहां दो लड़के पैदा हुवे ऐक तो यही फकीर जो कफनी सेलीपहेने हुवे मुर्शिदोंकी हुजूरीमें हाजिर और बोलताहै दूसरी ऐक बहेन जिसको किबले गाहने अपने जीते जी और शहरके सौदागर बच्चे से शादी करदीथी वुह अपने

मुसराालमें रहतीथी गरज जिस्के घरमें इतनी दौलत और एक लड़का हो उस्के लाड़ प्यारका क्या ठिकानाहै मुझ फ़कीरने बड़े चाउचूमले मा बापके सायेमें परव रिशपाई और पढ़ना लिखना सिपाह गरीका कसब फ़न् सौदागरीकाभी खाता रोज़ नामा सीखने लगा चौदह बर्स तक निहायत खुशी और बेफ़िकीरमें गुजरी कुछ दुनियाका अंदेशा दिलमें नआया यकबयक एकही सालमें वालिदैन कज़ाय इलाहीसे मरगये अजब तरहका गमहुवा जिस्का बयान नहीं करसकता एकबारगी यतीम होगया कोई सिरपर बूढ़ा बड़ा नरहा इस मुसीबत नागहानीसे रात दिन रोया करताथा खाना पीना सब छुट गया चालीस दिन ज्यों त्यों करकटे चेहलुमने अपने बेगाने छोटे बड़े जमा हुवे जब फ़ातिहेसे फ़रागत हुई सबने फ़कीरको बापकी पगड़ी बंधवाई और समझाया दुनियामें सबके मा बाप मरते आयेहैं और अपने तईंभी एक रोज मरनाहै पस सबरकरो अपने घरको देखो अब बापकी जगह तुम सरदार हुवे अपने कारोबारमें हुशियार रहो तसल्ली देकर रोखसत हुवे गुमाश्ते कारबारी नौकर चाकर जितनेथे आनकर हाजिर हुवे नजरेंदीं और बोले कोठे नकदो जिनसके अपने नजरे मुबारकसे देखलो जिये एक बारगी जो उस दौलत बेइन्तेहा पर निगाह पड़ी आंखें खुल गईं दीवानखानेकी तईयारीका हुकुम दिया फ़र्राशोंने फ़र्श फ़ुरूश बिछाकर छतपरदे चिलवने तकल्लुफ़की लगादीं और अच्छे अच्छे खिदमतगार दीदारू नौकर रखे सरकार से जरक बरक की पोशाकें बनवादीं फ़कीर मसनद पर तकिया लगाकर बैठा वैसेही आदमी गुण्डे फांगड़े मुफ़तपर खाने पीनेवाले झूठे खुशामदी आकर आशना हुवे और मुसाहेब बने उनसे आठपहर सुहबत रहने लगी हरकहीं की बातें और जटल्लोंवाही बारहा इधर उधरकी करते और कहते इस जवानीके आलम्में केतकीकी शराब या गुले गुलाब खिचवाईये नाज़नीन माशूकोंको बुलवाकर उनके साथ पीजिये और ऐश कीजिये ॥

गर्ज आदमका शैतान आदमीहै हरदमके कहने सुनेसे अपनाभी मिजाज बहक गया शराब नाच और जुवेका चरचा शुरू हुआ फिर तो यह नौबत पहुंची कि सौदा गरी भूलकर तमाशबीनीका और देने लेनेका सौदा हुआ अपने नौकर और रफ़ीकोंने जब यह गफ़लत देखी जो जिस्के हाथ पड़ा अलग किया गोया लूट मचादी कुछ खबर न थी कितना रुपैया खरच होताहै कहांसे आया और किधर जाताहै मालेमुफ़्त दिल

बेरहम इस चरखके आगे अगर गंजेकारूंका होता तोभी वफा नकरता कई बरसके अरसेमें एक बारगी यह हालत हुई कि फकत टोपी और लंगोटी बाकी रही वो आशना जो दांत काटी रोटी खातेथे और चमचा भरखून अपना हरबातमें निसार करतेथ काफूर होगये बल्कि राहबाटमें अगर कहीं भेट मुलाकात होजाती तो आंखें चुराकर मुंह फेरलेते और नौकर चाकर खिदमतगार भलिये ढलैत खासबर्दार साबितखानी सब छोड़कर किनारे लगे कोई बातका पूछनेवाला नरहा जो कहे यह तुम्हारा क्या हाल हुआ सिवाय गम और अफसोसके कोई रफीकन ठहरा अब दमड़ीकी ठुड्डियां मुयस्सर नहीं जो चबाकर पानी पियूं दो तीन फाके कड़ाके खींचे ताब भूककी नलासका लाचार बेहयाईका बुरका मुंह पर डालकर यह कसद किया बहेनके पास चलिये लेकिन यह शरम दिलमें आतीथी कि किबलेगाहकी वफातके बाद नबहेनसे कुछ सलूक किया नखाली खत लिखा बल्कि उसने दो एक खत खतूत मातमपुरसी और इश्तियाकके जो लिखे उनकाभी जवाब इस ख्वाब खर्गोशमे नभेजा इस शर्मिन्दगीसे जीतो नचाहताथा परसिवाय उस घरके और कोई ठिकाना नजरमे नठहरा ज्यों त्यों पाप्यादा खाली हाथ गिरता पड़ता हजार मेहनतसे बोह कई मंजिलें काटकर हमशीरके शहरमें आकर उसके मकानपर पहुंचा वोह माजाई मेरा यह हाल देख कर बलायेंले और गले मिलकर बहुत रोईतेल माश और काजलके मुझपरसे सदके किये कहने लगी अगरचे मुलाकातसे दिल बहुत खुश हुआ लेकिन भईया तेरी यह क्यासूरतबनी उसका जवाब मैं कुछ नदेसका आंखोंमें आंसू डबडबाकर चुपकाहो रहा बहेनने जल्दी खासी पोशाक सिलवाकर हम्माममें भेजा नहा धोकर वो कपड़े पहने एक मकान अपने पास बहुत अच्छा तकल्लुफका मेरे रहनेको मुकरर किया सुबहको शरबत और लोजियात हलुआ सोहन पिस्तामगजी नाश्तेको और तीसरे पहरमे वेखुश्क और तरफल फलारी और रात दिन दोनों वक्त पुलाव नानकलिये कबाब तुहफा तुहफा मजेदार मंगवाकर अपने रूबरू खिलाकर जाती सबतरह खातिरदारी करती मैंने वैसी सखतियोंके बाद जो यह आराम पाया खुदाकी दरगाहमें हजार हजार शुक्र बजा लाया कई महीने इस फरागतमें गुजरे कि पांव उस खिलवतसे बाहर नरक्खा ।

ऐक दिन वुह बहन जो वजाय वालिदाके मेरी ख़ातिर रखतीथी कहने लगी ऐ बीरन तू मेरी आंखोंकी पुतली और मा बापकी मुई मिट्टीकी निशानीहै तेरे आनेसे मेरा कलेजा ठंडा हुआ जब तुझे देखतीहूं बाग़ बाग़ होती हूं तूने मुझे नेहालकिया लेकिन मरदोंको खुदाने कमानेके लिये बनायाहै घरमें बैठे रहना उनको लाज़िम नहीं जो मरद निखट्टू होताहै और घर सेवताहै उस्को दुनियाके लोग ताना महेना देतेहैं ख़सूस इस शहरके आदमी छोटे बड़े बेसबब तुम्हारे रहनेपर कहेंगे अपने बापकी दौलत दुनिया खो खाकर बहनोईके टुकड़ोंपर आपड़ा यह निहायत बेगैरती और मेरी तुम्हारी हसाई और मा बापके नामको सबब लाज लगनेका है नहीं तो मैं अपने चमड़े की जूतियां बनाकर तुझे पहनाउं और कलेजेमें डालरखूं अब यह सलाहहै कि सफरका क़सद करो खुदा चाहे तो दिन फिरे और इस हैरानी और मुफ़लिसीके बदले खातिर्जमई और खुशी हासिल हो यह बात सुनकर मुझेभी गैरत आई उस्की नसीहत पसंदकी जवाब दिया अच्छा अब तुम माकी जगहहो जो कहो सो करें यह मेरी मरज़ी पाकर घरमें जाके पचास तोड़े अशरफीके असील और लौंड़ियोंके हाथोंमें लेवाकर मेरे आगे लारखे और बोली ऐक क़ाफला सौदागरोंका दमिशक़को जाताहै तुम इन रुपयोंको जिनस तिजारतकी खरीद करो ऐक ताजिर ईमानदारके हवाले करके दस्तावेज़ पक्की लिखवालो और आपभी क़सद दमिशक़का करो वहां जब खैरियतसे जापहुंचो अपना माल मय मुनाफा समझ बूझ लीजियो या आप बेचियो वुह नक़्दलेकर मैं बाजार गया असबाब सौदागरीका खरीद कर कर ऐक बड़े सौदागरके सपुर्द किया निविश्तख़ांदसे ख़ातिर्जमा करली वुह ताजिर दरियाकी राहसे जहाज़ पर सवार होकर रवाना हुआ फ़क़ीरने खुशकी की राह चलनेकी तईयारीकी जब रुख़सत होने लगा बहनने ऐक सिरेपाउ भारी और ऐक घोड़ा जड़ाउ साज़से तवाजा किया और मिठाई पकवान ऐक ग्वासदानमें भरकर हिरनीसे लटका दिया और छागल पानी की शिकारबन्दमें बंधवादी इमाम ज़ामिनका रुपेया मेरे बाज़ूपर बांधा दहीका टीका माथेपर लगाकर आंसू पीकर बोली सिधारीये तुम्हें खुदाको सौंपा पीठ दिखाये जातेहो इसी तरह जल्द अपना मुंह दिखाइया मैंने फातेहा खैरकी पढ़कर कहा

तुम्हाराभी अल्लाह हाफ़िज़है मैंने क़बूल किया वहांसे निकलकर घोड़े पर सवार हो और खुदाकी तवक्कुलपर भरोसा करके दोमंज़िलको एक मंज़िल करता हुआ दमिश्कके पास जापहुंचा गर्ज जब शहरके दरवाजे पर गया बहुत रात जाचुकीथी दरवान और निगाहबानोंने दरवाज़ा बन्द कियाथा मैंने बहुत मिन्नतकी मुसाफ़िरहूं दूरसे धावा मारे आताहूं अगर किवाड़ खोलदो शहरमें जाकर दाने घासका आराम पाउं अंदरसे झिड़ककर बोले इस वक्त दरवाज़ा खोलनेका हुकुम नहीं क्यों इतनी रात गये तुम आये जब मैंने जवाब साफ़उनसे सुना शहरपनाहकी दीवारके तले घोड़े परसे उतर जीनपोश बिछाकर बैठा जागनेकी ख़ातिर इधर उधर टहलने लगा जिस वक्त आधी रात इधर आधी रात उधर हुई सुनसान होगया देखता क्याहूं कि एक सन्दूक़ क़िलेकी दीवारसे नीचे चला आताहै यह देखकर मैं अचंभेमें हुआ कि यह क्या तिलस्महै शायद खुदाने मेरी हैरानी औ सरगरदानी पर रहम खाकर खज़ाना गैबसे इनायत किया जब वुह सन्दूक़ ज़मीनपर ठहरा डरते डरते मैं पास गया देखा तो काटका सन्दूक़है लालचसे उसे खोला एक माशूक़ खूबसूरत कामनीसी औरत जिसके देखनेसे होश जाता रहे घाइल लहूमें तर्बतर आंखें बन्द किये पड़ी कुलबुलातीहै आहिस्तः आहिस्तः होंट हिलतेहैं और यह आवाज़ मुंहसे निकलतीहै ऐ कमबख़्त बेवफ़ा ऐ ज़ालिम पुर्जफ़ा बदला इस भलाई और मुहब्वतका यहीथा जो तूने किया भला एक ज़ख़म और भीलगा मैंने अपना तेरा इनसाफ़ खुदाको सौंपा यह कहकर उसी बेहोशीके आलम्में दुपट्टेका आंचल मुंहपर लेलिया मेरी तरफ़ ध्यान् नकिया फ़क़ीर उसको देखकर और यहबात सुनकर सुनहुआ जीमें आया किसी बेहया ज़ालिमने क्यों ऐसे नाज़नीन सनमको ज़ख़मी किया क्या उसके दिलमें आया और हाथ उस पर क्योंकर चलाया इसके दिलमें तो मुहब्वत अबतक बाक़ीहै जो इस जांकन्दनीकी हालतमें उसको याद करतीहै मैं आपही आप यह कह रहाथा आवाज उसके कानमें गई एक मर्तबा कपड़ा मुंहसे सरकाकर मुझको देखा जिस वक्त उसकी निगाह मेरी नज़रोंसे लड़ीं मुझे ग़श आने और जी सुन सुनाने लगा बज़ोर अपने तईं थांबाज़रबस्त करके पूछा सच कहो तुम कौन हो और यह क्या माजराहै अगर बयान करो तो मेरे दिलको तसल्ली हो यह सुनकर अगर्चे ताक़त बोलनेकी नथी आहिस्तेसे कहा शुक्रहै मेरी हालत ज़ख़मोंके मारे

यह कुछ होरहीहै क्या खाक बोलूं कोई दम की मेहमानहूं जब मेरी जान निकल जावे तो खुदाकेवास्ते जवांमर्दी करके मुझ बदबख्तको इसी सन्दूकमें किसी जगह गाड़ दीजो तो मैं भले बुरेकी जबानसे नजात पाऊं और तू दाखिल सवावके हो इतना बोलकर चुप हुई रातको मुझसे कुछ तदबीर नहोसकी वुह सन्दूक अपने पास उंठा लाया और घड़ियां गिन्ने लगा कि कब इतनी रात तमाम होती फजरको शहरमें जाकर जो कुछ इलाज इस्का होसके बमकदूर अपने करूं वुह थोड़ीसी रात ऐसी पहाड़ हो गई कि दिल घबराने लगा बारे खुदा खुदाकर सुबह जब नजदीक हुई मुर्गने बांगदी आदमियोंकी आवाज आने लगी मैंने फजरकी निमाज पढ़कर सन्दूकको खुर्जीमें कसा जोहीं दरवाजा शहरका खुला मैं शहरमें दाखिल हुआ हर एक आदमी और दूकानदारसे हवेली किरायेकी तलाश करने लगा ढूंडतेढूंडते एक मकान खुशकिता नया फरागतका भाड़े लेकर जाउतरा पहले उस माशूकोंको सन्दूकसे निकाल कर रूईके फाये पर मुलायम बिछोना करके एक गोशेमें लिटाया और आदमी एतबारी वहां छोड़कर फकीर जर्राहकी तलाशमें निकला हर एकसे पूछता फिरताथा कि इस शहरमें जर्राह कारीगर कौनहै और कहां रहताहै एक शख्सने कहा एक हज्जाम जर्राहीके कसब और हकीमीके फनमें पक्काहै और इस काममें निपट पक्काहै अगर मुर्देको उस पास लेजाओ खुदाके हुकुमसे ऐसी तदबीर करे कि एकबार वुहभी जी उठे वुह इस मुहल्लेमें रहताहै और ईसा नामहै यह खुश खबरी सुनकर बेइख्तियार चला तलाश करते करते पतेसे उस्के दरवाजे पर पहुंचा एक मर्द सफेद रीशको देहलीज पर बैठे देखा और कई आदमी मरहमकी तईयारीके लिये कुछ पीस पास रहेहैं फकीरने मारे खुशामदके अदबसे सलाम किया और कहा मैं तुम्हारा नाम और खूबियां सुनकर आया हूं माजरा यह है कि मैं अपने मुल्कसे तिजारतके लिये चला कबीलेको बसबब मुह-ब्बतके साथ लिया जब नजदीक इस शहरके आया थोड़ीसी दूर रहाथा जो शाम पड़गई अनदेखे मुल्कमें रातको चलना मुनासिब नजाना मैदानमें एक दरखतके तले उतर पड़ा पिछले पहर डाका आया जो कुछ माल असबाब पाया लूट लिया गहनेके लालचसे इस बीबीकोभी घाइल किया मुझसे कुछ नहोसका रात जो बाकीथी ज्यों त्यों कर काटी फजरही शहरमें आनकर एक मकान किराये लिया उनको वहां रखकर

मैं तुम्हारे पास दौड़ा आयाहूं खुदाने तुम्हें यह कमाल दियाहै इस मुसाफिर पर मेहर बानी करो गरीबखाने तशरीफ लेचलो उसको देखो अगर उसकी जिन्दगी हुई तो तुम्हें बड़ा जस होगा और मैं सारी उमर गुलामी करूंगा हंसा जर्राह बहुत रहम दिल और खुदा परस्तथा मेरी गरीबीकी बातोंपर तरस खाकर मेरे साथ उस हवेलीतक आया जखमोंको देखतेही मेरी तसल्लीकर बोला कि खुदाकी करमसे इस बीबीके जखम चालीस दिनमें भर आवेंगे गुसलेशफाकरवा दूंगा गरज उस मर्द खुदाने सब जखमोंको नीमके पानीसे धोधाकर साफ किया जो लायकटांकोंके थे उन्हें सिया बाकी घाव पर अपने खीसेसे एक डिबिया निकालकर कितनोंमें पट्टी रखी और कितनो परफाहा चढ़ाकर पट्टीसे बांध दिया और निहायत शफकतसे कहा मैं दोनो वक्त आया करूंगा तू खबरदार रहियो ऐसी हरकत नकरे जो टांके टूटजावें मुर्गका शोर्बा जाय गिजा उसको हल्कमें चुआईयो और अकसर अर्क बेदमुश्क गुलाबके साथ दिया कीजियो जो कूबत रहे यह कह कर रुखसत चाही मैंने बहुत मिन्नत की और हाथ जोड़कर कहा तुम्हारी तशरीफकी देनेसे मेरीभी जिन्दगानी हुई नहीं तो सिवाय मरनेके कुछ सूझता नथा खुदा तुम्हें सलामत रखे अतर पान देकर रुखसत किया मैं रात दिन खिदमतमें उस परीके हाजिर रहता आराम अपने ऊपर हराम किया खुदाकी दरगाहसे रोज रोज उसके चंगे होनेकी दुआ मांगता इत्तफाकन वुह सौदागरभी आपहुंचा और मेरा माल अमानत मेरे हवाले किया मैंने उसे औने पौने बेच डाला और दारू दरमनमें खरच करने लगा वुह मर्द जर्राह हमेशः आता जाता थोड़े अरसेमें सब जखम भरकर अंगूर करलाये बाद कई दिनके गुसल शफाका किया अजब तरहकी खुशी हासिल हुई खिलत और अशरफियां हंसाहज्जामके आगे धरीं और उस परीको मुकल्लफ फर्श बिछाकर मसनद पर बैठाया फकीर गरीबोंको बहुतसी खैर खैरात की उस दिन गोया बाद-शाहत हफ्त अकलीम की इस फकीरके हाथ लगी और उस परीका शफा पानेसे ऐसा रंग निखरा कि मुखड़ा सूरजके मानिन्द चमकने और कुन्दनकी तरह दमकने लगा नजर की मजालनथी जो उसके जमाल पर ठहरे फकीर बसरो चश्म उसके हुकुममें हाजिर रहता जो फरमाती सो बजा लाता वुह अपने हुस्नके गरूर और सर्दारीके दिमागमें जो मेरी तरफ देखती तो फरमाती खबरदार अगर तुझे हमारी खातिर मंजूरहै तो

हरगिज हमारी बातमें दम नमारियो जो हम कहें सो किये जाइयो अथवा किसी बातमें दखल नकरियो नहीं तो पछतावेगा उसकी वजेसे यह मालूम होताथा कि हक मेरी खिदमत गुजारी और फर्मांबरदारीका उसे अलबत्तः मंजूरहै फकीरभी उसकी मरजी बगैर एक काम नकरता उसका फरमाना बसरो चश्म बजा लाता एक मुद्दत इसी राजोनियाज़में कटी जो उसने फरमाइश की वोहीं मैंने ला हाजिर की इस फकीर पास जो कुछ जिनस और नक्द असल और नफेकाथा सब खरच हुआ उस बेगाने मुल्कमें कौन एतबार करे जो कर्जवामसे काम चले आखिर तकलीफ रोज मर्रके खर्च की होने लगी इस्से दिल बहुत घबराया फिकिरसे दुबला होता चला चेहरेका रंग कलभवा होगया लेकिन किस्से कहूं जो कुछ दिलपर गुजरे सो गुजरे कहरे दरवेश बरजाने दरवेश एक दिन उस परीने अपने शऊरसे दरियाफ्त करके कहा कें फलाने तेरी खिदमतोंका हक हमारे जीमें नक्श कलहजरहै पर उसका एवज बिलफेल हमसे नहीं हो सकता अगर वास्ते खरच जरूरीके कुछ दरकार हो तो अपने दिलमें अंदेशा नकर एक टुकरा कागज और दवात कलम हाजिर कर मैंने तब मालूम किया कि यह किसी मुल्की बादशाह जादीहै जो इस दिलो दिमागसे गुफ्तगू करतीहै फिलफौर कलमदान् आगे रख दिया उस नाजनीन्ने एक शुक्का दस्तखतखास्से लिखकर मेरे हवाले किया और कहा किलेके पास तरपोलियाहै वहां उस कूचेमें एक हवेली बड़ीसी है उस मकानके मालिकका नाम सइयदोबहारहैं तू जाकर इस रुक्केको उस तलक पहुंचावे फकीर मुवाफिक फरमाने उसके उसीनामो निशान पर मंजिल मकसूदतक जापहुंचा दरवानकी जबानी कैफियत खतकी कहला भेजी वहीं सुन्तेही एक हबशी जवान खूब सूरत एक फेटा तरहदार सजे हुवे बाहर निकल आया अगर्चे रंग सांवलाथा पर गोया तमाम नमक भरा हुआ मेरे हाथसे खत लेलिया नबोला नकुछ पूछा उन्हीं कदमों फिर अंदर चला गया थोड़ी देरमें ग्यारह किश्तियां सर्ब मुहर जर्बफ्तके तोड़े पोश पड़े हुवे गुलामोंके सिरपर धरे बाहर आया कहा इस जवानके साथ जाकर चौगोश पहुंचादो मैंभी सलाम कर रुखसत हुआ और अपने मकानमें लाया आदिम-योंको बाहरसे रुखसत किया वो किश्तियां अमानत हजूरमें उस परीके गुजराईं

देखकर फरमाया ये ग्यारह बिद्रे अशर्फियोंके ले और खर्चमें ला खुदा रज्जाकहै फकीर उन नकदको लेकर जरूरियातमें खर्च करने लगा अगर्चे खातिरजमा हुई पर दिलमें यह खलिश बाकी रही या इलाही यह क्या सूरतहै बगैर पूछे गछे इतनामाल नाआश्ना सूरत अजनबीने ऐक पुर्जे कागज पर मेरे हवाले किया अगर उस परीसे यह भेद पूछूं तो उसने पहलेही मनाकर रखाथा मारे डरके दम नहीं मारताथा बाद आठदिनके यह मांशूकः मुझसे मुखातिब हुई कि हकतालाने आदमीको इनसानियतका जामा इनायत कियाहै कि नफटे नमैलाहो अगरचे पुराने कपड़ेसे उसकी आदमियतमें फरक नहीं आता जाहिरमें खलकुल्लाहकी नजरोंमें ऐतबार नहीं पाता दो तोड़े अशर्फीके साथ लेकर चौकके चौराहे पर युसफ सौदागरकी दूकानमें जा और कुछ रकम जवाहिरके बेश कीमत और दो खिलअतें जर्कबर्ककी मोललेआ फकीर वोंहीं सवार होकर उसकी दुकान पर गया देखा तो ऐक जवान शकील जाफरानी जोडा पहने गद्दीपर बैठाहै और उसका यह आलमहै कि ऐक आलम देखनेको खड़ाहै फकीर कमालशौकसे नजदीक जाकर सलामो अलैक कर कर बैठा और जो जो चीज मतलूबथी तलब की मेरी बात चीत उस शहरके बाशन्दोंकीसी नथी उस जवानने गरम जोशीसे कहा जो साहबको चाहिये सब कुछ मौजूदहै लेकिन यह फरमाइये किस मुल्कसे आना हुआ और इस अजनबी शहरमें रहनेका क्या सबबहै अगर इस हकीकतसे मुत्तलः कीजिये तो मेहर्बानीसे दूर नहीं मेरे तईं अपना अहवाल जाहिर करना मंजूर नथा कुछ बात बनाकर और जवाहिर पोशाक लेकर और कीमत उसकी देकर रुखसत चाही उस जवानने रूखे फीके होकर कहा ऐ साहब अगर तुमको ऐसीही नाआश्नाई करनीथी तो पहले दोस्ती इतनी गरमीसे करनी क्या जरूरथी भले आदमियोंमें साहब सलामतका पास बड़ा होताहै यह बात इस मजे और अन्दाजसे कही बेइखतियार दिलको भाई और बमरूवत होकर वहांसे उठना इनसानियतके मुनासिब नजाना उसकी खातिर फिर बैठा और बोला तुम्हारा फरमाना सिर आंखोंपर मैं हाजिरहूं इतने कहनेसे बहुत खुश हुआ हंसकर कहने लगा अगर आजके दिन गरीबखानेमें कदमरंजः फरमाइये तो तुम्हारी बदौलत मजलिस खुशीकी जमाकर दो चार घड़ी दिल बहलावें और कुछ खाने पीनेका शगल बाहम बैठकर करें फकीरने उस परीको कभू अकेला नछोडाथा

उसकी तनहाई याद कर कर चंदे दरचंद उजर किये पर उस जवानने हरगिज नमाना ॥

आखिर वादा उन चीजोंको पहुंचाकर मेरे फिर आनेका लेकर और कसम खिलाकर रुखसतदी मैं दुकानसे उठकर जवाहिर ओर खिलअतें उस परीकी खिदमतमें लाया उसने कीमत जवाहिरकी और हकीकत जौहरीकी पूछी मैंने सारा अहवाल मोल तोलका और मेहमानीके बजिद होनेका कह सुनाया फरमाने लगीं आदमी को अपना कौल करार पूरा करना वाजिबहै हमेंखुदाकी निगहबानी में छोड़ कर अपने वादेको वफाकर जियाफत कबूल करनी सुन्नत रसूलकीहै तबमैंने कहा मेरादिल चाहता नहीं कि तुम्हें अकेला छोडकर जाऊं और हुकुमयोंहोताहै लाचार जाताहूं जबतलकआऊंगा दिलयहीं लगा रहेगा यह कहकर फिर उस जौहरीकेदुकान पर गया वुह मोंढ़े पर बैठामेरा इन्तिजार खींच रहाथा देखतेही बोला आओ मेहरबान बडी राह दिखाई वोहीं उठकर मेरा हाथ पकड़ लिया और चला जाते जाते एक बागमें लेगया वुह बड़ी बहारका बागथा हौज और नहरोंमें फव्वारे छूटतेथे मेवे तरहबतरहके फल रहेथे हर एक दरख्त मारे बोझके झूम रहाथा रंगबरंगके जानवर उनपर बैठे चहचहे कर रहेथे और हर मकान आलीशानमें फर्श सुथरा बिछाया वहां लबेनहर एक बंगलेमें जाकर बैठा एक दमके बाद आप उठकर चला गया फिर दूसरी पोशाक माकूल पहनकर आया मैंने देखकर कहा सुबहान अल्लाह चश्मेबद दूर सुनकर मुस्कराया और बोला मुनासिब यहहै कि साहबभी अपना लेबास बदल डालें उसकी खातिर मैंनेभी दूसरे कपड़े पहने उस जवानने बड़ी टीप टापसे तईयारी जियाफतकी की और सामान खुशीका जैसा चाहिये मौजूद किया और फकीरसे सुहबत बहुत गरम कर मजेकी बातें करने लगा इतनेमें साकी सुराही ओप्याला बिल्लौरका लेकर हाजिर हुआ और गज़क कई किसिमकी लारखी नमकदान चुनदिये दौर शराबका शुरू हुआ जब दो चार जामकी नौबत पहुंची चार लड़के अमर्द साहब जमाल जुलफें खोले हुवे मजलिसमें आये गाने बजाने लगे यह आलम हुआ और ऐसा समांबंधा अगर तानसैन उस घड़ी होता तो अपनी तान भूलजाता और बैजूबावरा सुनकर बावरा होजाता इस मजेमें एक बारगी वुह जवान आंसूभर लाया दो चार कतरे बेइखतियार निकल पड़े और फकीरसे बोला अब हमारे तुम्हारें दोस्ती जानी हुई पस दिलका भेद दोस्तों

से छिपाना किसू मजहबमें दुरुस्त नहीं ऐक बात बेतकल्लुफ आश्नाईके भरोसे कहताहूं अगर हुकुम होतो अपनी माशूक़ःको बुलवाकर इस मजलिसमें तसल्ली अपने दिलकी करूं उसकी जुदाईसे जीनहीं लगता यहबात ऐसी इश्तियाकसे कही कि बगैर देखे भाले फकीरका दिलभी मुश्ताक हुआ मैने कहा मुझे तुम्हारी खुशी दरकारहै इसमें क्या बेहतर देर नकीजिये सचहै माशूक़बिन् कुछ अच्छा नहीं लगता उस जवानने चिलवन्की तर्फ इशारतकी वोहीं ऐक औरत काली कलूटी भुतनीसी जिसके देखनेसे इनसान बेअजल मरजावे जवानके पास आन बैठी फ़कीर उसके देखनेसे डरगया दिलमें कहा यही महबूबः ऐसे जवान परीजादकीहै जिसकी इतनी तारीफ़ और इश्तियाक जाहिर किया मैं लाहौलपढ़ कर चुपहो रहा उसी आलममें तीनदिन रात मजलिस शराब और रागरंगकी जमीरही चौथी शबको गलबा नशे और नींदका हुआ मैं खाबे गफलतमें बेइखतियार सोगया जब सुबह हुई उस जवानने जगाया कई प्याले खुमार शिकनीके पिलाकर अपनी माशूक़ःसे कहा अब ज्याद: तकलीफ़ मेहमाको देनी खूबनही दोनो हाथ पकड़के उठे मैने रुखसत मांगी खुशी बखुशी इजाजतदी तब मैन जलद अपने कदीमी कपड़े पहेन लिये अपने घरकी राहली और उस परीकी खिदमतमें जा हाजिर हुआ मगर ऐसा इतेफाक कभू नहुआथा कि उसे तन्हा छोड़कर शबबाश कहीं हुआहूं इस तीनदिनकी गैरहाजरीसे निहायात शर्मिन्दः होकर उजुर किया और किस्सा ज्याफतका और उसके न रुखसत करनेका सारा अर्ज किया वुह ऐक दाना जमानेकोथी मुस्करा करके बोली क्या मुजायका अगर ऐक दोस्तकी खातिर रहना हुआ हमने मआफ किया तेरी क्या तकसीरहै जब आदमी किसूके घर जाताहै तब उसकी मर्जीसे फिर आताहै लेकिन यह मुफ्तकी मेहमानियां खा पीकर चुपके हो रहोगे या इसका बदलाभी उतारोगे अब यह लाजिमहै कि जाकर उस सौदागर बच्चेको अपने साथ लेआउ और उससे दो चंद जियाफत करो और असबाबका कुछ अंदेशा नहीं खुदाके करमसे ऐक दममें सब लवाजिमा तइयारहो जावेगा और बखूबी मजलिस जियाफतकी रौनक पावेगी फकीर मुवाफ़िक़ हुकुमके जोहरी पास गया और कहा तुम्हारा फर्माना मैने सिर आंखोंसे बजालाया अब तुमभी मेहर्बानीकी राहसे मेरी अर्ज कबूल करो उसने कहा जानुदिलसे हाजिरहूं तब मैने कहा अगर इसबन्देके घरमें तशरीफले चलो

11/891.553/Hon.325/2

ओन गरीब नवाजीहै उसने बहुत उजर और हीले कियेपर मैने पिंड नछोड़ा जबतलक वुह राजी नहुआ साथ उसको अपने मकानपर लेचला लेकिन राहमें यही फिकिर करता आताथा कि अगर आज अपने तईं मकदूर होता तो ऐसी जियाफत करता कि यह भी खुश होता अब मैं इसेलिये जाताहूं देखिये क्या इत्तेफाक होताहै इसी हेस बैसमें घरके नजदीक पहुंचा तो क्या देखताहूं कि दरवाजे पर धूम धाम होरही है गलियारेमे झाड़ू देकर छिड़काव कियाहै यसावल और आसेबर्दार खड़ेहैं मैं हैरान हुआ लेकिन अपना घर जानकर कदम अंदर रखा देखा तो तमाम हवेलीमें फर्श मुकल्लफ बिछाहै और मसन्दें लगीहैं पान्दान गुलाबपाश इतरदान पीकदान चंगेरें नर्गिसदान करीनेसे धरेहैं ताकोंपर रंगतरे कंवले नारंगियां और गुलाबिया रंग बरंग की चुनीहैं एक तरफ रंग आमेज अबरककी टट्टियोमें चरागानकी बहारहै और एक तरफ झाड़ और सरोकंवलके रोशनहैं और तमाम दालान और शहनशीनोंमें तिलाई शमेदानों पर काफूरीशमअें चढ़ीहैं और जड़ाऊ फानूसें उपर धरीहैं सब आदमी अपने अपने उहदोंमें मुस्तइदहै वावर्चीखानेमें देगें ठनठना रहीहैं आबदारखानेकी वैसीही तईयारीहै कोरी कोरी ठिलियां रूपेकी घड़ौंचियों पर साफियोंसे बंधी ढकी रक्खीहैं आगे आगे चौकी पर डोंगे कटोरेबमें थाली सर्पोश धरे बर्फके आबखोरे लग रहेहैं और शोरेकी सुराहियां हिल रहीहैं गरज सब असबाब बादशाहानः मौजूदहै और कंचनियां भांड़ भगतिये कलांवत कव्वाल अच्छी पोशाक पहने साजके सुर मिलाये हाजिरहै फकीरने उस जवानको लेजाकर मसनद पर बैठाया और दिलमें हैरानथा कि या इलाही इतने अरसेमें यह सब तईयारी क्योंकर हुई हर तरफ देखता फिरताथा लेकिन उस परीका निशान कहीं नपाया इसी जुस्तजूमें एक मरतबे बावर्चीखानेकी तरफ जानिकला देखताहूं तो वुह नाजनीन एक मकानमें गलेमें कुर्ती पांवमें तहपोशी सिरपर सफेद रूमाली ओढ़े हुवे सादी खोजादी बिनगहने पाते बनी हुई ॥

नहीं मुहताज जेवरका जिसे खूबी खुदानेदी ॥

कि जैसे खुशनुमा लगताहै देखो चांदबिनगहने ॥

खबर गीरीमें जियाफतकी लगरहीहै और ताकीद हरएक खानेकी कर रहीहै कि खबर्दार बामजाहो और आवोनमक बूबास दुरस्त रहै इस मेहनतसे वुह गुलाबसा

बदन सारा पसीने पसीने होरहाहै मैं पास जाकर तसद्दुक हुआ और इसग़ज़रो सियाग़तको सिराहकर दुआयें देने लगा यह खुशामद सुनकर तेवरी चढ़ाकर बोली आदमीसे ऐसे ऐसे काम होतेहैं कि फिरश्तेकी मजाल नहीं मैंने ऐसा क्या कियाहै जो तू इतना हैरान हो रहाहै बस बहुत बातें बनानी मुझे खुश नहीं आती भला कहतो यह कौन आदिमयतहै कि मेहमानको अकेला बैठाकर इधर उधर पड़े फिरे वुह अपने जीमें क्या कहता होगा जल्द जा मजलिसमें बैठकर मेहमानकी खातिर्दारी कर और उसको माशूकःकोभी बुलवाकर उसके पास बिठला फकीर वोहीं उस जवानके पास गया और गरम जोशी करने लगा इतनेमें दो गुलाम साहेब जमाल सुराही और जड़ाऊ पियाला हाथमें लिये हुवहू आये शराब पिलानेलगे इसमें मैंने उस जवानसे कहा मैं सब तरह मुखलिस और खादिमहूं बेहतर यहहै वुह साहेब जमाल कि जिसकी तरफ दिल साहेबका माइलहै तशरीफ लावे तो बड़ी बातहै अगर फर्माओ तो आदमी बुलानेकी खातिर जावे यह सुन्तेही खुश होकर बोला बहुत अच्छा इस वक्त तुमने मेरे दिलकी बात कही मैंने एकखोजेको भेजा जब आधी रात गई वुह चुड़ैलखासे चोडोलपर सवार होकर बलाये नागहानीसी आपहुंची फकीरने लाचार खातिरसे मेहमानकी इस्तकबाल करकर निहायत तपाकसे बराबर उस जवानके लाबिठाया जवान उसके देखनेसे ऐसा खुश हुआ जैसी दुनियाकी न्यामत मिली वुह भुतनीभी उस जवान परीज़ादके गले लिपट गई सचमच यह तमाशा हुआ जैसे चौदहवीं रातके चांदको गहन लगताहै जितने मजलिसमें आदमीथे अपनी अपनी उंगलियां दांतोंमें दाबने लगे कि क्या कोई बला इस जवान पर मुसल्लत हुई सबकी निगाह उसी तरफथी तमाशा मजलिसका भूलकर उसका तमाशा दखने लगे एक शख्स बोला यारो इश्क और अकलमें जिदहै जो कुछ अकलमें नआवे यह काफर इश्ककर दिखावे लैलीको मजनूंकी आंखोंसे देखो सभोंने कहा सच यही बातहै यह फ़कीर बमोजिब हुकुमके मेहमानदारीमें हाजिरथा हरचंद जवान हमप्याला हमनिवाला होनेको मुजव्विज होताथा पर मैं हर्गिज उस परीके खौफके मारे अपना दिल खाने पीने या सैर तमाशेकी तरफरुजू नकरताथा और उजर मेहमान्दारीका करके उसके शामिल नहोता इसी कैफियतसे तीन शबाना रोज गुजरे चौथी रात वुह जवान निहायत जोशिशसे मुझे बुलाकर कहने लगा अब हमभी रुखसत होंगे तुम्हारी

ख़ातिर अपना सब कारोबार छोड़ छाड़ कर तीन दिनसे तुम्हारी ख़िदमतमें हाजिर हैं तुम भी तो हमारे पास एक दम बैठकर हमारा दिल ख़ुश करो मैंने अपने जीमें ख़याल किया अगर इस वक़्त कहना इसका नहीं मान्ता तो आज़ुर्दा होगा पस नये दोस्त और मेहमानकी ख़ातिर रखनी ज़रूरहै तब यह कहा साहेबका हुकुम बजा लाना मंज़ूर यह सुन्तेही इसको जवानने प्याला तवाज़ः किया और मैंने पीलिया फिरतो ऐसा पैहम दौर चला कि थोड़ी देरमें सब आदमी मजलिसके कैफ़ी होकर बेख़बर हो गये और मैं भी बेहोश हो गया जब सुबह हुई और आफ़ताब दोनेज़े चढ़ा तब मेरी आंख खुली तो देखा मैंने नवह तईयारीहै नवह मजलिस नवह परी फ़क़त ख़ाली हवेली पड़ीहै मगर एक कोनेमें कम्मल लपेटा हुआ धराहै जो उसको खोलकर देखा तो वुह जवान और उसकी रंडी दोनो सिरकटे पड़ेहैं यह हालत देखतेही हवास जाते रहे अक़्ल कुछ काम नहीं करतीकि यह क्याथा और क्या हुआ हैरानीसे हर तरफ़ तकरहाथा इतनेमें एक ख़ाजः सरा जिसे ज़ियाफ़तके कामकाजमें देखाथा नज़र आया फ़कीरको उसको देखनेसे कुछ तसल्ली हुई अहवाल इस वारिदातका पूछा उसने जवाब दिया तुझे इस बातके तहक़ीक़ करनेसे क्या हासिल जो तू पूछताहै मैंनेभी अपने दिलमें ग़ौरकी कि सचतो कहताहै फेर एक ज़रा तअम्मुल करके मैं बोला ख़ैर नकहो भला यह तो बताओ वुह माशूक़ः किस मकानमेंहै तब उसने कहा अलबत्तः जो मैं जान्ताहूं सो कह दूंगा लेकिन तुझसा आदमी अक़्लमंद बेमरज़ी हज़ूरके दो दिनकी दोस्तीपर बेतकल्लुफ़ होकर सुहबत शराब पीनेकी गर्म करे यह क्या मानी रखताहै फ़कीर अपनी हरकत और उसकी नसीहतसे बहुत नादिम हुआ सिवाय इस बातके ज़ुबानसे कुछ ननिकला फ़िलहक़ीक़त अब तो तक़सीर हुई मआफ़ कीजिये बारे महलीने मेहर्बान होकर उस परीके मकानका निशान बताया और मुझे रुख़सत किया आपउन् दोनों ज़ख़मियोंके गाड़ने दाबनेकी फ़िकिरमें रहा मैं तुहमतसे उस फसादकी अलग रहा और इश्तियाक़में उस परीके मिलनेके लिये घबराया हुआ गिरता पड़ता ढूंढता शामके वक़्त उस कूचेमें उसी पतेपर जापहुंचा और नज़दीक दरवाज़ेके एक गोशेमें रात तड़पते कटी किसूकी आमद रफ़्तकी आहट न मिली और कोई अहवाल पूछनेवाला मेरा न हुआ उसी बेकसीकी हालतमें सुबह होगई जब सूरज

निकला उस मकानके बालाखानेकी ऐक खिड़कीसे वुह माहरू मेरी तरफ देखने लगी उस वक्त आलम खुशीका जो मुझपर गुज़रा दिलही जान्ताहैं शुक्र खुदाका किया इतनेमें ऐकखोजेने मेरे पास आकर कहा इस मस्जिदमे तू जाकर बैठ शायद तेरा मतलब इस जगह बर आवे और अपने दिलकी मुराद पावे फकीर फर्मानेसे उस्के वहांसे उठकर उसी मसजिदमें जारहा लेकिन आंखें दरवाजेकी तरफ लगरहीथीं कि देखिये पर देगैबसे क्या जाहिर होताहै तमाम दिन जैसे रोजेदार शाम होनेका इन्तजार खींचताहै मैंनेभी वुह रोज वैसाही बेकरारीमें काटा बारे जिस्तिरहसे शाम हुई और दिन पहाड़सा छातीपरसे टला ऐकबारगी वुही खाजेसरा जिन्ने उस परीके मकानका पता दियाथा मसजिदमें आया बाद फरागत निमाजके मेरे पास आकर उस शफीकने किसब राजुनियाज कामहरमथा निहायत तसल्ली देकर हाथ पकड़ लिया और अपने साथ लेचला जाते जाते ऐक बागीचेमें बैठाकर कहा यहां रहो जबतक तुम्हारी आर्जू बर आवे और आप रुखसत होकर शायद मेरी हकीकत हजूरमें कहने गया मैं उस बागके फूलोंकी बहार और चांदनीका आलम और होज नहेरोंमें फव्वारे सावन भादोंके उछलनेका तमाशा देख रहाथा लेकिन जब फूलोंको देखता उस गुलबदनका खयाल आता जब चांदपर नजरपड़ती तब उस महरूका मुखड़ा यादकरता यह सब बहार उस्के बगैर मेरी आंखोंमें खारथी बारे खुदाने उस्के दिलको मेहर्बान किया ऐक दमके बाद वुह परी दरवाजेसे जैसे चौदहवीं रातका चांदबनाओ किये गलेमें पेश वाज बादलेकी संजाफकी मोतियोंका दरदामन टका हुआ और सिरपर ओढ़नी जिसमें आंचल पल्लोलहर गोखरू लगा हुआ सिरसे पांवतक मोतियोंमें जड़ी हुई रविशपर आकर खड़ी हुई उस्के आनेसे तरोताजगीनये सिरसे उस बागको और इस फकीरके दिलको होगई ऐकदम इधर उधर सैर करकर शहनशीनमें मुगर्रक मसनद पर तकिया लगाकर बैठी मैं दौड़कर परवानेकी तरह जैसे शमःके गिर्दफिर्ताहै तसद्दुक हुआ और गुलामकी मानन्द दोनो हाथ जोड़कर खड़ा हुआ इस्में वुह खोजा मेरी खातिर बतौर सुफारिशके अर्ज करने लगा मैं उस मसलीसे कहा बन्दा गुनहगार तक सीरवारहै जो कुछ सजा मेरे लायक ठहरे सो हो वुह परी अज बस्कि नाखुशथी बद दिमागीसे बोली कि अब इस्को हकमें यही भलाहै कि सौतोड़े अशरफीके लेवे अपना

असबाब दुरुस्त करके वतनको सिधारे मैं यह बात सुन्तेही काठ होगया और सूखगया कि अगर कोई मेरे बदनको काटे तो एक बूंद लहू कीन निकले और तमाम दुनिया आंखोंके आगे अंधेरी लगने लगी और एक आह नामुरादीकी बेइखतियार जिगरसे निकली आंसूभी टपकने लगे सिवाय खुदाके उस वक्त किसूकी तवक्कः नरही मायूस होकर इतना बोला भला टुक अपने दिलमें गौर फरमाइये अगर मुझ कम नसीबको दुनियाका लालच होता तो अपना जानो माल हजूरमें नखोता क्या एक बारगी हक खिदमत गुजारी और जानिसारीका आलमसे उठ गया जो मुझसे कमबख्त पर इतनी बेमेहरी फरमाई खैर अब मेरे तईंभी जिन्दगीसे कुछ काम नहीं माशूकोंकी बेवफाईसे बेचारे आशक नीम जानका निबाह नहीं होता

यह सुनकर तीखी हो त्योरी चढाकर खफगीसे बोली चेखुश आप हमारे आशक हैं मेंडकोको भी जुकाम हुआ ऐ बेवकूफ अपने होसलेसेज्यादः बातें बनानी खयालखाम है छोटामुंह बडी बात बस चुप रह यह निकम्मी बातचीत मतकर अगर किसी औरने यह हरकत बेमानी की होती खुदा किसों उसकीबोटियां कटवा चीलोंको बांटती पर क्या करूं तेरी खिदमत याद आतीहै अब इसीमेंभलाईहै कि अपनी राहले तेरी किसमतका दाना पानी हमारी सरकारमें यहीं तलक था फिरमैंने रोते २ कहा अगर मेरी तकदीरमें यही लिखाहै कि अपने दिलकेमकसदको नपहूचूं और जंगल पहाड़में सिर टकराता फिरूं तो लाचारहूं इस बातसे भी दिकहो कहने लगी मेरे तईं ये फुसलहन्दे चोचले और रमजकी बातें पसन्द नहीं आतीं इस इशारेकी गुफ्तगूके लायक जो हो उससे जाकर कर फिर उसी खफगीके आलममें उठकर अपने दौलतखानेको चली मैंने बहुतेरा सिर पटका मुतवज्जह नहुई लाचार मैंभी उस मकामसे उदास और नाउम्मेद होकर निकला

गरज चालीस दिनतक यही नौबत रही जब शहरकी कूचे गर्दीसे उकताता जंगलमें निकल जाता जब वहांसे घबराता फिर शहरकी गलियोंमें दीवानासा आता न दिन को खाता न रातको सोता जैसे धोबीका कुत्ता नघरका नघाटका जिन्दगी इनसानकी खाने पीने से है आदमी अनाजका कीड़ाहै ताकत बदनमें मुतलकनरही अपाहज होकर उसीदीवारके मसजिदकी तले जापड़ा कि एक रोज वही खाजेसरा जुम्मेकी निमाजपढने

आया मेरे पाससे होकर चला मैं यह शेर आहिस्ते नाताक़तीसे पढ़ रहा था ॥

इस दर्द दिलसे मौत हो या दिलको ताब हो।

किसमतमें जो लिखा हो इलाही शिताब हो ॥

अगर्चे ज़ाहिरमें सूरत मेरी बिलकुल तबदील होगईथी चेहरेकी यह शकल बनीथी कि जिन्ने मुझे पहले देखाथा वुहभी न पहचान सका कि वुही आदमी है लेकिन वुह महली आवाज दर्दकी सुनकर मुतवज्जह हुआ मेरे तईं बग़ौर देखकर अफसोस किया और मेहरबानीसे मुखातिब हुआ कि आखिर यह नौबत अपनी पहुंचाई मैंने कहा अब तो जो होआसो होआ मालसेभी हाजिरथा जानभी तसद्दुककी उसको ख़ुशी योंही हुई तो क्या करूं

यह सुनकर ऐक खिदमतगार मेरे पास छोड़कर मसजिदमें गया निमाज और खुतबेसे फरागत कर कर जब बाहर निकला फकीरको ऐक मियानेमें डालकर अपने साथ खिदमतमें उस परी बेपरवाको लेजाकर चिकके बाहर बैठाया अगर्चे मेरी सूरत कुछ बाकी न रहीथी पर मुद्दत तलक हररोज उस परीके पास इत्तफाक रहनेका हुआथा जान बूझकर बेगानी होकर खोजेसे पूछने लगी यह कौनहै उस मर्द आदमीने कहा यह वही कमबख्त बदनसीब है जो हुजूरकी खफगीमें पड़ाथा उसी सबबसे उसकी यह सूरत बनीहै इश्ककी आगसे जला जाताहै हरचंद आंसुओंके पानीसे बुझाताहै पर वुह दूनी भड़कतीहै कुछ फायदा नहीं होता अलावः अपनी तकसीरकी खिजालतसे मुआ जाताहै परीने ठठोलीसे फरमाया क्यों झूठ बकताहै बहुत दिन हुवे उसकी खबर वतन पहुंचनेकी मुझे खबरदारोंनेदीहै वल्लाह आलम यह कौनहै और तू किसका जिक्र करताहै उस दम ख्वाजे सराने इलतेमास किया अगर जानबख्शी हो तो अर्ज करूं फरमाया कह तेरी जान तुझे बख्शी खोजा बोला आपकी जात कदरदानहै वास्ते खुदाके चिलवन को दर्मियानसे उठवा कर पहचानिये और इसकी बेकसीकी हालत पर रहम कीजिये नाहक शिनासी खूब नहीं अब इसके अहवाल पर जो कुछ तर्स खाइये बजाहै और जाय सवाब है आगे जो मिजाज मुबारकमें आवे सोही बेहतर है

इतने कहनेपर मुस्करा कर फर्माया भला कोई होइसे दारुश्शफामें रखो जब भला चंगा होगा तब उसके अहवालकी पुरसिशकी जायगी खोजेने कहा अगर अपने दस्तखास्से गुलाब इस पर छिड़किये और जबानसे कुछ फर्माइये तो इसको जिन्दगीका भरोसा

बंधे नाउम्मैदी बुरी चीज़है दुनिया बउम्मेद क़ायमहै इसपरभी उस परीने कुछ नकहा यह सवाल जवाब सुनकर मैंभी अपने जीसे उक्ता रहाथा निधड़क बोल उठाकि अब इस तौरकी जिन्दगीको दिल नहीं चाहता पांव तो गोरमें लटका चुकाहूं रोज मरनाहै और इलाज मेरा पादशाहजादीके हाथमें है करें या नकरेंबारे खुदाने उस संग दिलके दिलको नर्मकिया मेहर्बान होकर फर्माया जल्द बादशाही हकीमोंको हाजिर करो वोहीं तबीब आकर जमा हुवे नबज़ क़ारूरा देखकर बहुत गौरकी आख़िरश तशख़ीसमें ठहरा कि यह शख़्स कहीं आशक़ हुआहै सिवाय वसल माशूक़के इसका कुछ इलाज नहीं जिस वकत वुह मिले यह आराम पावे जब हकीमोंकी भी ज़बानी यही मर्ज मेरा साबित हुआ हुकुम किया इस जवानको गर्माबेमें लेजाओ नहलाकर ख़ासी पोशाक पहेनाकर हजूरमें लेआउ वोहीं मुझे बाहर लेगये हम्माम करवा अच्छे कपड़े पहेना खिदमतमें परीको हाजिर किया तब वोह नाजनी तपाकसे बोली तूने मुझे बैठे बैठाये नाहक बदनाम और रुसवा किया अब और क्या किया चाहताहै जो तेरे दिलमें है साफ़ साफ़ बयान कर

या फ़कीरो उस वक्त यह आलम हुआ कि शादीमर्ग होजाउं खुशीके मारे ऐसा फूला कि जामे में न समाताथा और सूरत शकल बदल गई शुक्र खुदाका किया और उससे कहा इस दमसारीहकीमी आपपर खतम हुई कि मुझसे मुर्देको एक बातमें जिन्दा किया देखो तो उस वक्त से इस वक्त तक मेरे अहवाल में क्या फ़र्क हो गया यह कह कर तीन बार गिर्द फ़िरा और सामने आकर खड़ा हुआ औरकहा हजूरसेयों हुकुम होताहै कि जो तेरे जीमे हो सो कह बन्देको हफत अकलीम की सलतनतसे ज्यादा यह है कि ग़रीब नवाजी कर कर इस आजिजको कबूल किजिये और अपनी कदम बोसीसे सर्फराजी बखिशये एक लमहा तो सुनकर गोतेमें गई फिर कन अंखियोंसे देख कर कहा बैठो तुमने खिदमत और बफादारी ऐसीही कीहै जोकुछ कहो सो फ़बतीहै और अपने भी दिल पर नक़शहै खैर हमने कबूल किया उसीदिन अच्छी साअत् मुभलगनमें चुपके २ क़ाजीने निकाह पढ़दिया बाद इतनी मेहनत और आफ़तके खुदाने यह दिनदिखाया कि मैने अपनेदिलका मुद्दआ पाया लेकिन जैसी दिलमे आरजू उस परीसे हमबिस्तर होनेकी थीं वैसीही जीमे बेकली उस वारिदात् अजीबके मालुम

करनेकी थी कि आजतक मैंने कुछ नसमझा कि यह परी कौनहै और वुह हबशीसांवला सजीला जिसने एक पुर्जे कागज़पर इतनी अशरफ़ियोंके बिदरे मेरे हवालेकियेकौन था और तहयारी ज़ियाफ़तकी पादशाहोंके लायक एक पहरमें क्यों करहुई और वे दोनों बे गुनाह उस मजलिसमें किसलिये मारे गये और सबब खफ़गी और बेमरव्वतीका बावजूद ख़िदमत गुज़ारी और नाज़बर्दारीकेमुझपर क्या हुआ और फिर एक बारगी इस आजिज़ को यों सरबलंद किया गरज़ इसी वास्ते बाद रसम रसूमात निकाहके आठदिन तलक बा वसफ इस इश्तियाकके कसद मुबाशरतका नकिया रातको साथ सोता दिनको योंहीं उठ खड़ा होता

एक दिन गुसल करनेके लिये मैंने खवास को कहा कि थोड़ा पानी गरम करदे तो नहाउं मलिकः मुस्कुरा कर बोली किस बिर्तेपर तत्ता पानी मैखामोश होरहा लेकिन वुह परी मेरी हरकतसे हैरान हुई बल्कि चेहरेपर आसार खफ़गीके नमूद हुवे यहांतलक कि एक रोज बोली तुम भी अजब आदमी हो या इतने गर्म या ऐसे ठंडे इसको क्या कहतेहैं अगर तुम्में कूवतन थी तो क्यों ऐसी कच्ची हवस पकाई उस वक्त मैंने बेधड़क होकर कहा ऐजानी मुनसिफीशर्तहै आदमीको चाहिये कि इनसाफसे नचूके बोली अब क्या इनसाफ रह गयाहै जो कुछ होनाथा सो हो चुका फकीरने कहा वाकई बड़ी आर्जू और मुराद मेरी यहीथी सो मुझे मिली लेकिन दिल मेरा दुबधेमेंहै औरदो दिले आदमीकी खातिर परेशान रहतीहै उससे कुछ होनहीं सक्ता इनसानियतसे खारिज हो जाताहै मैंने अपने दिलमें यह कौल कियाथा कि बाद इस निकाहके कि ऐन दिल्की शादीहै बाजी बाजी बातें जो खयालमें नहीं आतीं और नहीं खुलतीं हजूरमें पूछूंगा कि जबान मुबारकसे उसका बयान सुनूं तो जीको तस्कीन हो उस परीने चींबर जबीं हो कर कहा क्या खूब अभीसे भूल गये याद करो बारहा हमने कहाहै कि हमारे काममें दखल नकीजियो और किसी बातके दरपैन हूजियो खिलाफ मामूल यह बेअदबी करनी क्या लाजिमहै फकीरने हंसकर कहा जैसी और बेअदबियां माफ करनेका हुकुमहै एक यहभी सही वुह परी नजरें बदल कर ते हमें आकर आगका बगूला बनगई और बोली अब तू बहुत सिर चढ़ा जा अपना काम कर इन बातोंसे तुझे क्या फायदा होगा मैंने कहा दुनियामें अपने बदनकी शर्म सबसे ज्यादः होतीहै लेकिन एक दूसरेका

वाकिफकार होता हूं पस जब ऐसी चीज दिल पर रखा रखी तो और कौन सा भेद छिपाने के लायक है मेरी इस रम्ज को कुछ परीबकूफ से दरियाफ्त कर कर कहने लगी यह बात सच है पर जी मे यह सोच आता है कि अगर मुझ निगोड़ी का राजफाश हो तो बड़ी कयामत मचे मैं बोला यह क्या मजकूर है बन्दे के तर्फ से यह खयाल दिल में न लाओ और खुशी से सारी कैफियत जो बीती है फर्माओ हर्गिज मै दिल से जबानतक न लाउंगा किसू के कान पड़ना क्या इमकान है जब उसने देखा कि अब सिवाय कहने के इस अजीज से छुटकारा नहीं लाचार होकर बोली इन बातों के कहने मे बहुतसी खराबियां हैं तू चाह न चाह दर पै हुआ खैर तेरी खातिर अजीज है इसलिये अपनी सर्गुजश्त बयान करती हूं तुझे भी उसका पोशीदा रखना जरूर है खबर शर्त।

गरज बहुतसी ताकिद करके कहने लगी कि मै बदबख्त मुल्क दमिश्क के सुलतान की बेटी हूं और वुह सलातीनों से बड़ा बादशा है सिवाय मेरे कोई लड़का बाला उसके यहां नही हुआ जिस दिन से मै पैदा हुई मावापके साये मे नाजो न्यामत और खुशी खुर्मी से पली जब होश आया तब अपने दिल्को खूबसूरतों और नाजनीनों के साथ लगाया चिनांचे सुथरी २ परीजाद हम जोली उम्राजादियां मुसाहबत में और अच्छी २ कबूल सूरत हम उम्र खवासें सहेलियां खिदमत मे रहती थीं तमाशा नांच और रागरंग का हमेशः देखा करती दुनियाके भले बुरे से कुछ सरोकार नथा अपनी बेफिक्री के आलम को देख कर सिवाय खुदा के शुक्र के मुह से कुछ न निकलता था॥

इत्तफाकन् तबीयत खुद बखुद ऐसी बेमजा हुई कि न मुसाहेबत किसू की भावे न मजलिस खुशी की खुश आवे सौदाईसा मिजाज होगया दिल उदास और हैरान न किसू की सूरत अच्छी लगे न बात कहने सुन्ने को जी चाहे मेरी यह हालत देखकर दाई ददा छूछू अंगा सब की सब मुतफक्किर हुई और कदम पर गिरने लगीं यही ख्वाजेसरा नमक हलाल कदीम से मेरा महरम और हमराज है इस से कोई बात मखफी नहीं मेरी वहशत देख कर बोला अगर पादशाहजादी थोड़ा सा शरबत बरकुलखयाल का नोशजा फर्मावें तो यकीन है कि तबीयत बहाल हो जावे और फरहत मिजाजमे आवे

उसके इसतरह के कहने से मुझे भी शौक हुआ तब मै ने फर्माया जल्द हाजिर कर महली बाहर गया ऐक सुराही उसी शरबत की तकल्लुफ से बना कर बर्फ मे लगाकर लड़के के हाथ पिलाकर आया मै ने पिया जो कुछ उसका फायदा बयान किया था वैसाही देखा उस वक्त उस खिदमत के इनामके ऐक भारी खिलअत खोजे को इनायत की और हुकुम किया कि ऐक सुराही हमेशः विलानागः इसी वक्त हाजिर कियाकर उस दिन से यह मुकर्रर हुआ कि खाजे सरा सुराही उसी छोकरे के हाथ पिला जावे और बन्दी पीजावे जब उसका नशा शुरू होता तो उसी लहर मे उस लड़के से ठठ्ठा मजाक करकर दिल बहलाती थी वोह भी जब ढीठ हुआ तब अच्छी २ मीठी २ बातें करने लगा और अचंभे की नकलें लाने बल्कि आह उही भी भरने और सिस्कियांलेने सूरत तो उसकी तरहदार लायक देखने के थी ही बेइख्तियार जी चाहने लगा मै दिलके शौक से और अठखेलियों के जोश से हररोज इनाम बखशिश देने लगी पर वुह कमबख्त वैसे कपड़ों से जैसे हमेश पहने रहता था हजूर मे आता बल्कि वुह लिबास भी मैला कुचैला हो जाता।

ऐक दिन पूछा तुझे सरकार से इतना कुछ मिला पर तू ने अपनी सूरत वैसी की वैसीही परेशान बना रखी क्या सबब है वे रुपै कहां खर्च किये या जमाकर रखे लड़के ने ये खातिर दारी की बातें जो सुनी और मुझे अपना अहवाल पुर्सां पाया आंसू डबडबा कर कहने लगा जो कुछ आपने इस गुलाम्को इनायत किया सब उस्तादने ले लिया मुझे ऐक पैसा नही दिया कहां से दूसरे कपड़े बनाऊं जो पहनकर हजूर मे आऊं इसमें मेरी तकसीर नहीं मैं लाचार हूं इस गरीबीके कहने से उसे तर्स आया वोंही खाजे सराको फर्माया आजसे इस लड़के को अपनी सोहबत में तरबियत कर और लिबास अच्छा तईयार करवा कर पहेना और लौंडों मे बे फायदा खेलने कूदने न दे बल्कि अपनी खुशी यह है कि आदाब लायक हजूर की खिदमत के सीखे और हाजिर रहे खाजे सरा मुवाफिक फर्मांने के बजा लाया और मेरी मर्जी जो उधर देखी निहायत उसकी खबर गीरी करने लगा थोड़े दिनों में फरागत और खुशखुरीके सबब से उसका रंग रोगन कुछका कुछ होगया और केंचली सी डाल दी मैं अपने दिलको हरचन्द संभालती पर उस काफर की सूरत जीमे ऐसी खुब गई थी यही जी चाहता था कि मारे प्यारके

उसे कलेजे मे हाथ रखूं और अपनी आंखोंसे एक पल जुदा न करूं, आखिर उसको मुसाहेबत में दाखिल किया और खिलअतें तरह बतरह की और जवाहिर रंग बरंग के पहनाकर देखा करती बारे उसके नज़दीक रहने से आंखोंको सुख कलेजे को ठंडक हुई हर दम उसकी खातिरदारी करती आखिरको मेरी यह हालत पहुंची कि अगर एक दम कुछ जरूरी कामको मेरे सामने से जाता तो चैन न आता॥

बाद कई बर्सके वुह बालिग़ हुआ मिसें भीगने लगी खब तख्‌ती दुरुस्त हुई तब उसका चर्चा बाहर दर्बारियों मे होने लगा दरबान् और यसावल चोबदार उसको महल के अंदर आने जाने से मना करने लगे आख़िर उसका आना मौकूफ़ हुआ मुझे तो उस बगैर कल न पड़ती थी एक दम पहाड़ था जब यह अहेवाल नाउमेदीका सुना ऐसी बदहवास हो गई गोया मुझपर क़यामत् टूटी और यह हालत हुई कि न कुछ कह सकती हूं न उसबिन रह सकती हूं कुछ बस नही चल सका इलाही क्या करूं अजब तरह का क़लक़ हुआ मारे बेकरारी के उसी महली को जो मेरा भेदू था बुलाकर कहा कि मुझे गैर और पर्दाख्त इस लड़के कि मंजूर है बिलफैल सलाह वक्त यह है हज़ार अशरफ़ी पूंजी देकर चौक के चौराहे मे दूकान् जौहरी कि करवा दो तो तिजारत करके उसके नफ़े से अपनी गुज़रान फ़रागत से किया करे और मेरे महल के करीब एक हवेली अच्छे नक़्शे की रहने के लिये बनवा दो लौंडी गुलाम् नोकर चाकर जो जरूर हों मोल ले कर और दरमाहा दे कर रखवा दो कि किसूतरह बेआराम न हो खाजे सराने उसकी बूदोबाश की और जौहरीपने की सब तईयारी कर दी थोड़े अर्से मे उसकी दूकान् ऐसी चमकी और नमूद हुई कि जो खिलअतेफाखरः और जवाहिर बेशक़ीमत सरकार मे बादशाह की और अमीरों की दरकार होते उसीके यहां मिलते आहिस्ते आहिस्ते यह दूकान् जमी कि जो तोहफ़ा हर एक मुल्क का चाहिये वहीं मिले सब जौहरियों का रोजगार उसके आगे मन्दा हो गया।

ग़रज़ उस शहर मे कोई बराबरी उसकी न कर सका बल्कि किसी मुल्क मे वैसा कोई न था इसी कारोबार मे उसने तो लाखों रूपै कमाये पर जुदाई उसकी रोज बरोज नुकसान मेरे तन् बदन् का करने लगी कोई तदबीर न बन आई कि उसको देख कर अपने दिलकी तसल्ली करूं निदान सलाह की खातिर उसी वाक़िफ़कार महली को बुलाया

और कहा कोई ऐसी सूरत बन नहीं आती कि जरा उसकी सूरत मैं देखूं और अपनी जानको सबर दूं मगर यह तरह है कि एक सुरङ्ग उसकी हवेलीसे खुदवाकर महलमें मिला दो हुकुम करतेही कई दिनोमें ऐसी नक़ब तईयार हुई कि जब सही सांभ होती चुपके ही वुह ख़ाजे सरा उस जवान को उसी राह से ले आता तमाम् रात शराब कबाब ओ इशरतमें कटती मैं उसके मिलने से आराम पाती वुह मेरे देखने से खुश होता ॥

जब फ़जिर का तारा निकलता महली उसी राहसे उस जवान् को उसके घर पहुंचा देता इन बातों से सिवाय उस खोजे और दो दाईयों के जिन्हों ने मुझे दूध पिलाया और पाला था चौथा आदमी कोई वाक़िफ़ न था ॥

एक मुद्दत इस तरह से गुज़री एक रोज का यह ज़िक्र है मुवाफ़िक मामूल के खोजा उसको बुलाने गया देखे तो वुह जवान फ़िकिर मंदसा चुपका बैठा है महलीने पूछा आज खैर है क्यों ऐसे दिलगीर हो रहे हो चलो हजूर मे याद फर्माया है उसने हरगिज़ कुछ जवाब न दिया ज़वान न हिलाई ख़ाजे सरा अपना सामुह ले कर अकेला फिर आया अहवाल उसका अर्ज किया मेरे तईं शैतान जो खराब करे इसपर भी मुहब्बत उसकी दिल से न भूली अगर यह जान्ती कि इश्क और चाह ऐसे नमक हराम बेवफ़ा की आखिर को बदनाम और रुस्वा करेगी और नंगो नामूस सब ठिकाने लगेगा तो उसी दम उस्काम से बाज़ आती और तोबा करती फ़िर उसका नाम न लेती न अपना दिल उस बेहयाको देती पर होना तो यों था इस लिये हरकत बेजा उसकी ख़ातिर्में न लाई और उसके न आनेको माशूकों का चोंचला और नाज़ समझा उसका नतीजा यह देखा कि इस सर्गुज़श्त से बगैर देखे भाले तू भी वाक़िफ़ हुआ नहीं तो मै कहां और तू कहां खैर जो हुआ सो हुआ इस ख़रदिमागी पर उस गधे के ख़याल मकर दुबारा खोजे के हाथ पैग़ाम भेजा कि अगर तू इसवक्त नहीं आवेगा तो मैं किसु न किसू ढ़ब से वहीं आती हूं लेकिन मेरे आने मे बड़ी क़बाहत है अगर यह भेद खुले तो तेरे हक़ मे बहुत बुरा है ऐसा काम न कर जिस्में सिवाय रुस्वाई के और कुछ फल न मिले बेहतर यही है जल्द चला आ नहीं तो मुझे पहुंचा जान ॥

जब यह संदेसा गया और इश्तियाक मेरा निपट देखा भोंडीसी सूरत बनाये हुवे नाज़

नख़रे से आया जब मेरे पास बैठा तब मैंने उससे पूछा कि आज बनावट और खुफ़गीका क्या बाइस है इसी शूखी और गुस्ताखी तू ने कभू न की थी हमेशः बिना उजुर हाज़िर होता था तब उसने कहा कि मैं गुमनाम् ग़रीब हजूर की तवज्जुह से और हामने दौलत के बाइस इस मक़दूर को पहुंचा बहुत आराम से जिन्दगी कटती है आपको जानो मालको दुआ करता हूं यह तक़सीर बादशाहजादी के मुआफ़ करने के भरोसे इस गुनहगारसे सर्जद हुई उम्मेदवार माफ़ का हूं मैंने तो जानो दिलसे उसे चाहती थी उसकी बनावटकी बातों को मान लिया और शरारत पर नज़र न की बल्कि फिर दिलदारी से पूछा क्या तुझको ऐसी मुश्किल कठिन पेश आई जो ऐसा मुतफ़क्किर हो रहा है उसको अर्ज कर उसकी भी तदबीर हो जायगी।

ग़रज़ उस खाकसारी की राह से यही कहा कि मुझ को तब मुश्किल है और आपके सबब सब आसान है आखिर उसके मज़्मून कलाम और मतलब से यह खुला कि एक बाग़ निहायत सर्सब्ज़ और इमारतवाली हौज़ तालाब कुवे मुख़्तः समेत गुलाम की हवेली के नज़दीक नाफ़ शहर मे बिकाऊ है और उस बागके साथ एक लौंडी भी गायन कि इल्म मूसिकी मे खूब सलीका रखती है लेकिन ये दोनो बाहम् बिकते है न अकेला बाग़ जैसे ऊंटके गले मे बिल्ली जो कोई बाग़ लेवे उस लौंडी की भी कीमत देवे और तमाशा यह है बाग का मोल लाख रुपै और उस बांदीका भाव पांचलाख फिदवी से इतने रुपै बिलफैल सरंजाम नहीं हो सके मैं ने उसका दिल बहुत बेइख़्तियार शौक़ मे उनकी ख़रीदारी के पाया कि इसीवास्ते दिल हैरान और खातिर परेशान था बावजूदे कि जबतक मेरे पास बैठा था तब भी उसका चेहरा मलीन और जी उदास था मुझे खातिरदारी उसकी हर घड़ी और हर पल मंजूर थी उसी वक्त ख़्वाजे सराको हुकुम किया कि कल सुबह को कीमत् उस बाग की लौंडी समेत् चुकाकर कबाला बाग का और खत लौंडीका लिखाकर इस शख़्सके हवाले करो और मालिक को ज़रे कीमत् ख़ज़ाने आमिरः से दिलवा दो इस परवानगीके सुनते ही आदाब बजा लाया और मुझ पर रुखसत आई सारी रात उसी कायदे से जैसे हमेशः गुज़रती थी हंसी खुशी से कटी फ़जिर होतेही रुखसत हो खोजेने मुवाफ़िक़ फ़र्माने के उस बाग को और लौंडी को

ख़रीद कर दिया फिर वुह जवान रात को मुवाफ़िक़ मामूल के आया जाया करता ॥

ऐक रोज़ बहार के मौसममें कि मकान भी दिल चस्पथा बदली घमंड रही थीं फुहियां पड़ रही थी बिजली भी कौंध रही थी और हवा नर्म नर्म चलती थी ग़रज़ अजब कैफ़ियत उस दम थी बौछीं रंग बरंग के ऊबाब और गुलाबियां ताकों पर चुनी हुईं नज़र पड़ी दिल ललचाया कि ऐक घूंट लूं जब दो तीन प्यालों की नौबत पहुंची बोछीं ख़याल उस बाग़ नो ख़रीद का गुज़रा कमाल शौक़ हुआ कि ऐक दम इस आलममें वहां की सैर किया चाहिये कमबख़्ती जो आवे ऊंठ चिढ़े कुत्ता काटे अच्छी तरह बैठे बैठाये ऐक दाई को साथ ले कर सुरङ्ग की राह से उस जवान के मकान में गई वहां से बाग़ की तरफ़ चली देखा तो ठीक उस बाग की बहार बिहिश्तकी बराबरी कर रही है क़तरे मेंहके दरख़्तों के सब्ज़ सब्ज़ पत्तोंपर जो पड़े हैं गोया ज़मर्रुद की पटरियों पर मोती जड़े हैं और सुर्ख़ी फूलों की उस अबर में ऐसी खुश खुशी लगती है जैसे शामको शफ़क़ फूले है और नहरें लबालब मानन्द फ़र्श आईने के नज़र आती हैं और मौजें लहराती हैं ग़रज़ उस बागमें हर तरफ सैर करती फिरती थी कि दिन हो चुका लियाही शामकी नमूद हुई इतने मे वुह जवान ऐक रविश पर नज़र आया और मुझे देखते ही बहुत अदब और गरम जोशी से आगे बढ़के मेरा हाथ अपने हाथपर धर कर बारेदरी की तर्फ ले चला जब वहां मै पहुंची तो वहां के आलमने सारे बागकी कैफ़ियतको दिलसे भुलादिया रौशनीका ये ठाठथा जा बजा कुमक मे सरो चरागान कंवल और फानूसख़याल शमे मजलिस हैरान और फ़ानूसें रौशन थीं कि शब बरात बावजूद चांदनी और चरागान के उसके आगे अंधेरी लगती ऐक तर्फ आतशबाज़ी फुलझड़ी अनार दाउदी भचंपा मरवारीद महताबी हवाई चर्ख़ी हथफूल-जाही जूही पटाखे सितारे छुटते थे इस अर्से मे बादल फट गया और चांद निकल आया जिसेमही जैसे नाफ़र्मानी जोड़ा पहने हुवे कोई माशूक़ नज़र आजाता है बड़ी कैफ़ियत हुई चांदनी छिटकी ही जवान ने कहा अब चलकर बाग़के बालाख़ाने पर बैठिये मै ऐसी अहमक़ हो गई थी कि जो वुह निगोड़ा कहेता सो मै मान लेती अब यह नाच नचाया कि मुझ को उपर ले गया वुह कोठा ऐसा बलंद था कि तमाम शहर के मकान और बाज़ार के चरागान गोयां उसके पाईं बाग़ थे मै उस जवान के गले मे बांह डाले हुवे ख़ुशीके आलममें

बैठी थी इतने मे ऐक रंडी निहायत भोंडी सी सूरत न शक्ल चूल्हे मे से निकल शराब का शीशा हाथ मे लिये हुवे आ पहुंची मुझे उस वक्त उसका आना निपट बुरा लगा और उसकी सूरत देखने से दिलमे हौल उठी तब मैने घबराकर जवान से पूछा यह तुहफ़ा हस्तत् कौन है तूने कहां से पैदा की वुह जवान् हाथ बांध कर कहने लगा यह वही लौंडी है जो इस बागके साथ हुजूर की इनायत् से खरीद हुई।

मै ने मालूम किया कि इस अहमक़ ने बड़ी ख़्वाहिश से इसको लिया है शायद इसका दिल इसपर माईल है इसी खातिर से पेचताब खाकर मै चुपकी हो रही लेकिन दिल उसी वक्त से मुकद्दर हुआ और ना ख़ुशी मिज़ाज पर छा गई तिसपर क़यामत उस जैसे तैसे मे यह की कि साकी उसी छिनाल को बनाया उस वक्त मै अपना लहू पीती थी और जैसे तूतीको कोई कउवे के साथ ऐक पिंजड़े मे बन्द करता है न जाने की फ़ूर्सत् पाती थी और न बैठने को जी चाहता था किस्सा मुख्तेसर वुह शराब बूंद की बूंद थी जिसको पीनेसे आदमी हैवान् हो जाय दो चार जाम पै दरपै उसी तेजआबके जवान् को दिये और आधा प्याला जवान्की मिन्नत् से मैने भी जहर मार किया आख़िर वुह फ़ाहिश्त बेहया भी बदमस्त हो कर उस मर्दूद से बेहूदा अदायें करने लगी और वुह चिबला भी नशेमे बेलिहाज हो चला और नामाकूल हर्कतें करने लगा मुझे यह गैरत आई अगर उस वक्त जमीन फाटे तो मै समाजाऊं लेकिन् उसकी दोस्ती के बाइस मै बिलकी इसपरभी चुप हो रही पर वुह तो असल का पाजी था मेरे इस दरगुज़र करने को नसमझा नशे की लहर मे और भी दो प्याले चढा गया कि रहता सहता होश जो था वुह भी गुम हुआ और मेरी तर्फ से मुतलक धड़का जीसे उठा दिया बेशर्मी से शहवत् के गल्बे मे मेरे रूबरू उस बेहयाने उस बंदोड़ से मुहबत् की और वुह फाहशाई भी उस हालत में नीचे पड़ी हुई नखरे तिल्ले करने लगी और दोनों मे चूमा चाटी होने लगी न इस बेवफा मे वफ़ा न उस बेहया मे हया जैसी रूह वैसे फ़िरिश्ते मेरी उस वक्त यह हालत् थी जैसी कोसर चूकी डोमनी गावे ताल बेताल अपने ऊपर लानत् करती थी कि क्यों तू यहां आई जिसकी यह सज़ा पाई आखिर कहांतक सहूं मेरे सिरसे पांव तक् आग लग गई और अंगारों पर लोटने लगी इस गुस्से और तैश मे यह कहावत (बैल न कूदा कूदी गोन् यह तमाशा देखे कौन्) कहती हुई वहां से उठी वुह शराबी

अपनी बुरीकी दिलमें सोचा कि अगर बादशाहज़ादी इस वक्त मालूम हुई तो क्या मेरा क्या हाल होगा और सुबह को क्या क़यामत् मचेगी अब बने तो इसका काम तमाम् कर डालूं यह इरादा उस मैवानी की सलाह से जीमे ठहरा कर गले मे फंदा डाल मेरे पांव आकर पकड़े और पगड़ी सिर से उतार कर मिन्नत् और आजिज़ी करने लगा मेरा दिल तो उसपर लट्टू होई रहा था जिधर फिराये फिरता था फिरती थी और पुतली की तरह मै उसके इख़्तियार मे थी जो कहता था सो करती थी क्यों क्यों मुझे फुसला कंदलाकर फिर बिठलाया और उसी शराब दो आतशे के दो चार प्याले भर भर कर आप भी पिये और मुझे भी दिये एक तो गुस्से के मारे जलभुन कर कबाब हो रही थी दूसरे वैसी शराब पी जल्द बेहोश हो गई कुछ हवास बाक़ी न रहे तब उस बेरहम् नमक हराम कठोर संगदिल्ने तलवार से मुझे घाइल किया बल्कि अपनी दानिस्त में मार चुका उस दम मेरी आंख खुली तो मुंह से यही निकला खैर जैसा हमने किया वैसा पाया लेकिन तू अपने तईं मेरे इस ख़ून नाहक़ से बचाइयो ॥ बैत् ॥ मबादा हो कोई ज़ालिम् तेरागिरेबां गीर । मिरे लहू को तो दामन् से धो हुवा सो हुवा ॥ किसी से यह भेद ज़ाहिर न कीजियो और हमने तो तुझ से जानतक भी दरगुज़र न की फिर उसको खुदाके हवाले कर कर मेराजी डूब गया मुझे अपनी सुध बुध कुछ न रही शायद उस क़साई ने मुझे मुर्दा ख़याल कर उस संदूक़ मे डालकर क़िलेकी दीवार के तले लटका दिया सो तू ने देखा मै किसू का बुरा न चाहती थी लेकिन् यह ख़राबियां क़िस्मत् में लिखी थीं मिट्ती नही करम् की रेखाइन् आंखों के सबब यह कुछ देखा अगर ख़ूबसूरतों के देखने का दिल मे शौक़ न होता तो वुह बद्बख़्त मेरे गले का तौक़ न होता अल्लाह ने यह काम किया कि तुझको वहां पहुंचा दिया और सबब मेरी जिन्दगी का किया अब हयाजीमे आती है कि यह रुसाइयां खींचकर अपने तईं जीता रखूं या किसू को मुंह दिखाऊं पर क्या करूं मरने का इख़्तियार अपने हाथ मे नही ख़ुदाने मार कर फिर जिलाया आगे देखिये क्या क़िसमत्में बदा है ज़ाहिर मे तो तेरी दौड़ धूप और ख़िदमत काम आई जो ऐसे ज़ख़्मों से शफ़ा पाई तूने जानो मालसे मेरी ख़ातिर की और जो कुछ अपनी बिसात् थी हाज़िर की उन् दिनों तुझे बेखर्च और दुखिया देखकर वुह रुक्का सीदी बहार को जो मेरा ख़ज़ाञ्ची है

लिखा उसमें यही मज़मून था कि मैं खैरोआफियत से अब फ़लाने मकाममे हूं मुझ बदबख्त कोखबर वालिदः शरीफेकी खिदमतमें पहुंचाईयो उसने तेरे साथ दो किश्तियां नकदकी खर्चकी खातिर भेजदीं जबतुझे खिलअत और जवाहिरके खरिद करनको यूसुफ सौदागर बच्चेकी दूकानपर भेजा मुझे यह भरोसाथा कि वुह कमहौसला हर ऐसे अल्द आशनाहो बैठता है तुझेभीअजनबीजान करयकीन है किदोस्तीकरनेकलिये इतराकर दावत और जियाफत करेगा सोमेरा मनसूबा ठीक बैठा जोकुछ मेरे दिलमें खयाल आयाथा उसने वैसाही किया तूजब उससे कोल करार फिर आनेका कर कर मेरे पास आया और मेहमानीकी हकीकत और उसका बजिद होना मुझसे कहा मै दिलमेखुश हुई कि अब तू उसके घर मे जाकर खावे पियेगा अगर तूभी उसको मेहमानीकी खातिर बुलावेगा वुह दौड़ा चलाआवेगा इसलिये तुझे अल्द रुखसत किया तीन दिन के पीछे जब तू वहां से फ़राग़त कर के आया और मेरे रूबरू उज़र गैर हाजरी का शर्मिन्दगी से आया मैने तेरी तशफ्फीके लिये फर्माया कुछ मुज़ायका नही जब उसने रज़ा दी तब तू आया लेकिन् बेशरमी खूब नहीं कि दूसरे का इहसान् अपने सिर पर रखिये और उसका बदला नकीजिये अब तू भी जाकर उसको इसतदुआकर और अपने साथ हो साथ लेआ जब तू उसके घर गया तब मैने देखा कि यहां कुछ असबाब मेहमान्दारी का तईयार नही अगर वुह आजावे तो क्या करूं लेकिन यह फुर्सत पाई कि इस मुल्क मे कदीम से बादशाहों का यह मामूल है कि आठ महीने कारोबार मुल्की और माली के वास्ते मुल्क गीरीमें बाहर रहते हैं और चार महीने मौसम् बरसातके किले मुबारकमें जलूस फ़र्माते हैं इन दिनों दो चार महीने से बादशाहयाने बली न्यामत् मुझ बदबख्त के बन्दोबस्त की खातिर मुल्कगीरी को तशरीफ़ ले गये थे जब तक तू उस जवान् को साथ लेकर आवे सोदी बहारने मेरा अहवाल खिदमतमें पादशाह बेगम् की कि वालिदः मुझ नापाक की है अर्ज किया फिर मैं अपनी तकसीर और गुनाह से खिजल होकर उनके रूबरू जा खड़ी हुई और जो सर्गुज़श्त थी सब बयान् की हरचन्द उन्हों ने मेरे गायब होने की कैफियत् दूर अंदेशी और मेहर मादरी से छिपा रखी थी कि खुदा जाने इसका अंजाम् क्या हो अभी यह रुसवाई ज़ाहिर करनी

खूब नहीं मेरे बदले मेरे बैरों को अपने पेट मे रख छोड़ा था लेकिन् मेरी तलाश में थीं जब मुझे इस हालतमें देखा और सब माजरा सुना आंसूभर लाईं और फर्माया अय कमबख्त नाफ़दनी तूने जान बूझकर नामो निशान्-बादशाहत् का सारा खोया हजार अफ़सोस और अपनी जिन्दगी से भी हाथ धोया काशके तेरे एवज़ मैं पत्थर जन्ती तो सबर आता अब भी तोबाकर जो किस्मतमेंथा सो हुआ अब आगे क्या करेगी जीवेगी या मरेगी मैंने निहायत् शर्मिन्दगीसे कहा मुझ बेहया की नसीबमें यही लिखाथा जो इस बदनामी और खराबीमे ऐसी ऐसी आफ़तोंसे बचकर जीती रहूं इससे मर्नाही भलाथा अगर्चे कलंक का टीका मेरे माथेपर लगा पर ऐसा काम नहीं किया जिससे मा बापके नाम को ऐब लगे अब यह बड़ा दुख है कि ये दोनों बेहया मेरे हाथसे बच जावें और आपुसमें रङ्ग रलियां मचावें और मैं उनके हाथों से यह कुछ दुख देखूं ऐसा है कि मुझसे कुछ नहो सके यह उम्मेदवार हूं कि खास् सामोंको परवानगी हो तो असबाब ज़ियाफ़त का बखूबी तमाम इस कमबख्तके मकान् में तईयार करे तो मैं दावतके बहाने से उन दोनों बदबख्तों को बुलवाकर उनके अमलोंकी सज़ा दूं और अपना एवज़ लूं जिसतरह उन्ने मुझ पर हाथ छोड़ा और घाइल किया मैंभी दोनोंके पुर्ज़े पुर्ज़े करूं तब मेरा कलेजा ठंडा हो नही तो इस गुस्से की आगमें फुक रही हूं आखिर जल बल कर भूभल हो जाऊंगी यह सुनकर अम्माने आस्माके दर्दसे मेहरबान् होकर मेरी ऐबपोशी की और सारा असाबिना ज़ियाफ़त् का उसी खोजे सराके साथ जो मेरा महरम् है कर दिया सब अपने अपने कामोंमें आकर हाज़िर हुवे शामके वक्त तू उस मुवेको लेकर आया मुझे उस छिनाल बांदीका भी आना मंजूर था जिनांचे फिर तुझको ताकीद कर कर उसेभी बुलवाया जब वहभी आई और मजलिस जमी शराब पी पीकर सब बदमस्त और बेहोश हुवे और उनके साथ तू भी कैफ़ी होकर मुर्दासा पड़ा मैंने किल्माकनी को हुकुम किया कि उन् दोनों का सिर तलवारसे काट डाल उसने वोंहीं एक दममें शमशेर निकाल दोनोंके सिर काट बदन लाल कर दिये और तुझपर गुस्से का यह सबबथा कि मैंने इजाज़त् ज़ियाफ़त की दीथी न दो दिलकी दोस्ती पर ऐतमाद करके शरीक मैं खुदीका हो अलबत्तः यह तेरी हिमाकत् अपने तईं पसन्द नआई इवास्ते कि जब तू पी पाकर बेहोश हुवा

बव तवक्कः रिफ़ाक़तकी तुझ से चा रही पर तेरी ख़िदमतका हक ऐसे मेरी गर्दन् पर है कि जो तुझ से ऐसी हर्कत होती है तो माफ़ करती हूं ॥

सो मैने अपनी हकीकत इबतदा से इन्तेहा तक कह सुनाई अब भी दिलमें कुछ और हवसबाकी है जैसे मैने तेरी ख़ातिर करके तेरे कहने को सब तरह कबूल किया तू भी मेरा फ़र्माना इसी सूरत से अमलमें ला सलाह वक्त यह है कि अब इस शहर में रहना मेरे और तेरे हक में भला नहीं आगे तू मुख्तार है ॥

या माबूद अल्लाह शाहज़ादी इतना फ़र्मा कर चुपकी हो रही फ़कीर तो दिलोजान् से उसके हुकुम को सब चीज़पर मुक़द्दम जान्ता था और उसकी मुहब्बतके जालमें फंसा था बोला जो मर्जी मुबारक मे आवे सो बिहतर है यह फ़िदवी बेउज़र बजा लावेगा जब शाहज़ादी ने मेरे तई फ़र्मां बर्दार और ख़िदमतगार अपना पूरा समझा फ़र्माया दो घोड़े चालाक और आंवाज़ कि चलने मे हवा से बातें करें बादशाह के ख़ास अस्तबल से मंगवा कर तइयार रख मैने वैसेही परीज़ाद चार गुर्दे के घोड़े चुनकर ज़ीन् बंधवा कर मंगवाये जब थोड़ी सी रात् बाकी रही बादशाहज़ादी मर्दाना लिबास पहेन् और पांचों हथियार बांध कर ऐक घोड़े पर सवार हुई और दूसरे घोड़े पर मै हथियार बांध कर चढ़ा और ऐक तर्फ़ की राह ली जब रात तमाम् हुई और फ़जर होने लगा तब ऐक पोखरे के किनारे पहुंचे उतर कर मुंह हाथ धोये जल्दी२ कुछ नाश्ता करके फिर सवार हो कर चले कभू मलिकः कुछ कुछ बातें करती और यों कहती कि हमने तेरी ख़ातिर शर्म हया मुल्क माल मा बाप सब छोड़ा ऐसा न हो कि तू भी उस बेवफ़ा ज़ालिम् की तरह सलूक करे कधू मैं कुछ अहवाल इधर उधर का राह कट्ने के लिये कहता और उसका भी जवाब देता कि बादशाहज़ादी सब आदमी ऐक से नहीं होते उस पाजी के नुत्फ़े मे कुछ ख़लल होगा जो उससे ऐसी हर्कत् वाके हुई और मैने तो जानो माल् तुमपर तसद्दुक़ किया और तुमने मुझे हर तरह सर्फ़राज़ी बख़्शी अब मै बन्दा बगैर दामों का हूं मेरे चमड़े की अगर जूतियां बनवाकर पहनो तो मै आह न करूं ऐसी ऐसी बातें बाहम् होती थीं और रात दिन चलनेसे काम था कभू जो मांदगी के सबब कहीं उतरते तो जंगलके चरन्दो परंद शिकार करते हलाल करके नमकदान् से नोन् निकाल चक् मक् से आग झाड़ भून् भान् कर खा लेते और

घोड़ों को छोड देते वे अपने मुंहसे घास पात चरचुग कर अपना पेट भर लेते ऐक रोज ऐसे कफ़ेदस्त मैदान्में जा निकले कि जहां वली का नाम नथा और आदमी की सूरत् नज़र न आतीथी इसपरभी बादशाहज़ादी की रिफ़ाकतके सबबसे दिन ईद और रात शब बरात मालूम होती थी जाते जाते अंचित ऐक दरिया कि जिसके देखने से कलेजा पानी होता राह मे मिला कनारे पर खड़े हो कर जो देखा तो जहांतलक निगाहने काम किया पानी ही था कुछ थल बेड़ा नपाया या इलाही अब इस समंदर से क्यों कर पार उत्रें ऐक दम इसी सोचमे खड़े रहे आखि़र यह दिल्में लहर आई कि मलिकः को यहीं बैठाकर मैं तलाश्में नाव निवाड़ की जाउं जबतलक असबाब गुजारे का हाथ आवे तबतलक वुह नाजनींभी आराम पावे तब मैंने कहा अय मलिकः अगर हुकुम हो तो घाट् बाट् इस दरिया का देखूं फर्माने लगी मैं बहुत थक गई हूं और भूखी प्यासी होरही हूं मैं ज़रा दम लेलूं जबतईं तू पार चलने की कुछ तदबीर कर उस जगह ऐक दरख्त पीपल का था बड़ा छतर बांधे हुवे कि अगर हजार सवार आवे तो धूप और मेंह में उसके तले आराम पावे वहां उसको बैठाकर मैं चला और चारों तर्फ देखताथा कि कहींभी जमीन् पर या दरियामें निशान् इन्सान का पाऊं बहुतेरा सिर मारा पर कहीं नपाया आखि़र मायूस होकर वहांसे फिर आया तो उस परी को पेड़के नीचे न पाया उस वक़्त की हालत क्या कहूं कि मुर्त जाती रही दीवाना बावला होगया कभू दरख्त पर चढ जाता और डालर पात पात फिर्ता कभू हाथ पांव छोड़कर ज़मीन्में गिर्ता उस दरख्तके जड़के आस पास तसद्दुक होता कभू चिंघाड़ मार कर अपनी बेबसीपर रोता और कभू पच्छिमसे पूरबको दौड़ा जाता कभू उत्तरसे दच्छिण को फिर आता गरज बहुतेरी खाक छानी लेकिन उस गौहरे नायाब की निशानी न पाई जब मेरा कुछ बस न चला तब रोता और खाक सिरपर उड़ाता हुआ तलाश हर कहीं करने लगा दिल्में यह खयाल आया कि शायद कोई जिन् उस परीको उठाकर ले गया और मुझे यह दाग़ दे गया या उसको मुल्कसे कोई उसके पीछे लगा चला आताथा उस वक़्त अकेला पाकरमना मुनूकर फिर शाम की तरफ लेउ भरा ऐसे खयालोंमे घबराकर कपड़े वपड़े फेंक फांक दिये नंगा मुंगा फ़क़ीर बन् कर शामके मुल्कमें सुबहसे शाम तक ढूंढ़ता फिर्ता और रातको कहीं पड़ रहता

मारा जहान् ढोंढ मारा पर अपनी बादशाहजादी का कभी निशान् किसीसे न सुना सबब शायद होनेका मालूम ऊआ तब दिलमें यह आया कि जब उस जान्का तू ने कुछ पता नपाया तो अब जीना भी हैफ़ है किसी जंगलमें एक पहाड़ नज़र आया तब उस पर चढ़ गया और यह इरादा किया कि अपने तईं गिरा दूं कि एक दममें सिर मुंह पत्थरोंसे टकराते टकराते फूट जावेगा तो ऐसी मुसीबतसे जी छूट जावेगा यह दिलमे कहकर चाहताहूं कि अपने तईं गिरा दूं बल्कि पावं भी उठ चुकेथे कि किसूने मेरा हाथ पकड़ लिया इतनेमें होश आगया देखताहूं तो एक सवार सब्ज़ पोश मुंहपर नक़ाब डाले मुझे फर्माताहै कि क्यों तू अपने मरनेका क़स्द करताहै खुदाके फ़ज़्लसे नाउम्मेद होना कुफ़्र है जबतलक सांसहै तबतलक आसहै अब थोड़े दिनोंमें रूम्के मुल्कमें तीन दरवेश तुझसा दुखी ऐसी ही मुसीबतमें फसे ऊवे और ऐसेही तमाशे देखे ऊवे तुझसे मुलाक़ात् करेंगे और वहांके पादशाह का आज़ाद बख़्तनाम् है उसको भी एक बड़ी मुश्किल दर्पेशहै जब वुह भी तुम चारों फकीरोंके साथ मिलेगा तो हर एकके दिल्का मतलब और मुराद जो है बखूबी हासिल होगी॥

मैंने रिकाब पकड़ कर बोसा दिया और कहा ऐ खुदा केवली तुम्हारे इतनेही फर्मानेसे मेरे दिल्को तसल्ली ऊई लेकिन् खुदाके वास्ते यह फ़र्माइये कि आप कौन हैं और इस्मशरीफ़ क्या है तब उन्होंने फर्माया कि मुर्तज़ाअली मेरा नामहै और मेरा यही कामहै कि जिस्को जो मुश्किल कठिन पेश आवे तो मैं उसको आसान कर दूं इतना फर्माकर नज़रोंसे पोशीदा होगये बारे इस फ़कीरने अपने मौला मुश्किल कुशा की बशारत्से खातिर्जमा कर क़स्द क़ुस्तन्तुनिये का किया राहमें जो कुछ मुसीबतें क़िस्मतमें लिखीं थीं खींचता ऊआ उस पादशाहजादी की मुलाक़ातके भरोसे खुदाके फ़ज़लसे यहांतक आ पऊंचा और अपनी खुशनसीबीसे तुम्हारे खिदमतमें मुशर्रफ़ ऊआ हमारे तुम्हारे आपुसमें मुलाक़ात तो ऊई बाहम सुहबत और बात चीत मुयस्सर आई अब चाहिये कि बादशाह आज़ाद बख़्तसे भी रूशनास और जान पहचान हो॥

बाद इसके मुकर्रर हम पांचों अपने मक़सदको पऊंचेंगे तुमभी दुआ मांगो और आमी कहो याहादी इस हैरान सर गर्दानकी सर्गुज़श्त यह थी जो हुजूरमें दर्वेशोंकी कह

सुनाई अब आगे देखिये कि कब यह मेहनत और ग़म हमारा बादशाहजादीके मिलने से खुशी और खुर्मीसे बदल हो आज़ाद बख़्त एक कोनेमें छिपा हुआ चुपका ध्यान लगाये पहेले दर्वेशका माजरा सुनकर खुश हुआ फिर दूसरे दर्वेश की हकीक़त को सुने लगा ॥

॥ सैर दूसरे दर्वेश की ॥

जब दूसरे दर्वेशके कहने की नौबत पहुंची वुह चारज़ानू हो बेठा और बोला ॥

॥ बैत ॥

ऐ यारो इस फकीरका टुक माजरा सुनो।
मैं इबतदासे कहताहूं ता इनतेहा सुनो ॥
जिसका इलाज कर नहीं सक्ता कोई हकीम।
हैगा हमारा दर्द निपट ला दवा सुनो ॥

ऐ दर्वेशो यह आजिज़ बादशाहजादा फारिसके मुल्कका है हर फनके आदमी वहां पैदा होतेहैं चिनांचि इस्फहां निसफे जहां मशहूरहै हफ्त इकलीममें उस इकलीमके बराबर कोई विलायत नहीं कि वहांका सितारा आफताबहै और हवा वहांकी खुश और लोग रोशनतबे और साहब सलीक होतेहैं मेरे किब्ले गाहने जो बादशाह उस मुल्कके थे लड़कपनसे कायदे और कानून सलतनतके तरबियतके वास्ते बड़े बड़े दाना उस्ताद हर एक इलम और कसबके चुनकर मेरी अतालीकीके लिये मुकर्रर कियेथे तो तालीम कामिल हर तरह की पाकर काबिल हो खुदाके फजलो करमसे चौदह बरसके सिनो सालमें सब इलमसे माहिर हुआ गुफ्तगू माकूल निशस्तो बरखास्त पसन्दीदः और जो कुछ बादशाहोंको लायक और दरकारहै सब हासिल किया और यही शौक शबोरोज़था कि काबिलोंकी सुहबतमें किस्से हर एक मुल्कके और अहवाल बादशाहजादों और नाम आवरोंका सुना करूं एक रोज़ एक मुसाहब दानाने कि खूब तवारीखदां और जहांदीदःथा मज़कूर किया कि अगर्चे आदमीकी जिन्दगीका कुछ भरोसा नहीं लेकिन अकसर वस्फ ऐसेहैं कि उनके सबबसे इनसानका नाम कयामततक ज़ुबानों पर बखुबी चला जायगा मैंने कहा अगर थोड़ासा अहवाल उसका मुफस्सल बयान करो तो मैंभी सुनूं और उस पर अमल करूं तब वुह शख़्स

हातिमताईका माजरा इस तरहसे कहने लगा कि हातिमके वक्तमें एक बादशाह अरबका नैाफल नामथा उसको हातिमके साथ बसबब नाम आवरीके दुश्मनी कमाल ऊई बऊतसा लश्कर फौज जमाकर कर लड़ाई की खातिर चढ़ आया हातिम तो खुदा तर्स श्री नेकमर्द था यह समझा कि अगर मैंभी जंगकी तईयारी करूं तो खुदाके बन्दे मारे जावेंगे श्रार बड़ी खूंरेजी होगी इसका अजाब मेरे नाम लिखा जायगा यह बात सोचकर तनतनहा अपनी जान लेकर एक पहाड़की खोहमें जाछिपा ॥

जब हातिमके गायब होनेकी खबर नैाफलको मालूम ऊई सब असबाब श्रार घरबार हातिमका कुर्क किया श्रार मुनादी करवादी कि जो कोई ढूंढ ढांड़कर पकड़लावे पानसै अशर्फी बादशाहकी सरकारसे इनाम पावे यह सुनकर सबको लालच श्राया श्रार तलाश हातिमकी करने लगे ॥

एकरोज एक बूढ़ा श्रार उसकी बुढ़िया दे। तीन बच्चे साथ लिये ऊवे लकड़ियां तोड़नेके वास्ते उस खोहके पास जहां हातिमथा पऊंचे श्रार लकड़ियां उस जंगलसे चुन्ने लगे बूढ़िया बोली कि अगर हमारे कुछदिन भलेश्राते तो हातिमको कहीं देख पाते श्रा उसको पकड़कर नैाफलके पास लेजाते तो वुह पानसै अशरफी देता हम आरामसे खाते श्रा इस दुख धंदेसे छूटजाते बूढ़ेने कहा क्या टरटर करतीहै हमारे किसमतमें यही लिखा है कि रोज लकड़ियां ताेड़ें श्रार सिरपर धरकर बाजारमें बेचें तब नोन रोटी मुयस्सर श्रावे या एक रोज जंगलसे बाघ लेजावे ले अपना काम कर हमारे हाथ हातिम काहेको श्रावेगा श्रार बादशाह इतने रुपै दिलावेगा श्रारत ने ठंडी सांस भरी श्रार चुपकी हो रही ये दोनोंकी बातें हातिमने सुनीं मर्दुमी श्रार मरव्वतसे बईद जाना कि अपने तईं छिपाये श्रार जानकोबचाये श्रार उनदोनों बेचारोंको मतलबतक नपऊंचावे सचहै अगर आदमीमें रहम नहीं तो वुह इनसान नहीं श्रार जिसके जीमें दर्द नहीं वुह कसाई है ॥

॥ बैत ॥

दर्द दिलके वास्ते पैदा किया इनसानको ।
वर्नः ताअतके लिये कुछ कमनथे करोबियां ॥

गरज हातिमकी जवांमर्दीने कबूल नकिया कि अपने कानोंसे सुनकर चुपकाहो रहे वोहीं बाहर निकल आया श्रार उस बूढ़ेसे कहा कि श्रै अजीज हातिम मैं हूं

मेरे तईं नैाफलके पास लेचल वुह मुझे देखेगा जो कुछ रुपै देनेका करार कियाहै तुझे देवेगा पीर मर्दने कहा सचहै इस सूरतमें भलाई श्रार बेहतूरी मेरी श्रलबत्ताहै लेकिन वुह क्या जानिये तुझसे क्या सलूक करे अगर मार डाले तो मैं क्या करूं यह मुझसे हरगिज नहोसकेगा कि तुझसे इनसानको अपनी तमःकी खातिर दुश्मनके हवाले करूं वुह माल कैदिन खाऊंगा श्रार कबतक जिऊगा आखिर मर जाऊंगा तब खुदाको क्या जवाब दूंगा हातिमने बहुतेरी मिन्नतकी कि मुझे लेचल मैं अपनी खुशीसे कहताहूं श्रार हमेशः इसी आरजूमें रहताहूं कि मेरा जानो माल किसूके काम श्रावे तो बेहतर है लेकिन वुह बूढ़ा किसू तरह राजी नहुश्रा कि हातिमको लेजावे श्रार इनाम पावे आखिर लाचार होकर हातिमने कहा अगर तू मुझे यों नहीं लेजाता तो मैं आपसे आप बादशाह पास जाकर कहताहूं कि इस बूढ़ेने मुझे जंगलमें एक पहाड़ की खोहमें छिपा रखाथा वुह बूढ़ा हंसा श्रार बोला भलाईके बदले बुराई मिले तो या नसीब इस रदोबदलमें आदमी श्रारभी आन पहुंचे भीड़ लगगई उन्होने मालूम किया कि हातिम यहीहै तुर्त पकड़ लिया श्रार हातिमको लेचले वुह बूढ़ाभी अफसोस करता हुश्रा पीछे पीछे साथ होलिया जब नैाफलके रूबरू लेगये उसने पूछा कि इसको कौन पकड़ लाया एक बदजात संगदिल बोला कि ऐसा काम सिवाय हमारे कौन कर सक्ताहै यह फतेह हमारे नामहै हमने अर्श पर झंडा गाड़ाहै एक श्रार लनतरानीवाला डींग मारने लगा कि मैं कई दिनसे दोड़ धूपकर जंगलसे पकड़ लायाहूं मेरी मेहनत पर नजर कीजिये श्रार जो करारहै सो दीजिये इसी तरह अशर्फियोंके लालचसे हर कोई कहताथा कि यह काम मुझसे हुश्रा वुह बूढ़ा चुपका एक कोनेमें लगा हुश्रा सबकी शेखियां सुन रहाथा श्रार हातिमकी खातिर खड़ा रोताथा जब अपनी अपनी दिलावरी श्रार मर्दानगी सब कह चुके तब हातिमने बादशाहसे कहा अगर सच बात पूछो तो यह है कि वुह बूढ़ा जो अलग सबसे खड़ाहै मुझको लायाहै अगर कयाफः पहचान जान्तेहो तो दरियाफ्त करो श्रार मेरे पकड़नेकी खातिर जो कबूल कियाहै पूरा करो कि सारे डीलमें जुबान हलालहै मर्दको चाहिये जो कहे सो करे नहीं तो जीभ हैवान कोभी खुदाने दीहै फिर हैवान श्रार इनसानमें क्या तफावत है नैाफलने उस लकड़हारे बूढ़ेको पास बुलाकर पूछा कि सच कह असल क्या है हातिमको कौन पकड़

लाया उस बिचारेने सिरसे पांवतक जो गुजराथा सारा कह सुनाया और कहा हातिम मेरी खातिर आपसे आप चला आयाहै नौफल यह हिम्मत हातिमकी सुनकर मुतअज्जिब हुआ कि बल्के तेरी सखावत अपनी जानकाभी खतरा नकिया जितने झूठ दावे हातिमके पकड़ लानेके करतेथे हुकुमकिया कि उनकी टुंड्डियां कसकर पानसौ अशरफीके बदले पान पानसै जूतियां उनके सिरपर लगाओ कि उनकोभी जान निकल पड़े वोहीं तड़तड़ पैजारें पड़ने लगीं कि एकदममें सिर उनके गंजे होगये सचहै झूठ बोलना ऐसाही गुनाहहै कि कोई गुनाह उसको नहीं पहुंचता खुदा सबको इस बलासे बचाये रखे और झूठ बोलनेका चस्का नदे बहुत आदमी झूठ मूठ बके जातेहैं लेकिन आजमाइश के वक्त सजा पातेहैं गरज उन सबको मुवाफिक उनके इनाम देकर नौफलने अपने दिलमें खयाल किया कि हातिमसे शख्ससे कि एक आलमको उससे फैज पहुंचताहै और मुहताजोंकी खातिर जान अपनी दरेग नहीं करता और खुदाकी राहमें सरतापा हाजिरहै दुश्मनी रखनी और उसका मुद्दई होना मर्द आदमीयत और जवांमर्दीसे बईदहै वोहीं हातिमका हाथ बड़ी दोस्ती और गर्म जोशीसे पकड़ लिया और कहा क्यों नहो जब ऐसे हो तब ऐसे हो तवाजः ताजीम कर कर पास बिठलाया और हातिमका मुलको इमलाक और मालो असबाब जो कुछ जब्त कियाथा वोहीं छोड़दिया नये सिरसे सर्दारी कबीलेकी उसे दी और उस बूढ़ेको पांचसौ अशर्फियां अपने खजाने से दिलवादीं वुह दुआ देता हुआ चला गया ॥ जब यह माजरा हातिमका मैंने सुना जीमें गैरत आई और यह खयाल गुजरा कि हातिम अपनी कौमका फकत रईसथा जिन्ने एक सखावतके बाइस यह नाम पैदा किया कि आजतलक मशहूरहै मैं खुदाके हुकुमसे बादशाह तमाम ईरानकाहूं अगर इस न्यामतसे महरूम रहूं तो बड़ा अफसोसहै फिलवाके दुनियामें कोई काम बड़ा दादो दिहिशसे नहीं इसवास्ते कि आदमी जो कुछ दुनियामें देताहै उसका एवज आकबतमें लेताहै अगर कोई एक दाना बोताहै तो उससे कितना कुछ पैदा होताहै यह बात दिलमें ठहराकर मीर इमारतको बुलवाकर हुकुम किया कि एक मकान आलीशान जिसके चालीस दरवाजे बलंद और बहुत कुशादः हों बाहर शहरके जल्द बनाकर तइयार करो थोड़े अर्सेमें वैसीही इमारत तइयार

हुई और उस मकानमें हर रोज हर वक्त फजिरसे शामतक मुहताजों और बेकसोंको तईं रुपै अशरफियां देता और जो कोई जिस चीजका सवाल करता मैं उसे मालामाल करता गरज चालीसों दरवाजेसे हाजतमन्द आते और जो चाहते सो लेजाते एक रोज का यह जिकर है कि एक फकीर सामनेके दरवाजेसे आया और सवाल किया मैंने उसे एक अशरफी दी फिर वुही दूसरे दरवाजेसे होकर आया दो अशर्फियां मांगीं मैंने पहचानकर दरगुजर की और दीं इसी तरह उसे हर एक दरवाजेसे आना और एक एक अशरफी बढ़ाना शुरू किया और मैंभी जान बूझकर अनजान हुआ और उसके सवालके मुआफिक दिया किया आखिर चालीसों दरवाजे की राहसे आकर चालीस अशर्फियां मांगीं वुहभी मैंने दिलवादीं इतना कुछ लेकर वुह दर्वेश फिर पहले दरवाजेसे घुस आया और सवाल किया मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ मैंने कहा सुन ऐ लालची तू कैसा फकीर है कि हरगिज फकरके तीनों हर्फोंसे भी वाकिफ नहीं फकीरका अमल उनपर चाहिये फकीर बोला भला दाता तुम्हीं बताओ मैंने कहा (फे)से फाका (काफ)से कनाअत (रे)से रियाजत निकलती है जिसमें ये बातें नहीं वुह फकीर नहीं इतना जो तुझे मिला है इसको खा पी कर फिर आइयो और जो मांगेगा लेजाइयो यह खैरात एहतियाज रफाकरनेको वास्ते है न जमा करनेके लिये ऐ हरीस चालीस दर्वाजों से तूने एक अशरफीसे चालीस अशर्फियांतक लीं उनका हिसाब तो कर कि रेवड़ी के फेर की तरह कितनी अशरफियां हुईं और इसपरभी तुझे हिर्स फिर पहले दर्वाजेसे ले आई इतना माल जमाकर कर क्या करेगा फकीरको चाहिये कि एक रोज़की फिकिर करे दूसरे दिन फिर नईरोजी रज्जाक देनेवाला मौजूद है अबहया और शर्म पकड़ और सबरो कनाअत को काम फर्मा यह कैसी फकीरी है जो तुझे मुरशिदने बताई है यह मेरी बात सुन कर खफा और बददिमाग हुआ और जितना मुझसे लेकर जमा किया था सब जमीनमें डाल दिया और बोला बस बाबा इतने गर्म मत हो अपनी कायनात लेकर रख छोड़ो फिर सखावतका नाम न लीजो सखी होना बहुत मुश्किल है तुम सखावतका बोझ नहीं उठा सकते उस मंजिल को कब पहुंचोगे अभी दिल्ली दूर है सखीके भी तीन हर्फ हैं पहले उनपर अमल करो तो सखी कहलाओ तबतो मैं डरा और कहा भला दाता इसके मानी मुझे समझाओ कहने लगा (सीन)से

समाई और (खे)सेखौफ़ इलाही और (ये)सेयाद रखना अपनी पैदाइश और मरनेको जबतलक इतना नहोवे तो सख़ावतका नाम नले और सख़ीका यह दर्जा है कि अगर बदकार हो ताभी दोस्त ख़ुदाका है इस फ़क़ीरने बहुत मुल्कोंकी सैर की है लेकिन सिवाय बसरेकी पादशाहज़ादीके कोई सख़ी देखनेमें नआया सख़ावतका जामा ख़ुदाने उस औरतपर क़ते किया है और सब नाम चाहतेहैं पर वैसा काम नहीं करते यह सुनकर मैंने बहुत मिन्नत की और क़समेंदीं कि मेरी तक़सीर मुआफ़ करो और जो चाहिये सो लो मेरा दिया हरगिज़ नलिया और यह बात कहता हुआ चला गया अगर अपनी सारी पादशाहत मुझेदे तो उस परभी नथूकूं और नहरमाल वुह तो चला गया पर बसरे की बादशाहज़ादीकी यह तारीफ़ सुनेसे दिल बेकल हुआ किसी तरह कल नथी अब यह आर्ज़ू हुई कि किसू सूरतसे बसरे चल कर उसको देखा चाहिये इस अर्सेमें पादशाहने वफ़ात पाई और तख़तपर मैं बैठा सलतनत मिली पर वुह ख़याल नगया वज़ीर और अमीरोंसे जो पायतख़्त सलतनतके थे मश्वरतकी कि सफ़र बसरेका किया चाहताहूं तुम अपने काममें मुस्तइद रहो अगर ज़िन्दगी है तो सफ़र की उमर कोताह होती है जल्द फिर आता हूं कोई मेरे जानेमें राज़ी न हुआ लाचार दिल तो उदास हो रहाथा ऐक दिन बग़ैर सबके कहे सुने चुपके वज़ीर बातदबीरको बुलाकर मुख़तार और वकील मुतलक़ अपना किया और सलतनतका मदारुलमिहाम बनाया फिर मैंने गेरुवा बस्त्र पहन फ़क़ीरी भेस कर अकेले राह बसरेकी ली थोड़े दिनोंमें उसकी सरहदमें जा पहुंचा तबसे यह तमाशा देखने लगा कि जहां रातको जाकर मुक़ाम करता नौकर चाकर उसी मलिकाके इस्तक़बाल कर कर ऐक मकान माकूलमें उतारते और जितना लवाज़िमा ज़ियाफ़तका होता है बख़ूबी मौजूद करते और ख़िदमतमें दस्तबस्तः तमामरात हाज़िर रहते दूसरे दिन दूसरी मंज़िलमें यही सूरत पेशआती इस आरामसे महीनोंकी राह तेकी आख़िर बसरेमें दाख़िल हुआ वोहीं ऐक जवान शकील ख़ुश लिबास नेक ख़ूसाहब मअरफ़त कि दानाई उसके क़ियाफ़ेसे ज़ाहिर थी मेरे पास आया और निहायत शीरीं ज़बानीसे कहने लगा कि मैं फ़क़ीरोंका ख़ादिम हूं हमेश: इसी तलाशमें रहता हूं कि जो कोई मुसाफ़िर फ़क़ीर या दुनिया दार इस शहरमें आवे मेरे घरमें क़दमरंज: फ़र्मावे सिवाय ऐक मकानके

यहां और बिदेसीके रहनेकी जगह नहींहै आप तशरीफ लेचलिये और उस मुकामको जीनत बख़शिये और मुझे सर्फ़राज कीजिये। फकीरने पूछा साहबका इसमशरीफ क्याहै बोला इस गुमनामका नाम बेदारबख़्त कहतेहैं उसकी खूबी देखकर यह आजिज उसके साथ चला और उसके मकानमें गया देखा तो एक इमारत आली लवाजिम शाहानेसे तईयारहै एक दालानमें उसने लेजाकर बैठाया और गरम पानी मंगवाकर हाथ पांव धुलवाये और दस्तरखान बिछवाकर मुझ तनतन्हाके रूबरू बकावलने एक तोड़ेका तोड़ा चुन दिया चार मुशकाब एक में यख़नी पुलाव और दूसरीमें कोर्मा पुलाव और तीसरीमें मुतञ्जन पुलाव और चौथीमें कूकू पुलाव और एक काब ज़र्देकी और कई तरहके कलिये दुप्याजे नर्गिसी रोग़न जोश और रोटियां कई किसमकी बाकरख़ानी तुनकी शीरमाल गावदीदः गावज़बां नान न्यामत पराठे और कबाब कोफ्ते शबदेग दमपुख़्त हलीम समोसे वर्की कबूली फिर्नी शीरबिरंज मलाई हलुवा फालूदा पन भत्ता निमिश आबशोरा साकेउरूस लौज़ियात मुरब्बा अचारदान दहीकी कुलफियाये न्यामतें देखकर रूह भरगई जब एक एक निवाला हर एकसे लिया पेटभी भर गया तब हाथ खानेसे खींचा वुह शख़्स मुलतिज हुवा कि साहबने क्या खाया खाना तो सब अमानत धराहै बेतकल्लुफ नोशजां फर्माइये मैंने कहा खानेमें शर्म क्या है खुदा तुम्हारा खाना आबाद रखे जो कुछ मेरे पेटमें समाया सो मैंने खाया और जायके की उसके क्या तारीफ़करूं कि अबतक जबान चाटताहूं और जो डकार आतीहै सो मुअत्तर तो अब मजीद करो अब दस्तरख़ान उठा जेरअंदाज़ काशानी मख़मलका मुकैशी बिछाकर चिलमची आफ़ताबा तिलाई लाकर बेसन्दानमेंसे खुशबू बेसन देकर गर्मपानीसे मेरे हाथ धुलाये फिर पानदान जड़ाउमें गिलौरियां सोनेके पखरोटोमें बंधी हुईं और चौघड़ों में खिलोरियां और चिकनी सुपारियां और लौंग इलाचियां रूपेके वर्कोंमें मढ़ी हुई लाकर रखीं जब मैं पानी पीनेको मांगता तब सुराही बर्फमें लगी हुई आबदार ले आता। जब शाम हुई फानूसोंमें काफूरी शमयें रौशन हुईं वुह अजीज़ बैठा हुआ बातें करता रहा जब पहर रात गई बोला आप इस छपरखटमें कि जिसके आगे दलदा पेशगीर खड़ाहै आराम कीजिये फकीरने कहा कि साहब हम फकीरों को एक बोरिया या मिर्गछाला बिस्तरके लिये बहुतहै यह खुदाने तुम दुनिया दारोंके वास्ते बनायाहै

कहने लगा यह सब असबाब दर्वेशोंकी खातिरहै कुछ मेरा माल नहीं उसके बजिद होनेसे उन बिछौनो पर कि फूलोंकी सेजसेभी नर्मथे जाकर लेटा दोनो पाटियोंकी तरफ गुलदान और चंगेरें फूलोंकी चुनी हुईं और ऊदसोज और लखलखे रौशनथे जिधर की करवटलेता दिमाग मुअत्तर हो जाता इस आलम्में सोरहा॥ जब सुबह हुई नाश्तेकोभी बादाम पिस्ते अंगूर अंजीर नाशपाती अनार किशमिश छुहारे और मेवेका शरबत ला हाजिर किया। इसी तौरसे तीन दिनरात रहा चौथे रोज मैंने रुखसत मांगी हाथ जोडकर कहने लगा शायद इस गुनहगारसे साहबकी खिदमतगारीमें कुछ कसूर हुआ कि जिसके बाइस मिजाज तुम्हारा मुकद्दर हुआ मैंने हैरान होकर कहा बराय खुदा यह क्या मजकूरहै लेकिन मिहमानीकी शर्त तीन दिन तलकहै सो मैं रहा ज्यादा रहना खूब नहीं और अलावे यह फकीर वास्ते सैरके निकलाहै अगर एकही जगह रहजावे तो मुनासिब नहीं इस लिये इजाजत चाहताहै नहीं तो तुम्हारी खूबियां ऐसी नहीं कि जुदा होनेको जी चाहे तब वुह बोला जैसी मर्जी लेकिन एक साअत तवक्कुफ कीजिये कि बादशाहजादीके हुजूरमें जाकर अर्ज करूं और तुम जो जाया चाहते हो तो जो कुछ असबाब ओढ़ने बिछानेका और खानेके बासन रूपे सोनेके और जड़ाऊके इस मिहमान खानेमेंहै यह सब तुम्हारा मालहै इसके साथ लेजानेकी खातिर जो फरमाओ तदबीर कीजावे मैंने कहा लाहौल पढ़ो हम फकीर नहुवे भाट हुवे अगर यही हिर्स दिलमें होती तो फकीर काहेको होते दुनियादारी क्या बुरीथी उस अजीजने कहा अगर यह अहवाल मलिकः सुने तो खुदा जाने मुझे इस कामसे तगीर करकर क्या सलूक करे अगर तुम्हें ऐसीही बेपर्वाईहै तो इन सबको एक कोठरीमें अमानतबन्द कर कर दरवाजेको सरबमुहर करदो फिर जो चाहो सो कीजियो। मैं नकबूल करताथा और वुहभी नमानताथा लाचार यही सलाह ठहरी कि सब असबाबको बन्द करकर कुफुल कर दिया और मुन्तजिर रुखसतका हुआ इसीमें एक खाजे सरा मातबर सिरपर सरपेच और गोशपेच और कमरमें बन्दी बांधे एक आसा सोनेका जड़ाऊ हाथमें और साथ उसके कई खिदमतगार माकूल उहदे लिये हुवे इस शानोशोकतसे मेरे नजदीक आया ऐसी ऐसी मिहरबानगी और मुलायमतसे गुफ्तगू करने लगा कि जिसका बयान

नहीं कर सक्ता फिर बोला कि ऐ मियां अगर तवज्जुह और करम करकर इस मुश्ताकके गरीब खानेको अपने कदमके बर्कतसे रौनक बख्शिये तो बन्दे नवाजी और गरीब पर्वरीसे बईद नहीं शायद शाहजादी सुने कि कोई मुसाफिर यहां आयाथा उस्की तवाजो किसूने नकी वुह योंही चला गया इस वास्ते यल्लाह आलम मुझपर क्या आफत लावे और कैसी कयामत उठावे बल्कि हर्फ जिन्दगी परहै मैंने इन बातोंको नमाना तब शाहनखाह मिन्नतें करके मेरे तईं और एक हवेलीमें कि पहले मकानसे बिहतरथी लेगया उसी पहेले मेंजबानकी मानन्द तीनदिन रात दोनोवक्त वैसीही खाने और सुबह और तीसरे पहर शरबत और तफन्नुनकी खातिर मेंवेखिलाये और बासन सोना चांदी और फर्शफरूश और असबाब जोकुछ वहांथा मुझसे कहने लगा कि इनसबके तुम मालिक मुखतारहो जो चाहो सो करो। मैं ये बातें सुनकर हैरान हुआ और चाहा कि किसी नकिसी तरहसे यहांसे रुखसत होकर भागूं मेरे बशरेको देखकर वुह महली बोला ऐ खुदाके बन्दे जो तेरा मतलब या आर्जू हो सो मुझसे कह तो हजूरमें मलिकःके जाकर अर्ज करूं मैंने कहा मैं फकीरीके लिबासमें दुनियाका माल क्या मांगूं कि तुम बगैर मांगे देतेहो और मैं इनकार करताहूं तब वुह कहने लगा कि हिर्स दुनियाकी किसीके जीसे नहीं गई किसू कबिने यह कबित कहाहै॥

॥ कबित ॥

नख बिनकटा देखे सीस भारी जटा देखे जोगी कनफटा देखे छार लाये तन्में।
मौनी अनबोल देखे स्योरा सिरछोल देखे करत कलोल देखे बनखण्डी बनमें॥
बीर देखे सूरदेखे सब गुनी और कूढ़ देखे मायाके पूरदेखे भूल रहे धन्में।
आद अन्त सुखी देखे जन्महीके दुखीदेखे पर वे नदेखे जिनके लोभ नांहन मन्में॥

मैंने यह सुनकर जवाब दिया कि यह सचहै पर मैं कुछ नहीं चाहता अगर फर्मावो तो एक रुक्का सरबमुहर अपने मतलबका लिख करदूं जो हजूर मलिकःके पहुंचादो तो बड़ी मिहरबानीहै गोया तमाम दुनियाका माल मुझको दिया बोला बसरोचश्म क्या मुजायका मैंने एक रुक्का लिखा पहले शुकर खुदाका फिर अहवाल कि यह बन्दः खुदाका कई रोजसे इस शहरमें वारिदहै और सरकारसे सब तरह की खबरगीरी होतीहै जैसी खूबियां और नेकनामियां मलिकःकी सुनकर इश्तियाक देखनेका हुआथा उस्से

चारचंद पाया अब हुजूरके अरकाने दौलत यों कहतेहैं कि जो मतलब और तमन्ना तेरी हो सो जाहिर कर इसवास्ते बेहिजाबानः जो दिलमें आर्जू है सो अर्ज करताहूं कि मैं दुनियाके मालका मुहताज नहीं अपने मुल्कका मैंभी बादशाहहूं फकत यहांतलक आना और मिहनत उठाना आपके इश्तियाकके सबबसे हुआ जो तने तन्हा इस सूरतसे आ पहुंचाहूं अब उमैदहै कि हुजूरकी तवज्जुहसे यह खाक नशीन मतलब दिलीको पहुंचे तो लायकहै आगे जो मर्जी मुबारक लेकिन अगर यह इलतेमास खाकसारका कबूल नहोगा तो इसी तरह खाक छान्ता फिरेगा और इस जान बेकरारको आपके इश्कमें निसार करेगा मजनूं और फरहादकी मानन्द जंगलमें या पहाड़पर मर रहेगा यही मुद्दआ लिखकर उस खोजेको दिया उसने बादशाहजादी तलक पहुंचाया बाद एक दमके फिर आया और मेरे तई बुलाया और अपने साथ महलकी डेउढी पर लेगया वहां जाकर देखा तो एक बूढ़ीसी औरत साहब लियाकत सुनहरी कुर्सी पर गहना पाता पहने हुवे बैठीहै और कई खोजे खिदमतगार तकल्लुफके लिबास पहने हुवे हाथ बांधे सामने खड़ेहैं मैंने उसे मुखतारकार और देरीना समझकर दस्तबसर हुआ उस मामाने बहुत मिहरबानीसे सलाम किया और हुकुम किया कि आओ बैठो खूब हुआ तुम आये तुम्होंने मलिकःके इश्तियाक कारुक्का लिखाथा मैं शर्म खाकर चुप होरहा और सिर नीचाकरके बैठा। एक साअतके बाद बोली कि ऐ जवान बादशाहजादीने सलाम कहाहै और फरमायाहै कि मुझको खाविन्द करनेसे ऐब नहीं तुमने मेरी दरखास्त की लेकिन अपनी बादशाहत बयान करना और इस फकीरीमें अपने तई बादशाह समझना और उस्का गरूर करना निपट बेजाहै इसवास्ते कि सब आदमी आपुसमें फिल हकीकत एकहैं लेकिन दीन इसलामकी फजीलतहै और मैंभी एक मुद्दतसे शादीकरने की आर्जू मन्दहूं और जैसे तुम दौलत दुनियासे बेपर्वाहो मेरे तईंभी हकतालाने इतना माल दियाहै कि जिस्का कुछ हिसाब नहीं पर एक शर्तहै पहले महर अदा करलो और महर शादीका एक बातहै जो तुमसे होसके मैंने कहा मैं सब तरह हाजिरहूं जानो मालसे दरेग नहीं करनेका वुह बात क्याहै कहो तो मैं सुनूं तब उसने कहा आजके दिन रहजाओ कल तुम्हे कह दूंगी मैंने खुशीसे कबूल किया और रुखसत होकर बाहर आया दिनतो गुजरा जब शाम हुई मुझे एक खाजेसरा महलमें बुलाकर लेगया जाकर

देखा तो अकाबिर आलिम और फाजिल साहब शऊर हाजिर हैं मैंभी उसी जलसे में जाकर बैठा कि इतनेमें दस्तरखान बिछाया गया और खाने अकसाम अकसामके शोरों और नमकों चुने गये वे सब खाने लगे और मुझेभी तवाजः करकर शरीक किया जब खानेसे फरागत हुई एकदाई अन्दरसे आई और बोली कि बहरोज कहांहै उसे बुलाओ यसावलोंने वोहीं हाजिर किया उसकी सूरत बहुत मर्द आदमीकीसी और बहुतसी कुंजियां रूपे सोनेकी कमरमें लटकी हुई सलाम अलैक करकर मेरे पास आकर बैठा वोंहीं दाई कहने लगी कि ऐ बहरोज तूने जो कुछ देखाहै मुफस्सल उसका बयानकर बहरोजने यह दास्तान कहनी शुरूकी और मुझसे मुखातिब होकर बोला ऐ अजीज हमारी बादशाहजादीकी सरकारमें हजारों गुलामहैं कि सौदागरीके काममें मुतईयनहैं ॥

उनमेंसे एक मैंभी अदना खानजादहूं हर एक मुल्ककी तरफ लाखों रुपैका असबाब और जिनस देकर रुखसत फरमातीहैं जब वुह वहांसे फिर आताहै तब उसे उस देसका अहवाल अपने हजूरमें पूछतीहैं और सुन्तीहैं एक बार यह इत्तफाक हुआ कि मैं तिजारतकी खातिर चला और शहर नीमरोजमें पहुंचा वहांके बाशिंदोंको देखा तो सबका लिबास सियाहहै और हरदमनालः और आहहै ऐसा मालूम होताथा कि इन पर कुछ बड़ी मुसीबत पड़ीहै इसका सबब जिससे मैं पूछता कोई जवाब मेरा नदेता इसी हैरतमें कई रोज गुजरे एक दिन जोंहीं सुबह हुई तमाम आदमी छोटे बड़े लड़के बूढ़े गरीबगनी शहरके बाहर चले एक मैदानमें जाकर जमा हुवे और उस मुल्कका बादशाहभी सब अमीरोंको साथ लेकर सवार हुआ और वहां गया तब सब बराबर कतार बांधकर खड़े हुवे। मैंभी उनके दर्मियान खड़ा तमाशा देखताथा पर यह मालूम होताथा कि वे सब किसूका इन्तजार खींच रहेहैं एक घड़ीके अर्समें दूरसे एक जवान परीजाद साहब जमाल पन्दरह सोलह बर्सका सिनोसाल गुल और शोर करता हुआ और कफमुंहसे जारी जर्द बैलकी सवारी एक हाथमें कुछ लिये मुकाबिल खलकल्लाहके आया और अपने बैल परसे उतरा एक हाथमें नाथ और एक हाथमें नंगी तलवार लेकर दो जानू बैठा एक गुल अंदाम परी चेहरः उसके साथथा उसको उस जवानने वुह चीज जो हाथमें थी दी वुह लेकर एक सिरसे हर एकको दिखाता जाताथा लेकिन यह हालतथी कि जो कोई देखताथा बेइखतियार डाढ़ मारकर रोताथा इसी तरह

सबको दिखाता और बताता हुआ सबके सामनेसे होकर अपने खाविन्दके पास फिर गया। उसके जातेही वह जवान उठा और उस गुलामका सिर शमशेरसे काटकर घोड़े सवार होकर जिधरसे आयाथा उधरकी राहली सबखड़े देखाकिये जब नजरोंसे गायब हुआ लोग शहरकी तरफ फिरे। मैं हर एकसे इस माजरेकी हकीकत पूछताथा बल्कि रुपयोंका लालच देता और खुशामद मिन्नत करता कि मुझे जरा बताओ कि यह जवान कौनहै और इसने यह क्या हरकत की और कहांसे आया और कहां गया हरगिज़ किसीने नबताया और मफ्हूम मेरे खयालमें आया यह तअज्जुब देखकर जब मैं यहां आया और मलिकःके रूबरू इजहार किया तबसे बादशाहजादीभी हैरान है और उसके तह-कीक करनेकी खातिर दूदिली होरहीहै इसवास्ते मशहूर अपना यही मुकर्रर कियाहै कि जो शख्स उस अजूबेकी तहकीक खबरलावे उसको पसन्द फर्मावें और वही मालिक सारे मुल्कको मालका और मलिकःका होवे यह माजरा तुमने सब सुना अपने दिलमें गौर करो अगर तुम उस जवानकी खबर लासको तो कसद मुल्क नीमरोजका करो और जल्दरवाना हो नहीं तो इनकार करकर अपने घरकी राह लो मैंने जवाब दिया कि अगर खुदा चाहे तो जल्द उसका अहवाल सिरसे पांवतक दरियाफ्त कर कर बादशाहजादीके पास आ पहुंचताहूं और कामयाब होताहूं और जो मेरी किस्मत बदहै तो इसका इलाज नहीं लेकिन मलिकः इसका कौल करार करें कि अपने कहनेसे न फिरें और बिल फैल एक अंदेशा मुश्किल मेरे दिलमें खलिश कर रहाहै अगर मलिकः गरीबनवाजी और मुझ फिर परवरीसे हजूरमें बुलावें और परदेके बाहर बिठलावें और मेरा इलतमास अपने कानों सुनें और उसका जवाब अपनी जबानसे फर्मावें तो मेरी खातिरजमा हो और मुझसे सबकुछ होसके यह मेरे मतलबकी बात उस मामाने रूबरू उस परी पैकरके अर्जकी बारे कदरदानीकी राहसे हुक्म किया कि उन्हें बुलालो दाई फिर बाहिर आई और मुझे अपने साथ जिस महलमें बादशाहजादी थीं लेगई क्या देखताहूं कि दुरुयास फ़ बांधे दस्तबस्ता सहेलियां और खवासें और उर्दाबेगनियां किल्माकिनियां तुर्किनियां हबशनियां उजबकनियां कश्मीरिनियां जवाहिरमें जड़ी उहदेलिये खड़ीहैं इन्द्रका अखाड़ा कहूं या, परियोंका उतारा बेइख्तियार ऐक आह बेखुदीसे जबान

तब आई और कलेजा धड़कने लगा पर अरा अपने तईं थांभा उसको देखता भालता और सैर करता हुआ आगे चला लेकिन पांव और मनको रोकके जिसको देखूं पर यह नहीं चाहे कि आगे जाऊं एक तरफ़ बिलकुल कोठी और मोंढा जड़ाऊ बिछवा रखाथा और एक पीढ़ीभी सन्दल की बिछी थी दाहने मुझे बैठने की इशारत की मैं मोंढे पर बैठ गया और कुछ बातें पर कहने लगी के अब जो कहना है सो जीभर कर कहो मैंने मलिकाःकी खूबियोंको और अदलो इनसाफ़ दादरिहि की बहुत तारीफ़ की फिर कहने लगा जबसे मैं इस मुल्कमें आया हरएक मंज़िलमें यही देखा कि जाबजा मुसाफ़िरख़ाने और इमारतें आली बनी हुई हैं और आदमी हरएक उहदेके तैनात हैं कि ख़बरगीरी मुसाफ़िरों और मुहताजों की करते हैं मुझेभी तीन दिन हरएक मुक़ाममें गुज़रे चौथे रोज़ जब रुख़सत होने लगा तबभी किसूने ख़ुशीसे न कहा कि जाओ और जितना असबाब उस मकानमें था शतरंजी चांदनी क़ालीनें सीतलपाटी मंगलकोटी दीवारगीरी छत परदे चिलवने सायबान नमगीरे छपरखट मैगिलाफ़ पर्दकथा तोशक बालापोश सेजबन्द चादर तकिये गलतकिये देग देगचे पतीले तबाक रिकाबी तश्तरी चमचे बकावली कफ़गीर तबामपोश सर्पोश सीनी ख़ान् पोश तोड़ःपोश आबख़ोरें बुजहरे सुराही लगन पान्दान चोघड़ चंगेर गुलाबपाश ऊदसोज़ आफ़ताबा चिलमची सब मेरे हवाले किये कि यह तुम्हारा माल है चाहो अब ले नहीं तो एक कोठरीमें बन्द कर कर अपनी मुहर करो जब तुम्हारी ख़ुशी होगी फिरते हुवे लेते जाइयो मैंने योंही किया पर यह हैरत है कि जब मुझसे फ़क़ीर तन्हासे यह सलूक हुआ तो वैसे ग़रीब हज़ारों तुम्हारे मुल्कोंमें आते जाते होंगे पस अगर हरएकसे यही मिहमांदारीका तौर रहता होगा तो मबलग़ बेहिसाब ख़र्च होते होंगे पस इतनी दौलत कि जिसका यह सर्फ़ है कहांसे आई और कैसी है अगर गंजक़ारूं हो तौभी वफ़ा न करे और ज़ाहिरमें अगर मलिकःकी सलतनतपर निगाह कीजिये तो उसकी आमद फ़क़त बावर्चीख़ानेके ख़र्चकोभी किफ़ायत न करती होगी और ख़र्चोंका क्या ज़िकर है अगर इसका बयान मलिकःकी ज़बानी सुनूं तो ख़ातिरजमा हो कसद मुल्क नीमरोज़का करूं और ज्यों त्यों वहां जा पहुंचूं यह सब अहवाल दरियाफ़त करके मलिकःकी ख़िदमतमें बशर्त ज़िन्दगी हाज़िर हो अपने दिलकी मुराद पाऊं ॥

यह सुनकर मलिकःने अपनी जबानसे कहा कि ऐ जवान अगर तुझे आर्जू कमालहै कि यह माजिरा दरियाफ्त करे तो आजके दिनभी मुकाम कर शामको तुझे हजूरमें बुलाकर जो कुछ अहवाल इस दौलत बेजवालकाहै बिलकुल कहा जावगा। मैं यह तसल्ली पाकर अपनी इस्तकामतके मकानपर आकर मुंतजिर था कि कब शाम हो जो मेरा मतलब तमाम हो इतनेमें खाजेसरा कई चौगोशे खोंचे तोरा पड़े भूंईयोंके सिरपर धरवा कर मौजूद हुआ और बोला कि हजूरसे उलुशखास इनायत हुआहै इसे तनाउल करो जिस वक्त मेरे सामने खोले खुशबूसे दिमाग मुअत्तर हुआ और रूह भरगई जितना खासका खासिया बाकी उन सभोंको उठा दिया और शुकर न्यामत कह भिजाया बारे जब आफताब तमाम दिनका मुसाफिर थका हुआ गिरता पड़ता अपने महलमें दाखिल हुआ और माहताब दीवानखानेमें अपने मुसाहबोंको साथ लेकर निकल बैठा उस वक्त दाई आई और मुझको कहा कि चलो बादशाहजादीने याद फर्मायाहै मैं उसके हमराह होलिया खिलवतखासमें लेगई रौशनीका यह आलमथा कि शबेकदरकी वहां कदर नथी और बादशाही फर्शपर मसनद मुगरकी बिछी मुरस्सेका तकिया लगा हुआ और उसपर एक शामियाना मोतियोंकी झालरका जड़ाऊ इस्तादोंपर खड़ा हुआ और सामने मसनदके जवाहिरके दरख्त फूल पात लगे हुवे गोया ऐन मैन कुदरतीहैं सोनेकी क्यारियोंमें जमे हुवे और दोनों तरफ दायें बायें शागिर्दपेशे और मुजराई दस्तबस्तः बाअदब आंखें नीची किये हुवे हाजिरथे और तवायफ और गायनें साजोंके सुर मिलाये मुन्तजिर यह समां और यह तइयारी करो फरकी देख कर अकल ठिकाने नरही दाईसे पूछा कि दिनको वुह जेबाइश और रातको यह आराइशकि दिन ईद और रात शबेबरात कहा चाहिये बल्कि दुनियांमें बादशाह हफ्त अकलीमको यह ऐश मुयस्सर नहोगा हमेशः यही सूरत रहतीहै दाई कहने लगी कि हमारी मलिकःका जितना कारखाना तुमने देखा वह सब इसी दस्तूरसे जारीहै इसमें हरगिज खलल नहीं बल्कि ज्यादःहै तुम यहां बैठो मलिकः दूसरे मकानमें तशरीफ रखतीहै जाकर खबर करूं॥ दाई यह कहकर गई और उल्टी पांवों फिर आई कि चलो हजूरमें उस मकानमें जातेही भिचक रहगया नमालूम हुआ कि दरवाजा कहां और दीवार किधरहै इसवास्ते कि हलब्बी आईनेकदेआदम चारों तरफ लगे और

उनकी परदाजोंमें हीरे और मोती जड़े हुवे ऐसाका अक्स ऐसामें नजर आता तो यह मालूम होता कि जवाहिरका सारा मकानहै एक तरफ परदा पड़ाथा उसके पीछे मलिकः बेठीथीं वुह दाई परदेसे आकर बैठी और मुझेभी बैठनेको कहा तब दाई मलिकःके फर्मानेसे इसतौर बयान करने लगी कि मुल्क के जमानेदाना सुलतान इस कलमीमका बड़ा बादशाह था उसके घरमें सात बेटियां पैदा हुईं ऐक रोज बादशाहने हुक्म फर्माया के सातों लड़कियां सोलह सिंगार बारह अभरन् बाल बाल गज मोती पिरोकर बादशाहके हजूर खड़ीथीं सुलतानके कुछ जीमें आया तो बेटियोंकी तरफ देखकर फरमाया अगर तुम्हारा बाप बादशाह नहोता और किसी गरीबके घर तुम पैदा होतीं तो तुम्हें बादशाहजादी और मलिकः कौन कहता खुदाका शुकर करो कि शाहजादियां कहलातीहो तुम्हारी यह सारी खूबियां मेरे दमसेहैं छः लड़कियां ऐक जबान होकर बोलीं कि आप जो फरमातेहैं बजाहै लेकिन यह मलिकः जो सबसे छोटीथीं पर अकलो शऊरमें सबसे बड़ीथीं चुपकी खड़ी रहीं इस गुफ्तगूमें बहेनोंकी शरीक नहुईं बादशाहने कहा क्यों बीबी तुम कुछ नबोलीं इसका क्या बाइसहै तब मलिकः हाथ बांधकर बोली कि जिनाब सची बात कड़वी लगतीहै सो इसवक्त मैं अपनी जिन्दगीसे हाथ धोकर अर्ज करतीहूं और जो कुछ मेरी किसमतमें लिखनेवालेने लिखाहै उसका मिटानेवाला कोई नहीं ॥

। बैत ।

खाह तुम पांवघिसो या कि रहो सरबसजूद ।

बातपेशानी कि जो कुछहै सो पेश आनीहै ॥

जिस खुदाने आपको बादशाह बनाया उन्हीने मुझेभी बादशाहजादी कहवाया उसकी कुदरतमें किसीको इखतियार नहीं आपकी जात किबलः और काबः है मगर नसीब हर ऐकका हर ऐकके साथहैं । बादशाह यह सुनकर गुस्से हुवे बेजार होकर फरमाया छोटो मुंह बड़ी बात अब इसकी यही सजाहै कि गहना पाता जो कुछ इसके हाथ गलेमेंहै उतारलो और ऐक मियानेमें चढ़ाकर जंगलमें फेंक आवो देखें इसके नसीबोंमें क्या लिखाहै बमोजिब हुक्म बादशाहके आधीरातको जंगलमें छोड़कर चले आये मलिकःके दिलपर अजब हालत गुजरी कि ऐक दममें क्या था और क्या हुवा फिर खुदाको याद

करती इतनेमें आंख लगगई जब सुबह होने लगी मलिकःकी आंख खुल गई पुकारा कि वजूको पानी लाओ फिर रातकी बात याद आई गरज उस मिकानेमें बैठी हुई खुदासे लौ लगाये रहतीथी और यह कवित्त उस दम पढ़तीथी ॥

॥ कवित्त ॥

जब दांत न थे तब दूध दयो जब दांत दिये कहा अन्न न देहै ।
जो जलमें थलमें पंछी पशुकी सुध लेत सो तेरीहुं लैहै ॥
काहेको सोच करे मन मूरख सोचकरे कछु हाथ नऐहै ।
जानको देत अजानको देत जहांनको देत सो तोकोहुं देहै ॥

सचहै जब कुछ बन नहीं आता तब खुदाही याद आताहै अब खुदाके कारखानेका तमाशा सुनो इसी तरह तीन दिन रात साफ गुजरे कि मलिकःके मुंहमें एक खीलभी उड़कर नगई वुह फूलसा बदन सूखकर कांटा होगया और वुह रंग जो कुन्दनसा दमकताथा हलदीसा बन गया मुंहमें फिफड़ी बंध गई आंखें पथरागईं मगर एक दम अटक रहाथा कि वुह आता जाताथा जबतलक सांस तबतलक आस चौथे रोज सुबहको एक दरवेश खिजिर कीसी सूरत नूरानी चिहरा रोशन दिल आकर पैदा हुआ मलिकःको उस हालतमें देखकर बोला कि बेटी अगर्चे तेरा बाप बादशाहहै लेकिन तेरी किसमतमें यहभी बदाथा अब इस फकीर बूढ़ेको अपना नौकर समझ और अपने पैदा करनेवालेका रात दिन ध्यान रख खुदा खुश करेगा और फकीरके कचकोलमें जो टुकड़े भीखके मौजूदथे मलिकःके रूबरू रखे और पानीकी तलाशमें फिरने लगा देखे तो एक कुआंहै पर डोल रस्सी कहां जिससे पानी भरे थोड़े पत्ते दरखतसे तोड़कर दोना बनाया और अपनी सेली खोलकर उसमें बांधकर निकाला और मलिकःको खिलाया पिलाया बारे टुक होश आया उस मर्द खुदाने बेकस और बेबस जानकर बहुतसी तसल्लीदी और आपभी रोने लगा आखिर उसकी तसल्लीसे मलिकःके दिलको ढाढ़स बंधी उस रोजसे उस दरवेशने यह मुकर्रर किया कि सुबहको भीख मांगने शहरमें निकल जाता जो जो मिलता मलिकःके पास ले आता और खिलाता इस तौरसे थोड़े रोज गुजरे एक दिन मलिकःने तेल सिरमें डालने और कंघी चोटी करनेका कसद किया

जोहीं मुवाफ खोला पुटलेमेंसे एक मोतीका दाना गोल आबदार निकल पड़ा मलिकःने उस दरवेशको दिया और कहा शहरमेंसे इसको बेचलावो फकीर उसको बेचकर कीमत बादशाहजादीके पास लेआया तब मलिकःने हुक्म किया कि एक मकान मवाफिक गुजरानके इस जगह बनवाओ फकीरने कहा ऐ बेटी लेउ दीवारकी खोदकर थोड़ीसी मिट्टी जमा करो एक दिनमें पानी लाकर गारा करकर बुनियाद दुरस्त करदूंगा मलिकःने उसके कहनेसे मिट्टी खोदनी शुरुकी जब एक गज गहरा गढ़ा खोदा गया जमीनके नीचेसे एक दरवाजा दिखाई दिया मलिकःने उसको साफ किया एक बड़ा घर जवाहिर और अशरफियोंसे भरा नजर आया मलिकःने पांच चार लप अशर्फियोंको लेकर उपरसे बंद कर दिया इतनेमें फकीर आया मलिकःने फरमाया कि राज और कारीगर अपने कामके उस्ताद और मजदूर चालाक बुलाओ कि इस जगह पर एक इमारत बादशाहानः और शहर पनाह और किला बाग बाउली और एक मुसाफिर खाना जल्द तईयार करें लेकिन पहिले नकशा उनका एक कागज पर दुरस्त करके हुजूरमें लावें जो पसन्द किया जावे ॥

फकीरने वैसेही कारकुन हुशियार लाकर हाजिर किये मुवाफिक फरमानेके तामीर इमारतकी होने लगी और नौकर चाकर हर एक कामके लिये चुनचुनकर नौकर होने लगे इस इमारत आलीशानकी तईयारी की खबर रफ्तः रफ्तः बादशाहको जो मलिकःके बापथे पहुंची सुनकर बहुत मुतआज्जब हुवे और हर एकसे पूछा कि यह कौन शख्स है जिसने यह महलात बनाने शुरु किये हैं उसकी कैफियतसे कोई वाकिफ नथा सभोंने कानोंपर हाथ रखे तब बादशाहने एक अमीरको भेजा और पैगाम दिया कि मैं इन मकानोंके देखनेको आया चाहताहूं और यहभी मालूम नहीं कि तुम कहांकी बादशाहजादी हो यह सब कैफियत दरियाफ्त करनी मंजूरहै जोहीं मलिकःने यह खुश खबरी सुनी बहुत खुश होकर अरजी लिखी कि जहांपनाह सलामत हुजूरके तशरीफ लानेकी खबर तरफ गरीबखानेकी सुनकर निहायत खुशी हासिल हुई जिहे ताले उस मकानके जहां कदम मुबारकका निशान पड़े और वहांके रहनेवालोंपर दामने दोलत सायाकरे यह लौंडी उम्मेदवारहै कि कल जुमेरात रोज मुबारकहै तशरी लाकर इस गरीबखानेको रोनक बखशिये और उस अमीरको तवाजा कर कर रुखसत किया ॥

बादशाहने अरजी पढ़ी और कहला भेजा कि हमने तुम्हारी दावत कबूल की अलबत्तः आवेंगे मलिकःने नौकरों और सब कारबारीयोंको हुकुम किया कि सवाजिमा जियाफतका ऐसे सलीकेसे तईयार हो कि बादशाह देखकर बहुत खुश हो मलिकःके फरमानेसे सब किसिमके खाने सलोने और मीठे इस जायकके तईयार हुवे कि अगर रोजेदारके सामने रखते तो वुहभी बेईमान होजाता जब शाम हुई बादशाह तखत पर सवार होकर मलिकःके मकानपर तशरीफ लाये मलिकः अपनी खवासोंको लेकर इसतकबालकेवास्ते चली जो बादशाहके तखत पर नजर पड़ी इस आदाबसे मुजरा शाहाना किया कि यह कायदा देखकर बादशाहको औरभी हैरत ने लिया गरज बादशाहको तखत पर लाबैठाया मलिकःने सवा लाख रुपैका चबूतरा तईयार करवा रखाथा और एकसौ एक किशतियां जवाहिर और अशर्फियों और पशमीने और नूरबाफी और रेशमी और तिलाबाफी और जरदोजीकी लगा रखीथीं और दो जंजीर हाथी और दसरास घोड़े इराकी और यमनी मुरस्सेके साजसे तईयार कर रखेथे नजर गुजराने और आप दोनों हाथ बांधे रूबरू खड़ी रही बादशाहने बहुत मिहरबानीसे फरमाया कि तुम किस मुल्ककी शाहजादीहो और यहां किस सूरतसे आना हुआ ॥

मलिकःने आदाब बजा लाकर इलतमास किया कि यह लोंडी वुही गुनहगार है जो आपको गजबसे इस जंगलमें पहुंची और ये सब तमाशे खुदाके हैं यह सुनतेही बादशाहके लहूने जोश मारा उठकर मुहब्बतसे गले लगा लिया और हाथ पकड़के अपने तखतके पास कुरसी बिछवाकर हुकुम बैठनेका किया लेकिन बादशाह हैरान और मुतअज्जिब बैठेथे फरमाया बादशाह बेगमको कहो कि बादशाहजादियोंको अपने साथ लेकर जल्द आवें जब वे आईं बहनोंने पहचाना और गले लगकर रोईं और शुकुर किया ॥

मलिकःने अपनी मा और छःओं बहनोंके रूबरू इतनानकद और जिनस और जवाहिर रखा कि खजाना तमाम आलमका उसके पासंगमें नचढ़े फिर बादशाहने सबके साथ बैठकर खाना नोश जां फरमाया जबतलक जहांपनाह जीते रहे इसी तरह गुजरी कभू कभू आप आते और कभी मलिकःको भी अपने साथ महलोंमें लेजाते ॥

जब बादशाह मरगये सलतनत इस मुल्ककी मलिका को पऊंची कि इनके सिवा दूसरा कोई लायक इस कामके नथा ऐ अज़ीज़ अहवाल यह है जो सुना ॥

दाईने यह बात कहकर कहा कि अब अगर इरादा वहां जानेका और उस खबर लानेका दिलमें रखते हो तो जल्द रवाना हो मैंने कहा इसी वक्त जाताहूं और खुदा चाहेतो जल्द फिर आताहूं गरज रुखसत होकर चला ॥

बरस दिनके अर्सेमें शहर नीम रोजमें जापऊंचा वहांके आदमी हजारी बजारी जो नजर पड़े सियाह पोश थे जैसा अहवाल सुनाथा अपनी आंखोंसे देखा ॥

कई दिनोंके बाद चांद रात ऊई पहिली तारिख सारे लोग उस शहरके छोटे बड़े लड़केबाले उमरा बादशाह औरत मर्द एक मैदानमें जमा ऊवे मैंभी फकीरकी सूरत बना ऊआ खड़ा देखताथा इतनेमें एक जवान बैल पर सवार मुंहमें कफ भरे जोशकरता ऊआ जंगलमेंसे बाहर निकला मैंजो उस हालके दरियाफ्त करनेको गयाथा देखतेही होश हवास उड़ गये हैरान होकर खड़ा रह गया वुह जवान अपने कायदे पर जो जो काम करताथा करके फिर गया और सब आदमी शहरमें गये जब मुझे होश आया तब पछताया कि यह क्या तुझसे हरकत ऊई अब महीने भर फिर राह देखनी पड़ी लाचार सबके साथ चला आया और उस महीनेको माहे रमजान की तरह एक एक दिन गिनकर काटा बारे दूसरी चांद रात आई मुझे गोया ईद ऊई पहिली तारीखको फिर बादशाह खिलकत समेत वहीं जाकर इकट्ठे ऊवे तब मैंने दिलमें इरादा किया की अबकी बार जो हो सो हो अपने तईं संभालकर इस माजरेको मालूम किया चाहिये इत्तफाकन् जवान बदस्तूर जर्द बैल पर जीन बांधे सवार हो आ पऊंचा और उतर कर दुजानू बैठा एक हाथमें नंगी तलवार और एक हातमें बैलकी नाथ पकड़ी और मर्तबान गुलामको दिया गुलाम सबको दिखाता ऊआ चला आदमी देखकर रोने लगे उस जवानने मर्तबान फोड़ा और गुलामको एक तलवार ऐसी मारी कि सिर जुदा हो गया और आप सवार होकर मुड़ा मैं उसके पीछे चलने लगा शहरके आदमीयोंने मेरा हाथ पकड़ा और कहा क्यों जान बूझकर मरता है अगर ऐसाही तेरा [illegible]में आया है तो बऊतेरी तरहें मरनेकी हैं हरचंद मैंने मिन्नत की और [illegible] किया लेकिन नछोड़ा और पकड़े ऊवे शहरमें लाये निहायत अफसोस ऊआ ॥

जब वुह महीनाभी गुजरा और सलखका दिनआया सब आदमी वहां जमा हुवे में सबसे अलग जंगलमें जो उसके चैन राह परथा छुपके बैठ रहा वुह शख्स उसी तरह आया और वुही हरकतें कर कर सवार हुआ और चला मैंने उसका पीछा किया और दौड़ता धूपता साथ हो लिया उसने आहटसे जाना कि कोई चला आताहै एक बार्गी बाग मोड़कर एक आवाज़ मारी और तलवार खींच कर मेरे सिरपर आ पहुंचा चाहताथा कि हमला करे मैंने निहायत अदबसे गिड़ कर सलाम किया और दोनों हाथ बांधकर खड़ा रह गया वुह बोला कि ये फ़क़ीर तू नाहक़ मारा गया होता पर बच गया तेरी हयात कुछ बाक़ी है जा कहां आताहै और जड़ाऊ खंजर मोतियोंका और आवेजा लगा हुआ मेरे तर्फ़ फेंका और कहा इस वक़्त मेरे पास कुछ मोजूद नहीं जो तुझेदूं इसको पादशाहके पास लेजा जो तू मांगेगा सो मिलेगा मुझे ऐसा डर हुआ कि नबोलनेकी कुदरत नचलनेकी ताक़त मुंहमें घिग्गी बंध गई पांव भारी होगये ॥

इतना कहकर वुह चिल्लाता हुआ चला मैंने दिलमें कहा अब जो हो सो हो इस वक़्तमें रह जाना अच्छा नहीं फिर ऐसा वक़्त नहीं मिलेगा अपनी जानसे हाथ धोकर चला फिर वोह फिरा और बड़े गुस्सेसे डांटा और मेरे क़तलका इरादा किया मैंने सिर झुका दिया और सौगंददी कि ऐसी एक तलवार मार कि साफ दो टुकड़े हो जाउं मैंने अपना खून माफ़ किया वुह बोला कि ऐ शैतानकी सूरत क्यों अपना खुन नाहक़ मेरी गरदनपर चढ़ाताहै जा अपनी राहले क्या जान् भारी पड़ीहै ॥

मैंने उसका कहा नमाना और क़दम आगे धरा फिर उसने कुछ नकहा और मैं पीछे लगलिया जाते २ एक चार दीवारी नजर आई वुह जवान् दरवाजेपर गया और चिल्लाया दरवाजा आपसे खुलगया वुह अंदर पैठा मैं बाहर खड़ा रहगया बारे एक दमके बाद गुलाम आया कि चल तुझे बुलायाहै मैं बेधड़क उसके साथ बागके अंदर गया ॥

आखिर एक मकानमें लेगया जहां वुह बैठाथा मैंने उसे देखकर फरांशी सलाम किया उसने बैठनेको कहा मैं अदबसे दुज़ानू बैठा क्या देखताहूं कि वुह एक मसन्दपर बैठाहै और हथियार सुनारीके आगे धरेहैं और एक झाड़ अमरूदका तय्यार कर चुका है

जब उसके उठनेका वक्त आया जितने गुलाम हाजिरथे सब को ठरियोंमें छिप गये मैंभी मारे डरके ऐक कोठरीमें जा घुसा वुह जवान् उठकर सब मकान्की कुंडियां चढ़ाकर बाग़के कोनेको तर्फ चला ओर अपनी सवारीके बैलको मारने लगा उसके चिल्लाने की आवाज मेरे कानमें आई कलेजा कांपने लगा डरते २ दरवाजा खोलकर ऐक गाछके तलेमें लगकर खडा ऊआ देखनेलगा जवानने वुह सोंटा जिससे मारताथा हाथसे डालदिया ओर मकानका कुफुल कुञ्जीसे खोला ओर अंदर गया फिर वोहीं बाहर निकलकर बैलकी पीठपर हाथ फेरा ओर मुंह चूमा ओर दाना घास खिलाकर इधरको चला मैं देखते ही जल्द दौड़कर फिर कोठरीमें जा छिपा ॥ उस जवान्ने जंजीरें सब दरवाजोंकी खोलदीं सारे गुलाम बाहर निकले जेर अंदाज सिलफची आफताबा लेकर हाजिर ऊवे वुह वजूकर कर निमाजकी खातिर खड़ा ऊआ जब निमाज़ अदाकर चुका पुकारा कि वुह दरवेश कहां है अपना नाम सुन्तेही मैं दौड़कर रूबरू जाखड़ा ऊआ फर्माया बैठ मैं सलाम करके बैठा खाना आया उसने खाया मुझेभी दिया मैंनेभी खाया जब दस्तरखान बढ़ाया ओर हाथ धोये गुलामोंको रुखसत दी कि जाकर सोरहो जब कोई उस मकानमें नरहा तब मुझे पूछने लगा कि ऐ अजीज़ तुझपर क्या ऐसी आफत आई है जो अपनी मौतको ढूंढता फिरताहै मैंने अपना अहवाल सिरसे पैरतक सब कह सुनाया उसनें यह सुन्तेही ऐक ठंडी सांस भरी ओर बेहोश ऊआ ओर कहने लगा बार खुदाया इश्कके दर्दसे तेरे सिवा कौन वाकिफहै जिसको नपटीहो पवाई क्या जाने पीर पराई इस दर्दकी कदर दर्द मन्दहो सो जाने ॥

॥ बैत ॥

आफ़तोंको इश्ककी आशकसे पूछा चाहिये ।
क्या खबर फासिककोहैं सादिकसे पूछा चाहिये ॥

बाद ऐक घड़ीके होशमें आकर ऐक आहमारी कि सारा मकान् गूंज गया तब मुझे यकीन ऊआ कि यहभी इसी इश्ककी बलामें गिरफतारहै ओर इसी मर्जका बीमारहै तब तो मैंने दिल चलाकर कहा कि मैंने अपना अहवाल सब अर्ज किया अब मिहरबानी फर्माकर अपने अहवालसे मुझे आगाह कीजिये तो बमकदूर पहले आपकेवास्ते तदबीर करूं अलकिस्सः वुह आशक अपना माजरा इस सूरतसे बयान करने लगा कि सुन ऐ

अजीज मैं पादशाहजादा इस मुल्क नीमरोजकाहूं बादशाह याने किबलेगाहने मेरे पैदा होनेके बाद नजूमी और रम्माल और पंडित जमा किये और फर्माया कि अहवाल शाहजादेके नसीबका देखो और जांचो और जन्म पत्री दुरस्त करो और जो२ कुछ होनाहै हकीकत पल२ घडी२ महीने२ और बर्स२की मुफस्सल बयान करो बमूजिब हुकुम बादशाहके सबने अपने२ इल्मके रूसे साधकर कहा कि खुदाके फज्लसे ऐसी नेकसाअत और शुभ लग्नमें शाहजादा पैदा हुआहै कि चाहिये सिकंदरकीसी बादशाहत करे और नौशेरवानसा आदिलहो और जितने इल्म और हुनरहैं उन्में कामिलहो सखावत और शुजाअतमें ऐसा नाम पैदाकरे कि हातम और रुस्तमको लोग भूलजावें लेकिन चौदह बर्स तलक सूरज और चांदके देखनेसे एक बड़ा खतरा नजर आताहै बल्कि यह वसवासहै कि जनूनी और सौदाई होकर बहुत आदमियोंका खूनकरे और बस्तीसे घबरावे जंगलमें निकल जावे और चरंद परंदसे दिल बहलावे इस्का ताकीद रहे कि रात दिन आफ्ताब और माहताबको नदेखे बल्कि असमानकी तर्फभी निगाह नकरे जो इतनी मुद्दत खैर आफियतसे कटे तो फिर सारी उमर सुख और चैनसे सल्तनत करे यह सुन कर बादशाहने इसी लिये इसबागको बिनाडाली और मकान हर एक नकशेके बनवाये मेरे तईं तहखानेमें पलनेका हुकुम किया मैं दाई दूध पिलाई और कई खवासोंके साथ इस मुहाफिजतसे उस मकान आलीशानमें परवरिश पाने लगा और एक उस्ताद काबिल वास्ते मेरी तरबियतके मुकर्रर किया तो तालीम हर इल्म ओ हुनरकी और मश्क हफ्त कलमके लिखनेकी करे और जहांपनाह हमेशः मेरी खबर लेते मैं उस मकानहीको आलम दुनियां जानकर खिलौनों और रंग बरंगके फूलोंसे खेलाकरता और तमाम जहानकी न्यामतें खानेकेवास्ते मौजूद रहतीं जो चाहता सो खाता दस बर्सकी उमर तक जितनी सनअतें और काबलियतेंथीं हासिलकीं ॥

एक रोज उस गुंबजके नीचे रौशनदानसे एक फूल अचंभेका नजर पड़ा कि देखते२ बड़ा होता जाताथा मैंने चाहाकि हाथसे पकड़लूं ज्यों२ मैं हाथ लंबा करताथा वुह ऊंचा होता जाताथा मैं हैरान होकर उसे तक रहाथा वोहीं एक आवाज कह कहेकी मेरे कानमें आई मैंने उस्के देखनेको गरदन उठाई देखातो कमदा चीरकर एक मुखड़ा चांदसा निकल रहाहै देखतेही उस्के मेरे होश बजा नरहे फिर अपने तईं संभालकर

देखा तो ऐक मुरस्सेका तख़्त परीज़ादोंके कांधेपर खड़ाहै ओर ऐक तख़्त नशीन् नाज़ जवाहिरका सिरपर ओर ख़िलअत भभाकेदार बदनमें पहने हाथमें याक़ूतका प्याला लिये ओर शराब पिये हुवे बेठीहै वह तख़्त बुलन्दीसे आहिस्तः२ नीचे उतरकर उस बुर्जमें आया तब परीने मुझे बुलाया ओर अपने नज़दीक बिठाया बातें प्यारकी करने लगी ओर मुंहसे मुंह लगाकर ऐक प्याला शराब गुलिगुलाबका मेरे तईं पिलाया ओर कहा आदमीज़ाद बेवफ़ाहोता है लेकिन दिल हमारा तुझे चाहता है ऐक दमसे ऐसी२ अन्दाज़ ओ नाज़की बातेंकीं कि दिलनहो होगया ओर ऐसी खुशी हासिल हुई कि जिन्दगानी कामआयाया ओर यह समझा कि आजतो दुनियामें आया ॥

हासिल यह है कि मैंतो क्या हूं जिसने यह आलम नदेखा होगा उस मज़ेमें ख़ातिर्जमासे हम दोनों बेठेथे कि चार परीज़ादने आसमान परसे उतर कर कुछ उस माशूक़के कानमें कहा सुनतेही उसका चिहरा बदलगया ओर मुझसे बोली कि ऐ प्यारे दिल तो यह चाहताथा कि कोई दम तेरे साथ बेठके दिल बहलाऊं ओर इसी तरह हमेश आउं या तुझे अपने साथ लेजाउं पर यह आसमान दो शख़सको ऐक जगह आरामसे ओर खुशीसे रहनें नहीं देता लेजानां तेरा खुदा निगहबान है ॥

यह सुनकर मेरे हवास जाते रहे ओर तोते हाथके उड़ गये मैंने कहा कि अजी अब फिर कब मुलाक़ात होगी यह क्या तुमने ग़ज़बकी बात सुनाई अगर जल्द आवोगी तो मुझे जीता पावोगी नहीं तो पछतावोगी या अपना ठिकाना ओर नाम निशान बताओ कि मेंही उस पतेपर ढूंढते२ अपने तईं तुम्हारे पास पहुंचाउं यह सुनकर बोली दूरपार शैतानके कानबहरे तुम्हारी ऐकसै बीस बर्सकी उमर होवे अगर जिन्दगीहै तो फिर मुलाक़ात हो रहेगी मैं जिनूनके बादशाहकी बेटी हूं ओर कोह क़ाफ़में रहतीहूं यह कहकर तख़्त उठाया ओर जिस तरह उतराथा वोहीं ऊंचाहोने लगा जबतलक सामनेथा मेरी ओर उसकी चार आंखें हो रहीथी जब नज़रोंसे ग़ायब हुवा यह हालत होगई जैसे परीका साया होताहै अजब तरहकी उदासी दिलपर छागई अक़्ल होश जाते रहे दुनिया आंखोंके तले अंधेरी होगई हैरान ओर परेशान ज़ार२ रोता ओर सिरपर ख़ाक उड़ाता कपड़े फाड़ता नखानेकी सुध नभलेबुरेकी बुध ॥

॥ बेत ॥

इस इश्ककी बदौलत क्या २ खराबियांहैं ॥

दिलमें उदासियांहैं और इजतराबियांहैं ॥

इस खराबीसे दाई और मुसाहिब खबरदार हुवे डरतेर बादशाहको हुजूरमें जाके अर्ज की कि पादशाहजादे आलमियांका यह हालहै मालूम नहीं कि खुदबखुद यह क्या गजब टूटा जोउनका आराम और खाना पीना सब छूटा तब पादशाह वजीर उमराओ साहब तदबीर औ हकीम कामिल और और जोतषी अपने साथ लेकर उस बागमें आये ॥

मेरी बेकरारी देखकर बहुत घबराये आंसू डबडबाकर गलेसे लगा लिया और उसकी तदबीरकी खातिर हुकुम किया हकीमोंने कूवतेदिल और खुश दिमागकेवास्ते नुसखे लिखे और मुल्लाओंने नकश तावीज पिलाने और पास रखनेको दिये दुआयें पढ़२ कर फूकने लगे और नजूमी बोले कि सितारोंकी गरदिशके सबब यह सूरत पेश आईहै उसका सदका दीजिये ।

गरज हर कोई अपने २ इलमकी बातें कहताथा पर मुझपर जो गुजरतीथी मेरा दिलही सहताथा किसूकी तदबीर मेरी तकदीर बदके काम नआई दिनबदिन दीवानगीका जोर हुआ और मेरा बदन बेदाने पानी कमजोरहो चला रातदिन चिल्लाना और सिरपटकानाही बाकी रहा उस हालतमे तीन बर्स गुजर गये चौथे बर्स एक सौदागर सेरसफर करता हुआ आया और हरएक मुल्कके तुहफेतहायफ अजीब गरीब जहांपनाहके हुजूरमें लाया मुलाजिमत हासिलकी पादशाहने पूछा कि तुमने बहुत मुल्क देखेहैं कहीं कोई हकीम कामिल नजर पड़ा या किसूसे सुना उसने कहा कि जहां पनाह गुलामने बहुत सैरकी लेकिन हिन्दोस्तानमें दरियाके बीच एक पहाड़ीहै वहां एक गुसाई जटाधारीने बड़ा मंडप महादेवका और संगत और बाग बड़ी बहारका बनायाहै उसमे रहताहै और उसका यह कायदाहै कि बर्सवें दिन शिवरात्रीके रोज अपने स्थानसे निकल कर दरियामें पैरताहै और खुशी करताहै अशनानके बाद जब अपने आसनपर जाने लगताहै तब बीमार दैसर और मुल्क मुल्कके जो दूर दूरसे आतेहैं दरवाजेपर जमा होतेहैं उनकी बड़ी भीड़ होतीहै ॥

वुह जिसे इस जमानेका अफलातून कहा चाहिये कारुरा और नब्ज देखता हुआ और हर एकको नुसखा लिखकर देता हुआ चला जाताहै खुदाने ऐसा दस्तशफा उसको दियाहै कि दवायोंतेही असर होताहै और वोह मर्ज बिलकुल जाता रहताहै यह माजरा मैंने अपनी आखों देखाहै अगर हुकुम हो तो शाहजादेको उस पास लेजावें उसको एक नजर दिखावें यकीनहै कि आरामहो और जाहिर मेंभी यह तदबीर अच्छी है कि हरएक मुल्ककी हवा पानीसे मिजाजमें खुशी होतीहै॥

पादशाहकोभी उसकी सलाह पसन्द आई और खुश होकर फर्माया बहुत अच्छा शायद उसका हाथ रास आवे और मेरे लड़केके दिलसे वहशत जावे एक अमीर मातबर और उस सौदागरको मेरे साथ तैनात किया और सब असबाब साथ कर दिया निवाड़े बजरे मोरपंखी पलवार लचके खलने उलाक पटेलियोंपर मैं सरंजाम सवार कर कर रुखसत किया मंजिल२ चलते२ उस ठिकानेपर आ पहुंचे नई हवा और नया दाना पानी खाने पीनेसे कुछ मिजाज ठहरा लेकिन् दम बदम याद उस परीकी दिलसे भूलती नथी अगर कभू बोलता तो यह बैत पढ़ता॥

नजानूं किस परीरू की नजर हुई॥

अभी तोथा भला चंगा मिरा दिल्॥

बारे जब दो तीन महीने गुजरे उस पहाड़पर चार पांच हजार बीमार जमा हुवे लेकिन सब यही कहतेथे कि अब ईश्वर चाहे तो गुसाईं अपने मठसे निकलेंगे और सभोंको आराम होगा॥

अल किस्सा जिस दिन वुह दिन आया सुबहको जोगी सूरजकी तरह निकल आया और दरियामें नहाया और पैरा पार जाकर फिर आया और भभूत भस्म तमाम बदनमें लगाया वुह गोरा बदन मानन्द अंगारेके राखमें छिपाया और माथेपर मलागीरका टीका दिया लंगोट बांधकर अंगोछा कांधेपर डाला बालोंका जूड़ा बांधा मूछोंपर ताव देकर चढ़उवां जूता रड़िआया उसके चिहरेसे यह मालूम होताथा कि सारी दुनिया उसके नजदीक कुछ कदर नहीं रखती एक कलमदान जड़ाउ बगलमें लेकर एकएककी तर्फ देखता और नुसखादेता हुआ मेरे नजदीक आपहुंचा जब मेरी और उसकी चार नजरें हुई खड़ा रह गया और मुझसे कहने लगा हमारे साथ आओ मैं हमराह होलिया॥

जब सबको नैाबत हो चुकी मेरे तईं बागके अंदर लेगया श्रोर एक अच्छे नकशेके मकानमें मुझे फर्माया कि यहां तुम रहो श्रोर आप अपने स्थानमें गया जब एक चिल्ला गुजरा तो मेरे पास आया श्रोर आगेसे मुझे खुश पाया तब मुसकरा कर फर्माया कि इस बगीचेमें सैर किया करो जिस मेवे पर जी चले खाया करो श्रोर एक कुप्पी चीनी की माजून भरी हुई दी कि इसमेंसे छः माशे निहारमुंह नोशजां फर्माया करो वुह तो चलागया श्रोर मैंने उसके कहने पर अमल किया हर रोज कूवत बदनमें श्रोर फरहत दिलको मालूम होने लगी लेकिन हजरते इशकको कुछ असर नकिया उस परी की सूरत नजरोंके आगे फिरतीथी ॥

एक रोज ताकमें एक जिल्द किताबकी नजर आई उतार कर देखा तो सारे इलम दीन दुनियाके उसमें जमा कियेहे गोया दरियाको कूजेमें भरदियाथा हर घड़ी उसको पढ़ाकरता इलम हिकमत श्रोर तसखीरमें निहायत कूवत हासिलकी इस अरसेमें बर्स दिन गुजर गया फिर वुही खुशीका दिन आया जोगी अपने आसन परसे उठ कर बाहर निकला मैंने सलाम किया उसने कलमदान मुझे देकर कहा साथ चलो मैंभी साथ होलिया जब दरवाजेसे बाहर निकला एक आलम दुआ देने लगा वुह अमीर श्रोर सौदागर मुझे साथ देखकर गुसाईंके कदम पर गिरे श्रोर कहने लगे कि आपकी मिहर बानीसे बारे इतना तो हुआ वुह अपनी आदत पर दरियाके घाटतक गया श्रोर अश्नान पूजा जिस तरह हर साल करताथा किया श्रोर फिरती बार बीमारोंको देखता भालता चला आताथा ॥

इतनेमें सौदाईयोंके गोलमें एक जवान खुबसूरत शकील कि कमजोरीसे खड़े होने की ताकत उसमें नथी नजर पड़ा मुझको कहा कि उसको साथ कर लेआओ सबकी दवा करके जब खिलवत खानेमें गया थोड़ीसी खोपड़ी उस जवानकी तराशकर चाहा कि कनखजूरा जो मगज पर बैठाथा जंबूरसे उठा लेवे मेरे खयालमें गुजरा श्रोर बोल उठा कि अगर चुमटा आगमें गर्म कर२ उसकी पीठ पर रखिये तो खूबहै आपसे आप निकल आवेगा श्रोर जो यों खेंचयेगा तो मगजको नछोड़ेगा फिर खोफ जिन्दगीकोहै यह सुनकर मेरी तरफ देखा श्रोर चुपका उठ बागके कोनेमें एक दरख्त् कोलेमें पकड़ जटाकी लटकी गलेमें फांसी लगाकर रहगया मैंने पास जाकर जो देखा तो वाह वाह यहतो मर

गया यह अचंभा देखकर निहायत अफसोस हुआ लाचार जीमें आया गाड़ूं जो दरख़्तसे जुदा करने लगा दो कुञ्जियां उसकी जटोंमेंसे गिर पड़ीं मैंने उनको उठा लिया और उस गंजखूबीको जमीनमें गाड़ दिया वे दोनो कुञ्जियां लेकर सब तालोंमें लगाने लगा इतनेमें दो कोठरियोंके ताले उन तालियोंसे खुले देखा तो जमीनसे छत तलक जवाहिर भराहै और एक पेटी मखमलसे मढ़ी सोनेके पततरलगे ताले दि हुई एक तरफ धरीहै उसको जो खोला तो एक किताब देखी कि उसमें इसम आजम और हाजिर करना जिन औ परीका और जीसे जीवकी मुलाकात और तसखीर आफताबकी तरकीब लिखीहै॥

ऐसी दौलतके हाथ लगनेसे बहुत खुशी हासिल हुई और उनपर अमल करना शुरू किया दरवाजा बागका खोल दिया अपने उस अमीरको और साथवालोंको कहा कि नाव मंगवाकर यह सब जवाहिर औ नकद औ जिनस और किताबें भराई करलो और एक निवाड़े पर आप सवार होकर वहांसे बहरको रवाना किया आतेर जब नजदीक अपने मुलकके पहुंचा जहांपनाहको खबर हुई सवार होकर इसतकबाल किया और इश्तियाकसे बेकरार होकर कलेजेसे लगालिया मैंने कदम बोसी कर कर कहा कि इस खाकसारको कदीम बागमें रहनेका हुकमहो बोले कि ऐ लड़के वुह मकान मेरे नजदीक मनहूस ठैरा इसवास्ते उसकी मरम्मत और तैयारी मौकूफ की अब वुह मकान लायक इनसानके रहनेके नहीं रहा औ जिस महलमें जीचाहे उतरो बिहतर योंहै कि किलेमें कोई जगह पसन्द करके मेरी आंखोंके रूबरू रहो और पाईंबाग जैसा चाहो तयार करवा सैर तमाशा देखा करो मैंने बहुत जिद और हट कर कर उस बागको नये सिरसे बनवाया और बिहश्तकी मानिन्द आरास्ताकर दाखिल हुआ फिर फरागतसे जिनोंकी बस करनेके खातिर चिल्ले बैठा और तंकहेवानात कर कर हाजिरात करने लगा जब चालीस दिन पूरे हुवे तब आधी रातको एक ऐसी आंधी आई की बड़ी बड़ी इमारतें गिर पड़ीं और दरख़्त जड़पेड़से उखड़ कर कहींसे कहीं जापड़े और परीजादोंका लशकर नमूद हुआ एक तखत हवासे उतरा उसपर एक शख़्स शानदार मोतियोंका ताज और खिलत पहने हुवे बैठाथा मैंने देखतेही बहुत अदबसे सलाम किया उसने मेरा सलाम लिया और कहा ऐ अजीज़ यह क्या तूने नाहक़ दुन्द मचाया हमसे

तुझे क्या मुहुआहै मैंने अरज़की कि यह आजिज़ बहुत मुद्दतसे तुम्हारी बेटी पर आशक़है और इसी लिये कहांसे कहां ख़राब हुआ और जीतेजी मुवा अब ज़िन्दगीसे बतंग आयाहूं और अपनी जानपर खेलताहूं जो यह काम कियाहै अब आपकी ज़ातसे उम्मैदवारहूं कि मुझ हैरान सरगरदानको अपनी तवज्जुहसे सरफ़राज़ करो और उसके दीदारसे ज़िन्दगी और आराम बख़्शो तो बड़ा सवाब होगा यह मेरी आरज़ू सुन कर बोला कि आदमी ख़ाकी और हम आतशी इन दोनोंमें मुवाफ़िक़त आनी मुश्किल है मैंने क़सम खाई कि मैं उनके देखनेका मुश्ताक़हूं और कुछ मतलब नहीं फिर उस तख़्त निशींने जवाब दिया कि इनसान अपने क़ौल क़रारपर नहीं रहता ग़रज़के वक्त सब कुछ कहताहै लेकिन याद नहीं रखता यह बात मैं तेरे भलेके लिये कह सुनाताहूं कि अगर तूने कभू क़स्द कुछ और किया तो वुहभी और तूभी ख़राबख़स्ता होगे बल्कि ख़ौफ़ जानकाहै मैंने फिर दुबारा सौगन्द याद की कि जिसमें तरफ़ैनकी बुराई होवे वैसा काम हरगिज़ नकरूंगा मगर एक नज़र देखता रहूंगा ये बातें होतीथीं कि अनचित वुह परी कि जिसका मज़कूरथा निहायत ठस्सेसे बनाव किये हुवे आपहुंची और पादशाहका तख़्त वहांसे चला गया तब मैंने बेइख़्तियार उस परीको जानकी तरह बग़लमें लेलिया औ यह शेर पढ़ा ॥

कभी अबस मिरे घर क्यों नआवे ।
कि जिसके वास्ते खेंचेहैं चिल्ले ॥

उसी ख़ुशीके आलममें बाहम उस बाग़में रहने लगे मारे डरके कुछ और ख़याल न करता बालाई मज़े लेता और फ़क़त् देखा करता वुह परी मेरे क़ौल क़रारके निभानेपर दिलमें हैरान रहती और बाज़े वक़्त कहती कि पियारे तुमभी अपनी बातके बड़े सचे हो लेकिन एक नसीहतमें दोस्तीके राहसे करतीहूं अपनी किताबसे ख़बरदार रहीयो कि जिन किसी नकिसी दिन तुम्हें ग़ाफ़िल पाकर चुरा लेजांयगे मैंने कहा इसे मैं अपनी जानके बराबर रखताहूं ॥

इत्तफ़ाक़न एक रोज़ रातको शैतानने वरग़लाना शहवतकी हालतमें यह दिलमें आया कि जो कुछ होसोहो कहांतलक अपने तईं थांबूं उसे छातीसे लगालिया और क़स्द

जिसाको लिया वेंहीं ऐक आवाज़ आई यह किताब मुझको दे कि उसमें इसमे आज़म है बेअदबी मकर उस मलीके आगममें होश नरहा किताब बग़लसे निकाल कर बगैर जाने पहचाने हवाले करदी और अपने काममें लगा वुह नाज़नीं यह मेरी नादानीकी हरकत देखकर बोली कि हे ज़ालिम आखिर चूका और नसीहत भूला यह कहकर बेहोश होगई और उसके सिरहाने ऐक देव देखा कि किताब लिये खड़ा है चाहा कि पकड़कर खूब मारूं और किताब छीनलूं इतनेमें उसके हाथसे किताब दूसरा लेभागा ॥

मैंने जो अफसूं याद किये थे पढने शुरू किये वुह जिन जो खड़ाथा बैल बन गया लेकिन अफसोस कि परी ज़राभी होशमें नआई और वुही हालत बेखुदीकी रही तब मेरा दिल घबराया सारा ऐश तलख़ होगया ॥

उस रोज़से आदमियोंसे नफ़रत हुई इस बागके गोशेमें पड़ा रहताहूं और दिलके बहलानेकी खातिर यह मरतबान ज़मुर्रदका झाड़दार बनाया करताहूं और हर महीने उस मैदानमें उसी बैलपर सवार होकर जाया करताहूं मरतबानको तोड़कर गुलामको मार डालताहूं इस उम्मेदपर कि सब मेरी यह हालत देखें और अफसोस खावें शायद कोई ऐसा खुदाका बन्दा मिहरबान होकर मेरे हक़में दुआ करे तो मैंभी अपने मतलबको पहुंचूं ऐ रफ़ीक़ मेरे जनून और सौदेकी यह हक़ीक़त है जो मैंने तुझे कह सुनाई ॥

मैं सुनकर आबदीदः हुआ और बोला कि ऐ शाहज़ादे तूने वाक़ई इश्क़की बड़ी मेहनत उठाई लेकिन क़सम खुदाकी खाताहूं कि मैं अपने मतलबसे दर गुज़रा अब तेरी खातिर जंगल पहाड़में फिरूंगा और जो मुझसे होसकेगा सो करूंगा यह वादा कर कर मैं उस जवानसे रुखसत हुआ और पांच बरस तक सौदाईसा वीरानेमें खाक छानता फिरा सुराग़ नमिला ॥

आखिर उकताकर ऐक पहाड़ पर चढ़ गया और चाहा कि अपने तईं गिरादूं कि हड्डी पसली कुछ साबित नरहे वुही सवार बुरका पोश आपहुंचा और बोला कि अपनी जान मतखो थोड़े दिनोंके बाद तू अपने मक़सदसे काम याब होगा यासाईं अल्लाह तुम्हारे दीदार तो मयस्सर हुवे अब खुदाके फ़ज़लसे उम्मेदवारहूं कि खुशी और खुर्रमी हासिल हो और सब नामुराद अपनी मुराद को पहुंचें ॥

अब दूसरा दरवेशभी अपनी सैरका क़िस्सा कह चुका रात आख़िर होगई और वक़्त सुबहका शुरू होने पर आया बादशाह आज़ादबख़्त चुपका अपने दौलत ख़ानेकी तरफ़ रवाना हुआ महलमें पहुंच कर निमाज़ अदाकी फिर गुसलख़ानेमें जा ख़िलतफ़ाख़िरः पहनकर दीवान आममें तख़्त पर निकल बैठा और हुकुम किया कि यसावल जावे चार फ़क़ीर फ़लाने मकान पर वारिदहैं उनको बइज़्ज़त अपने साथ हुज़ूरमें लेआवे॥

बमौजिब हुकुमके चोबदार वहां गया देखा तो चारों बेनवा झाड़ा झटका फिर हाथ मुंह धोकर चाहतेहैं कि दिसा करें और अपनी२ राहलें चोबेने कहा शाहजी बादशाहने चारों मूरतोंको तलब फ़रमायाहै मेरे साथ चलिये चारों दरवेश आपुसमें एक एकको तकने लगे और चोबदारसे कहा बाबा हम अपने दिलके बादशाहहैं हमें दुनियांके बादशाहसे क्या कामहै उसने कहा मियां अल्लाह मुज़ायक़ा नहीं अगर चलो तो अच्छाहै इतनेमें चारों क़लन्दरोंको याद आया कि मौला मुरतज़ाने जो फ़रमायाथा सो अब पेश आया ख़ुश हुबे और इसावलके हमराह चले जब क़िलेमें पहुंचे और रूबरू पादशाहके गये चारों क़लन्दरोंने दुआदी कि बाबा तेरा भला हो पादशाह दीवान ख़ासमें जाबैठे और दो चार ख़ास अमीरोंको बुलाया और फ़रमाया कि चारों गुदड़ी पोशोंको बुलाओ जब वहां गये हुकुम बैठनेका किया अहवाल पुरसी फ़रमाई कि तुम्हारा कहांस आना हुआ और कहांका इरादाहै मकान मुरशिदोंका कहांहै उन्होंने कहा कि बादशाहकी उमर ज़ियादा हम फ़क़ीरहैं एक मुद्दतसे इस तरह सैर और सफ़र करते फिरतेहैं ख़ानः बदोशहैं बुह मसलहै कि फ़क़ीरको जहां शाम हुई वहीं घरहै और जो कुछ इस दुनियाके नापायदारमें देखाहै कहांतक बयान करें॥

आज़ादबख़्तने बहुत तसल्ली और तशफ़्फ़ीकी और खानेको मंगवाकर रूबरू नाशता करवाया जब फ़राग़त हुई फिर फ़रमाया की अपना माजरा तमाम मुझसे कहो जो मुझसे होसकेगा क़सूर नकरूंगा॥

फ़क़ीरोंने जवाब दिया कि हमपर जो बीतीहै न हमें बयान करनेकी ताक़तहै और नपादशाहको सुनेसे फ़रहत होगी उसको मुआफ़ कीजिये तब पादशाहने तबस्सुम किया और कहा शबको तुम जहां बिसतरोंपर बैठे अपना२ अहवाल कह रहेथे वहां मैंभी मौजूदथा चुनाचे दोदरवेशका अहवाल सुन चुकाहूं अब चाहताहूं कि दोनो जो बाक़ीहैं

वेभी कहें और चन्दरोज़ खातिरजमेसे मेरे पास रहें कि कदम दरवेशों रहे बजाहे पादशाहसे यह बात सुन्तेही मारे खौफके कांपने लगे और सिर नीचे करके चुपहो रहे ताक़त गोयाईकी नरही ॥

आज़ादबख़्तने जब देखा कि अब इनमें मारे रुआबके हवास नहीं रहे जो कुछ बोलें फ़ुरमाया कि इस जहानमें कोई शख़्स ऐसा नहोगा जिसपर एक नएक वारदात अजीब और ग़रीब नहुई होगी बावजूदे कि मैं पादशाहहूं लेकिन मैंनेभी ऐसा तमाशा देखाहै कि पहले मैंही उसका बयान करताहूं तुम खातिरजमेसे सुनो दरवेशोंने कहा पादशाह सलामत आपका अलताफ़ फ़कीरोंके हाल पर ऐसाहीहै इरशाद फ़ुरमाइये आज़ादबख़्तने अपना अहवाल शुरू किया और कहा ॥

ऐ शाहो बादशाहका अब माजरा सुनो ।
जो कुछ कि मैंने देखाहै और मैं सुना सुनो ॥
कहताहूं मैं फ़कीरोंकी खिदमतमें सरबसर ।
अहवाल मेरा खूब तरह दिल लगा सुनो ॥

मेरे किबलेगाहने जब वफ़ात पाई और मैं इस तख़्त पर बैठा ऐन आलम शबाबकाथा और सारा यह मुल्क रूम मेरे हुकुममेंथा अकस्मात एक साल कोई सौदागर बदख़्शांके मुल्कसे आया और असबाब तिजारतका बहुतसा लाया ख़बरदारोंने मेरे हजूरमें ख़बर की कि ऐसा बड़ा ताजिर आजतक शहरमें नहीं आया मैंने उसको तलब फ़ुरमाया वुह तुहफ़े हर एक मुलकके लायक मेरे नज़रके लेकर आया हक़ीक़तमें हर एक चीज बेबहा नज़र आई चुनांचे डिबयामें एक लालथा निहायत खुश रंग और आबदार कद और क़ामतमें दुरुस्त और वज़नमें पांचमिसक़ालका मैंने बावजूद सलतनतके ऐसा जवाहिर कभू नदेखाथा और नकिसूसे सुनाथा पसन्द किया सौदागरको बहुतसा इंनआम और इकराम दिया और सनद राह दारी लिखदी कि उसे हमारी तमाम कलमरौमें कोई मुज़ाहिम महसूलका नहो और जहां जावे उसको आरामसे रखें चौकी पहरेमें हाज़िर रहें उसका नुकसान अपना नुकसान समझें वुह ताजिर हजूरमें दरबारके वक्त हाज़िर रहता और आदाबे सलतनतसे खूब वाक़िफ़था और तक़रीर भी खुशगोई उसकी लायक सुन्नेकेथी और मैं उस लालको हररोज़ जवाहिर खानेसे मंगवाकर सारे दरबार देखा करता ॥

ऐक रोज दिवाने आम किये बैठाथा और उमराओ हरकाने दौलत अपने अपने पाये परखड़ेथे और हर मुल्कके बादशाहोंके ऐलची मुबारक बादीकी खातिर जो आयेथे वुहभी सब हाजिरथे उस वक्त मेंने मुवाफिक मामूलके उस लालको मंगवाया जवाहिर खानकादारोगः लेकर आया मैं हाथमें लेकर तारीफ करने लगा और फरंगके ऐलचीको दिया॥

उसे देखकर तबस्सुम किया और जमानःसाजीसे तारीफ की उसी तरह हाथों हाथहर ऐकने लिया और देखा और एक जुबान होकर बोले कि किब्ले आलमके यकबालके बाइस यह मुयसर हुआहै वुहसानः किसू बादशाहके हाथ आजतक ऐसा रतन बेबहा नहीं लगा उस वक्त मेरे किबल गाहका वजीर कि मरद दानाथा और उसी खिदमतपर सरफराज़था वज़ारतकी चौकीपर खड़ाथा आदाब बजा लाया और इलतिमास किया कि कुछ अर्ज किया चाहताहूं अगर जांबख्शीहो॥

मैंने हुकुम किया कि कह वुह बोला किबलः आलम् आप बादशाहहैं और बादशाहों से बईदहै कि एक पत्थरकी इतनी तारीफ करें अगरचि रंग ढंग संगमें लासानीहै लेकिन संगहै और इसदम सब मुल्कोंके ऐलची दरबारमें हाजिरहैं जब अपने २ शहरमें जावेंगे अलबतः यह नकल करेंगे कि अजब बादशाहहै कि ऐक लाल कहींसे पायाहै उसे ऐसा तोहफा बनायाहै कि हररोज रूबरू मंगाताहै और आप उसकी तारीफ कर२ सबको दिखाताहै पस जो बादशाह या राजा यह अहवाल सुनेगा अपनी मजलिसमें हंसेगा खुदावन्द ऐक अदना सौदागर नैशापूरमेंहै उसने बारह दाने लालके कि हर ऐक सातसात मिस्कालकाहै पट्टेमें नसब करकर कुत्तेके गलेमें डाल दियेहैं मुझे सुनतेही गुस्सा चढ़आया और खिसयाने होकर फरमाया कि इस वज़ीरकी गरदन मारो जल्लादोंने वोहीं उसका हाथ पकड़ लिया और चाहाकि बाहर लेजावें फरंगके बादशाहका ऐलची दस्तबस्तः रूबरू आखड़ाहुआ मैंने पूछा कि तेरा क्या मतलबहै उसने अर्जकी उम्मेदवारहूं कि तकसीरसे वजीरको वाकिफहूं मैंने फरमाया कि झूठ बोलनेसे और बड़ा गुनाह कौनसाहै खसूसन बादशाहोंके रूबरू उसे कहा उसका दरोग साबित नहीं हुआ शायद जो कुछ कि अर्जकीहै सचहो अभी बेगुनाहका कतल दुरुस्त नहीं मैंने उसका यह

जवाब दिया कि हरगिज अकलमें नहीं आता एक ताजिर कि नफाके वास्ते शहर बशहर और मुल्कबमुल्क खराब होता फिरताहै और कौड़ी कौड़ी जमा करताहै बारह दाने लालके ओवजनमें सात २ मिस्कालकेहों कुत्तेके पट्टे लगावे उसने कहा खुदाकी कुदरतसे तअज्जुब नहीं शायद कि बाशद ऐसे तोहफे अकसर सौदागरों और फकीरोंके हाथ आतेहैं इस वास्ते किये दोनों हरएक मुल्कमें जातेहैं और जहांसे जो कुछ पातेहैं लेआतेहैं सलाह दौलत यहहै कि अगर वजीर ऐसाही तकसीरवारहै तो हुकुम कैदकाहो इसलिये कि वजीर बादशाहोंकी अकल होतेहैं और यह हरकत सबों लोगोंसे बदनुमाहै कि ऐसी बातपर कि झूठ सच इसका अभी साबित नहीं हुआ हुकुम कतलका फरमायें और उसकी तमाम उमरकी खिदमत और नमकहलाली भूलजायें ॥

बादशाह सलामत अगले शहरयारोंने बन्दीखाने इसी सबब ईजाद किया है कि बादशाह या सरदार अगर किसूपर गजब हों तो उसे कैद करें कई दिनमें गुसःजाता रहेगा और बेतकसीरी उसकी जाहिर होगी बादशाह खून नाहकसे महफूजरहेंगे कलको रोज कयामतमें माखूज नहोंगे ॥

मैंने जितना उसे काइल करनेको चाहा उसने ऐसी माकूल गुफतगूकी कि मुझे ला जवाब किया तब मैंने कहा कि खैर तेरा कहना पजीरा हुआ मैं खूनसे उसके दरगुजरा लेकिन जिन्दानमें मुकइयद रहेगा अगर एक सालके अरसेमें उसका सुखन रास्त हुआ कि ऐसे लाल कुत्तेके गलेमेंहैं तो उसकी नजात होगी और नहीं तो बड़े अजाबसे मारा जावेगा फरमाया कि वजीरको पहड़तखानेमें लेजाओ यह हुकुम सुनकर अलचीने जमीन खिदमतकी चूमी और तसलीमातकी जब यह खबर वजीरके घरमें गई आह वावैला मचा और मातम सरा होगया उस वजीरकी एक बेटीथी बरस चौदह पन्दरह की निहायत खूबसूरत और काबिल निविश्तखान्दमें दुरस्त वजीर उसको निपट प्यारकर ताथा और अजीज रखताथा चिनाचः अपने दीवानखानेके पिछवाड़े एक रंगमहल उसकी खातिर बनवा दियाथा और लड़कियां उमदोंकी उसकी मुसाहिबतमें और खवासें शकीस खिदमतमें रहतीं उनसे हंसी खुशी खेला कूदा करती ॥

इत्तिफाकन जिसदिन वजीरको महबूस खानेमें भेजा वुह लड़की अपनी हमजोलियों

में बैठोथी और खुशीसे गुड़ियाका ब्याह रचायाथा और ढोलक पखावज लिये ऊवे रत जगेको तइयारी कर रखीथी और कड़ाही चढ़ाकर गुलगुले और पकोड़ियां तलती और बनारहीयी कि एकबारगो उसको मारोती पोटती सिरखुले पांवनंगे बेटीके घरमें गई और दुहत्तड़ उस लड़कीके सिरपर मारी और कहने लगी काश कि तेरे बदले खुदा अन्धा बटा देता तो मेरा कलेजा ठण्ढा होता और बापका रफीक होता वज़ीरज़ादीने पूछा अन्धा बेटा तुम्हारे किसकाम आता जो कुछ बेटा करता मैंभी करसक्तीहूं माने जवाब दिया खाक तेरे सिरपर बापपर यह बिपताबोतीहै कि बादशाहके रूबरू कुछ ऐसी बात कही कि बन्दीखानेमें कैद ऊआ उसने पूछा वुह क्या बातथी ज़रामैंभी सुनूं तब वज़ीरके कबीलेने कहा कि तेरे बापने शायद यह कहा है कि नैशापूरमें कोई सोदागरहै उसने बारह अदद लाल बेबहा कुत्तेके पट्टेमें टांकेहैं बादशाहको बावर न ऊआ उसने झूठा समझा और असीर किया अगर आजके दिन बेटा होता तो हरतरहसे कोशिश कर कर इस बातको तहकीक करता और अपने बापका उमाला करता और बादशाहसे अर्ज़ मारूज करके मरेखावन्दको यखुत खानेसे मखलसी दिला वाता वज़ीर ज़ादी बोली अम्माजान तकदीरसे लड़ा नहीं जाता चाहिये इनसान बलाय ना गहानीमें सबर करे और उम्मैदवार फज़ल इलाहीका रहे वुह करीमहै मुशकिल किसूकी अटकी नहीं रखता और रोना धोना खूब नहीं मबादा दुशमन और तरहसे बादशाहके पास लगावें और लुतरे चुगली खावें कि बाइस जियादा खफगीका हो बल्कि जहां पनाहके हकमें दुआ करो हम उसके खानेज़ाद हैं वुह हमारा खुदावन्द है वुही गज़ब ऊआ है वुही मिहर बान होगा उस लड़कीने अक्लमन्दोसे ऐसी ऐसी तरह माको समझाया किकुछ उसे सबरओ करार आया तब वे अपने महलमें गई और चुपकी हो रही जब रात ऊई वज़ीर ज़ादीने दायाको बुलाया उसके हाथ पांव पड़ी बऊतसी मिन्नतकी और रोने लगी और कहा मैं यह इरादा रखतीहूं कि अम्माजानका ताना मुझ पर न रहे और मेरा बाप मखलसी पावे जो तू मेरा रफीक हो तो मैं नैशा पूर को चलूं और उस ताजिरको जिसके कुत्तेके गलेमें ऐसे लालहैं देखकर जो बन आवे कर आऊं और अपने बापको छुड़ाऊं पहले तो उस मर्दने इनकार किया आखिर बऊत कहने सुनेसे राजी ऊआ तब वज़ीर ज़ादीने फरमाया चुपके चुपके असबाब

सफरका दुरुस्त कर और जिनस तिजारतकी लायक नजर बादशाहोंके खरदी कर और गुलाम नोकर चाकर जिन्ने जरूर हों साथले लेकिन यह बात किसू पर नखुले दावाने कबूल किया और उसकी तइयारी में लगा जब सबअसबाब तइयार किया ऊंटों और खच्चरोंपर बार कर कर रवाना हुआ और वजीरजादीभी लिबास मर्दाना पहनकर साथ जानिकली हरगिज किसूको घरमें खबर नहुई जब सुबह हुई वजीरके महलमें चरचा हुआ कि वजीरजादी गैबहै मालूम नहीं क्या हुई ॥

आखिर बदनामीके डरसे माने बेटीका गुम्होना छुपाया और वहां वजीरजादीने अपना नाम सौदागर बचा रखा मंजिल बमंजिल चलते२ नैशापूरमें पहुंची खुशी खुशी कारवांसरायमें जा उतरी और सब अपना असबाब उतारा रातको रही फजरको हम्माममें गई और पोशाक पाकीजा जैसे रूमके बाशन्दे पहन्तेहैं पहनी और शहरकी सैरके वास्ते निकली आते२ जब चौकमें पहुंची चोराहेपर खड़ी हुई एक तरफ दुकान जोहरीकी नजर पड़ी कि बहुत जवाहिरका ढेर लग रहा है और गुलाम खिजास फाखिरः पहने हुवे दस्तबस्तः खड़ेहैं और एक शखस जो सरदार है बरस पचास एककी उसकी उमरहै तालेमन्दोंकीसी खिलअत और नीमः आस्तीन् पहने हुवे और कई मुसाहब बावजूअः नजदीक उसके कुरसियोंपर बैठेहैं और आपुसमें बातेंकर रहेहैं ॥

वुह वजीरजादी जिसने अपने तईं सौदागर बचः करमशहूर कियाथा उसे देखकर मुतअज्जिब हुई और दिलमें समझकर खुशी हुई कि खुदा झूठ नकरे जिस सौदागर का मेर बापने बादशाहसे मजकूर कियाहै अगलबहै कि यहीहो बारेखुदाया इसका अहवाल मुझपर जाहिरकर ॥

इत्तिफाकन् जो देखा तो एक दुकानहै उसमें दोपिंजड़े आहनी लटकतेहैं और उन दोनोंमें दो आदमी कैदहैं उनकी मजनूं कीसी सूरत् होरहीहै कि चरम और हड्डी बाकीहै और सिरके बाल और नाखून बढ़गयेहैं सिरझोंधाये बैठेहैं और दो हबशी बदहै तमञ्जह दोनों तरफ खड़ेहैं सौदागर बचेको अचम्भा आया लाहौल पढ़कर दूसरी तरफ जो देखा तो एक दुकानमें कालीचे बिछेहैं उनपर एक चौकी हाथीदान्तकी उसपर गदेला मखमलका पड़ा हुआ एक कुत्ता जवाहिरका पट्टा गलेमें और सोनेकी

जंजीरसे बन्धा हुआ बैठाहै और दो गुलाम अमरद खूबसूरत उसकी खिदमत कर रहेहैं एक तो मोरछल जड़ाऊ दस्तेका लिये झलताहै और दूसरा रोमाल तारकशीका हाथमें लेकर मुंह और पांव उसके पोंछ रहाहै सौदागर बच्चेने खूब गौर कर कर जो देखा तो पट्टेमें कुत्तेके बारहोंदाने लालके जैसे सुनेथे मौजूदहैं शुकर खुदाका किया और फिकिरमें गया कि किस सूरतसे इन लालोंको बादशाह पास लेजाऊं और दिखाकर अपने बापको छुड़ाऊं यह तो इस हैरानीमेंथा और तमाम खलकत चोक और दस्तेकी उसका हुसन जमाल देखकर हैरानथी और हक्का बक्का होरहीथी सब आदमी आपसमें यह चर्चा करतेथे कि आजतलक इस सूरत शकलोहका इनसान नज़र नहीं आया उस ख्वाजेनेभी देखा एक गुलामको भेजा कि तू जाकर बमिन्नत उस सौदागर बच्चेको मेरे पास बुला ला वुह गुलाम आया और ख्वाजेका पयाम लाया कि अगर मेहरबानी फरमाइये तो हमाराखुदावन्द साहबका मुश्ताकहै चलकर मुलाकात कीजिये सौदागर बच्चा तो यह चाहताही था बोला क्या मुज़ायका जोंहीं ख्वाजाके नजदीक आया और उस पर ख्वाजाकी नज़र पड़ी एक बरछी इश्ककी सीनेमें गड़ी ताज़ीमकी खातिर सर्वकद उठा लेकिन हवासबाख्तः सौदागर बच्चेने दरियाफ्त किया कि अब यह दाममें आया आपसमें बगलगीर हुये ख्वाजेने सौदागर बच्चेको पेशानीको बोसा दिया और अपने बराबर बिठाया बहुतसा खुशामद करके पूछा कि अपने नाम नसबसे मुझे आगाह करो कहांसे आना हुआ और कहांका इरादाहै सौदागर बच्चा बोला कि इस कमतरीनका वतन रूमहै और कदीमसे इस्तम्बोल ज़ादबूमहै मेरे किबलःगाही सौदागर हैं अबब सबब पीरीके ताकत सैर सफरकी नहीं रही इसवास्ते मुझे रुखसत कियाहै कि कारबार तिजारतका सीखूं आजतलक मैंने कदम घरसे बाहर निकालाथा यह पहलाही सफर दरपेश हुवा दरयाकी राह हिवाउ नपड़ा खुश्कीकी तरफसे कसद किया लेकिन इस अजमके मुल्कमें आपके अखलाक और खूबियोंका जो शोरहै महज़ साहबकी मुलाकातकी आरज़ूमें यहांतक आयाहूं बारे फज़ल इलाहीसे खिदमत शरीफमें मुशरफ हुआ और उससे ज़ियादः पाया तमन्ना दिलकी बरआई खुदा सलामत रखे अब यहांसे कूच करूंगा यह सुन्तेही ख्वाजाके अवसान होश जाते रहे बोला कि ऐ फ़र्ज़न्द

ऐसी बात मुझे न सुना कोई दिन गरीबखानेमें करम फरमा भला यह तो बताओ कि तुम्हारा असबाब और नौकर चाकर कहांहैं सौदागर बचेने कहा कि मुसाफिरका घर सराहै उहे वहां छोड़कर मैं आपके पास आयाहूं खाजेने कहा कि भठियारखानेमें रहना मुनासिब नहीं मेरा इस शहरमें ऐतबार है और बड़ा नामहै जल्द उन्हे बुलवालो मैं एक मकान तुम्हारे असबाबके लिये खाली कर देताहूं जो कुछ जिनस लायेहो मैं देखूं ऐसी तदबीर करंगा कि यहीं तुम्हें बहुतसा नफा मिले तुमभी खुश होगे और सफरके हरजमर्जसे बचोगे और मुझेभी चन्दरोज रहनेसे अपना एह सानमन्द करोगे सौदागर बचेने ऊपरी दिलसे उजुर किया लेकिन खाजाने पजीरान किया और अपने गुमाश्तेको फरमाया कि बार बरदार जल्द भेजो और कारवां सरासे इनका असबाब मंगवाकर फलाने मकानमें रखवाओ ॥

सौदागर बचेने एक जंगी गुलामको उनके साथ कर दिया कि सब माल मता लदवाकर लेआ और आप शामतक खाजाके साथ बैठा रहा जब गुजरीका वक्त होचुका और दूकान बढ़ाई खाजा घरको चला तब दोनों गुलामोंमेंसे एकने कुत्तेको बगलमें लिया दूसरेने कुरसी और कालीचा उठा लिया और उन दोनों हबशी गुलामोंने उन पिंजड़ोंको मजदूरोंके सिरपर धरदिया और आप पांचों हतियार बांधे साथ हुये खाजा सौदागर बचेका हाथ हाथमें लिये बातें करता हुआ हवेलीमें आया सौदागर बचेने देखा कि महल कालीशां लायक बादशाहों या अमीरोंकेहै लबिनहर फर्श चान्दनीका बिछाहै और मसनदके रूबरू असबाब ऐशका चुनाहै कुत्तेकी सन्दलीभी उसी जगहः बिछाई और खाजा सौदागर बचेको लेकर बैठा बेतकल्लुफ तवाज शराबकी की दोनों पीने लगे जब सरखुश हुये तब खाजाने खाना मांगा दस्तरखान बिछा और दुनियांकी न्यामतें चुनी गई पहले एक लंगरीमें खाना लेकर सरपोश तिलाई ढांपकर कुत्तेकेवास्ते लेगये और एक दस्तरखान जरबफतका बिछाकर उसके आगे धरदी कुत्तेने सन्दलीसे नीचे उतर जितना चाहा उतना खाया और सोनेकी लगनमें पानी पिया फिर चौकी पर आ बैठा गुलामोंने रुमालसे हाथ मुंह उसका पाक किया फिर उस तबाक और लगनको गुलाम पिञ्जड़ोंके नजदीक लेगये और खाजेसे कुञ्जियां मांग कुफल कफसोंके खोले उन दोनों इनसानोंको बाहर निकाल कर कई सोंटे मार कर कुत्तेका झूटा

उन्हें खिलाया और बुही पानी पिलाया फिर ताले बन्द कर कर तालियां खाजेके हवालेकीं॥

जब यह सब हो चुका तब खाजेने आप खाना शुरू किया सौदागर बचेको यह हर्कत पसन्द नआई घिन खाकर हाथ खानेमें नडाला हर चन्द खाजेने मिन्नतकी पर उसने इनकारही किया तब खाजेने सबब उसका पूछा कि तुम क्यों नहीं खाते॥

सौदागर बचेने कहा यह हरकत तुम्हारी अपने तईं बदनुमा मालूम हुई इस लिये कि इनसान अशरफुल मखलूकातहै और कुत्ता नज्सि उलऐनहै पस खुदाके दो बन्देको कुत्ते का झूठा खिलाना किस मज़्हबओमिल्लतमें रवाहपकत यह गनीमत नहीं जान्ते कि तुम्हारे कैदमेंहैं नहीं तो तुम और वे बराबर हो मुझे तुम्हारा खाना खानामकरूहहै जब तलक यह शुबह दिलसे दूर नहो॥

खाजेने कहा ऐ बाबा जो कुछ तू कहता है मैं यह सब समझताहूं और इसी खातिर बदनामहूं कि इस शहरकी खिलकतमें मेरा नाम खाजे सगपरस्त रखाहै इसी तरह पुकारतेहैं और मशहूर कियाहै लेकिन खुदाकी लानत काफिरोंपर और मुशरिकोंपर हूजयो कलमापढा और सौदागर बचेकी खातिर जमाकी तब सौदागर बचेने पूछा कि अगर मुसलमान बदिलहो तो इसका क्या बाइस है कि ऐसी हरकत करके अपने तईं बदनाम किया है खाजेने कहा ऐ फरजन्द नाम मेरा बदनामहै और दुगनाम हूल इस शहरमें भरताहूं इसीवास्ते कि यह भेद किसूपर जाहिर नहो अजब यह माजराहै कि जो कोई सुने सिवाय गम और गुस्सेके उसे कुछ और हासिल नहो तूभी मुझे माफ रख कि नमुझमें कुदरत कहनेकी और नतुझमें ताकत सुननेकी रहेगी सौदागर बचेने अपने दिलमें गौरकी कि मुझे अपने कामसे कामहै क्या जरूर है जो नाहक में जियादा मज़ाविहूं बोला खैर अगर लायक कहनेके नहीं तो नकहिये खानेमें हाथ डाला और निवाला उठाकर खाने लगा दो महीने तक इस होशयारी और अकल मन्दीसे सौदागर बचेने खाजेके साथ गुजरानकी किसूपर हरगिज नखुला कि यह औरत है सब यही जानतेथे कि मरद है और खाजेसे रोज बरोज ऐसी मुहबत जियादा हुई कि एक दम अपनी आंखोंसे जुदा नकरता॥

एक दिन ऐन मैनोशीकी सुहब्वतमें सौदागर बचेने रोना शुरु किया खाजेने देखतेही

खातिरदारी की और रूमालसे आंसू पोंछने लगा और सबबे गिरयः पूंछा सौदागर बचेने कहा कि किबलः क्या कहूं कायके तुम्हारी खिदमतमें बन्दगी पैदा नहीं होती और यह शफकत जो साहब मेरे हकमें करतेहैं नहारते अब दोमुशकलें मेरे पेश आईहैं न तुम्हारी खिदमतसे जुदा होनेको जी चाहताहै और न रहनेका इत्तफाक यहां हो सकताहै अब जाना जरूर हुआ लेकिन आपकी जुदाईसे उम्मेद जिन्दगीकी नजर नहीं आती ॥

यह बात सुनकर ख्वाजा बेइखतियार ऐसा रोने लगा कि हिचकी बन्ध गई और बोला कि ऐनूर चिश्म ऐसी जल्दी इस अपने बूढ़े खादिमसे संरूठे कि इसे दिलगीर किये जातेहो कसद रवाना होनेका दिलसे दूरकरो जबतलक मेरी जिन्दगीहै रहो तुम्हारी जुदाईसे ऐक दम जीता न रहूंगा बगैर अजलके मर जाऊंगा और इस मुल्क फारसकी आबो हवाबहुत खूब और मुवाफिक है बेहतर तोयों हैकि ऐक आदमी मातबर भेज कर अपने वाले देनकों मेंअसबाब यहींबुलवालो जो कुछ सवारी और बार बरदारी दरकार हो मैं मौजूद करूं जब मा बाप तुम्हारे और घरबार सब आया अपनी खुशीसे कारबार तिजारतका किया करियो मैंनेभी इस उमरमें जमानेकी सखतियां खैंचीहै और मुल्क मुल्क फिराहूं अब बूढा हुआ फरजन्द नहीं रखता मैं तुझे बेहतर अपने बेटेसे जानताहूं और अपना वली अहद और मुखतार करताहूं मेरे कारखानेसेभी हुशयार और खबरदार हो जबतलक जीताहूं ऐक टूकरा खानेको अपने हाथसे दो जब मर जाऊंगा गाड़ दाब दीजियो और सब मालोमता मेरा लीजियो तब सौदागर बचेने जवाब दिया कि वाकै साहबने जियादा बापसे मेरी गमख्वारी और खातिरदारीकी कि मुझे मा बाप भूल गये लेकिन इस आसीके वालिदने ऐक सालकी रुखसत दीथी अगर देर लगाऊंगा तोवे इसपीरीमें रोतेर मर जायेंगे पस रजामन्दी पिदरकी खुशनूदी खुदाकीहै और अगर वह मुझसे नाराज होंगे तो मैं डरताहूं कि शायद दुआये बदनकरें कि दोनों जहानमें खुदाकी रहमतसे महरूम रहूं ॥

अब आपकी यही शफकतहै कि बन्देको हुकुम कीजिये कि फुरमागा किबलेगाहका बजा लावे और हकपिदरीसे अदा होवे और साहबकी तवज्जुहका अदाय शुकर जब तलक दममें दमहै मेरी गरदनपरहै अगर अपने मुल्कमेंभी जाऊंगा तो हर दम

दिलो जानसे याद किया करूंगा खुदा मुसब्बब बउल असबाब है शायद फिर कोई ऐसा सबब हो कि कदम बोसी हासिल करूं ॥

गरज सौदागर बचेने ऐसी ऐसी बातें लोन मिर्चे लगाकर ख्वाजःको सुनाईं कि वुह बिचारा लाचार होकर होंट चाटने लगा अजबस्की उसपर शेफतः हो रहाथा कहने लगा अच्छा अगर तुम नहीं रहते तो मैंहीं तुम्हारे साथ चलताहूं मैं तुझको अपनी जानके बराबर जान्ताहूं पस जब जान चलीजाव तो खाली बदन किस काम आवे अगर इसी में रजामन्द है तोचल और मुझेभी लेचल सौदागर बचेसे यह कह कर अपनी भी तयारी सफरकी करने लगा और गुमाश्तोंको हुक्म किया कि बार बरदारीकी फिकर जलदी करो ॥

जबख्वाजके चलनेकी खबर मशहूर हुई वहांके सौदागरोंने सुनकर तहईया सफर काकिया ख्वाजा सग परस्तने गंज और जवाहिर बे शुमार नौकर और गुलाम अनगिन्त तुहफे और असबाब शाहानःबहुतसा साथ लेकर शहरके बाहर तंम्बू और बेचोबे और सरा परदे और कन्दले खड़े करवा कर उनमें दाखिल हुवा जितने तिज्जारथे अपनी अपनी बिसात मुवाफिक माल सौदागरीका लेकर हमराह हुवे बराय खुदा एक लश्कर होगया ॥

एक दिन जोगनीको पीठ देकर वहांसे कूचकिया हजारों ऊंटों पर शतीते असबाब के और खचरों पर सन्दूक नकद और जवाहिरके लादकर पांच सौगुलाम दश्त कबचाक और जंग और रूमके मुसल्लह साहबे शमशीर ताजी और तुरकी औ ईराकी और अरबी घोड़ोंपर चढ़कर चले सबके पीछे ख्वाजः और सौदागर बचा खिलअत फाखिरः पहने सुख पाल पर सवार और एक तखत बग़दादी ऊंटपर कसा उसपर कुत्ता मसनद पर सोया हुवा और उन दोनों कैदियोंके कफस एक शुतर पर लटकाये हुवे रवानः हुवे जिस मनजिलमें पहुंचे सब सौदागर ख्वाजःकी बारगाहमें हाजिर होते और दस्तर खान पर खानाखाते और शराब पीते ख्वाजा सौदागर बचेके साथ होनेकी खुशीमें शुकर खुदाका करता और कूच दर कूच चला जाताथा बारे बखैरो आफियत नज़दीक कुसतून तुनयःके आपहुंचे बाहर शहरके मुकामकिया सौदागर बचेने कहा ऐकिबलः

अगर रुखसत दीजये तो मैं जाकर माबाप को देखूं और मकान साहबके वासते खाली करूं जब मिज़ाज सामीमें आवे शहर में दाखिल हूजये खाजेने कहा तुम्हारी खातिर तो मैं यहां आया अच्छा जल्द मिलजुल कर मेरे पास आओ और अपने नज़दीक मेरे उतरनेको मकान दो सौदागर बचः रुखसत होकर अपने घरमें आया सब वज़ीरके महलके आदमी हैरान हुवे कि यह मरदुआ कौन घुस आया सौदागर बचःयाने बेटी वज़ीरकी अपनी मा के पाओं पर जागिरी और रोई और बोली कि मैं तुम्हारी जाईहूं मुत्तही वज़ीर की बेगम गालियां देने लगी कि ऐ तुलरी तू बड़ी शत्ताहो निकली अपना मुंह तुने काला किया और खान्दान्को रुसवा किया हमतो तेरी जान् को रोपीट कर सबर करके तुझसे हाथ धो बैठेथे जा दफः हो तब वज़ीर जादीने सिर परसे पगड़ी उतार कर फेंकदी और बोली ऐ अम्माजान मैं बुरी जगह नहीं गई कुछ बदी नहीं की तुम्हारे बमोजिब फरमानेके बाबाको कैदसे छूड़ाने की खातिर यह सब फिकिर की अलहम दुलिल्लाह कि तुम्हारी दुआकी बरकतसे और अल्लाहके फ़ज़लसे पूरा काम करके आईहूं कि नैशापूरसे उस सौदागरको मै कुत्ते जिसके गलेमें वे बाल पड़ेहैं अपने साथ लाईहूं और तुम्हारी अमानतमें भी खयानत् नहीं की सफरके लिये मरदाना भेस कियाहै अब ऐक रोज़का काम बाकीहै वुह कर कर बाबाको पखड़त खानेसे छूड़ातीहूं और अपने घरमें आतीहूं अगर हुकुम हो तो फिर जाऊं और ऐक रोज बाहर रह कर खिदमतमें आऊं ॥

माने जब खूब मालूम किया कि मेरी बेटीने मरदोंका काम किया और अपने तईं सब तरहसे बचा रखाहै खुदाकी दरगाहमें नक घिसीकी और खुश होकर बेटी को छातीसे लगाया और मुंह चुमा बलायेंलीं और दुआयेंदीं और रुखसत किया कि तू जो मुनासिब जान सो कर मेरी खातिर्जमा हुई ॥

वज़ीरज़ादी फिर सौदागर बच्चा बनकर खाजे सगपरस्त पास चली वहां खाजेको जुदाईने उसकी निहायत बेचैन किया बेइखतियार होकर कूच किया इत्तफाकन नज़दीक शहरके इधरसे सौदागर बचा आताथा और उधरसे खाजा आताथा बीच राहमें मुलाकात हुई खाजेने देखतेही कहा बाबा मुझ बूढ़ेको अकेला छोड़कर कहां गयाथा सौदागर बचा बोला आपसे इजाजत लेकर घर गयाथा आखिर मुलाजिमतके

इत्तिफ़ाक़से वहां रहने नदिया आकर हाज़िर हुआ शहरके दरवाज़े पर दरियाके किनारे एक बाग़ सायेदार देखकर ख़ेमा खड़ा किया और वहीं उतरे ख़ाजा और सौदागर बच्चा बाहम बैठकर शराबो कबाब पीने खाने लगे जब तिपहर हुई सैर तमाशेकी ख़ातिर ख़ेमेसे निकलकर सन्दलियोंपर बैठे इत्तफ़ाक़न एक बादशाही चोबदार उधर आ निकला उनका लश्कर और निहायत बरख़ास्त देखकर अचम्भे होरहा और दिलमें कहा शायद एलची किसू बादशाहका आयाहै खड़ा तमाशा देखताथा कि ख़ाजेके शातिरने उसको आगे बुलाया और पूछा कि तू कौनहै उसने कहा कि मैं बादशाहका मीर शिकारहूं शातिरने ख़ाजेसे उसका अहवाल कहा ख़ाजेने येक गुलाम कांफरीको कहा कि जाकर कह कि हम मुसाफ़िरहैं अगर जी चाहे तो बैठो कहवा क़लियन हाज़िरहै जब मीर शिकारने नाम सौदागरका सुना ज़्यादा मुताज्जिब हुआ और गुलामके साथ ख़ाजेकी मजलिसमें आया लवाज़िम औ शान और शौकत और सिपाह औ गुलाम देखे ख़ाजः और सौदागर बच्चेको सलाम किया और मरतबा कुत्तेका देखा होश उसके जाते रहे हक्का बक्कासा होगया ॥

ख़ाजेने उसे बिठलाकर क़हवे की ज़ियाफ़त की उसने नामो निशान ख़ाजेका पूछा जब रुख़सत मांगी ख़ाजेने कई थान और कुछ तुहफ़े उसे देकर इजाज़त दी सुबहको जब बादशाहके दरबारमें हाज़िर हुआ दरबारियोंसे ख़ाजः सौदागरका ज़िकिर करने लगा रफ़्तः रफ़्तः मुझको ख़बर हुई मीर शिकारको मैंने रूबरू तलब किया और सौदागरका अहवाल पूछा उसने जो कुछ देखाथा अर्ज़ किया मुझसे कुत्ते के तजम्मुलके और दो आदमियोंके पिंजड़ेमें क़ैद होनेके मुझको ख़फ़गी आई मैंने फ़रमाया वुह मरदूद सौदागरका जिस क़तलहै तलकचियोंको हुकुम किया कि जल्द जाओ उस बेदीनका सिरकाटलाओ क़ज़ाकार वुही एलची फ़रंगका दरबारमें हाज़िरथा मुसकराया मुझे औरभी गुस्सा ज़्यादा हुआ फ़र्माया कि ऐ बेअदब बादशाहोंके हुज़ूरमें बेसबब दांत खोलने अदबसे बाहरहै बेमहल हंसनेसे रोना बिहतरहै उसने इलतेमास किया जहांपनाह कई बातें ख़यालमें गुज़रीं इस लिये मैंने मुसकराया पहले यह कि वज़ीर जो सचाहै अब क़ैद ख़ानेसे रिहाई पावेगा दूसरे यह कि पादशाह ख़ून नाहकसे उस वज़ीरके बचे तीसर यह कि हुज़ूरने बेसबब और बेक़सूर उस सौदागरको हुकुम क़तल

का किया इन हरकतोंसे ताज्जुब आया कि बेतहकीक एक बेवकूफके कहनेसे आप हर किसूको हुकुम कतलका कर बैठते हैं खुदा जाने किस हकीकत उस ख़ाजेका हाल क्या है उसे हजूरमें तलब कीजिये और उसकी वारिदात पूछिये अगर तकसीरवार ठेरे तब मुखतार हो जो मरजीमें आवे उससे सलूक कीजिये ॥

जब ऐलचीने इस तरहसे समझाया मुझेभी वजीरका कहना याद आया फर्माया जल्द सौदागरको उसके बेटेके साथ और वुह कुत्ता और पिंजड़ा हाजिर करो कोर्ची उसको बुलानेको दौड़ाये एक दममें सबको हजूरमें लेआये रूबरू तलब किया पहले ख़ाजा और उसका बेटा आया दोनों अच्छा सुथरा कपड़ा पहने हुवे सौदागर बच्चेका जमाल देखनेसे सब अदना आला हैरान और भिचक हुवे एक ख़ान तिलाई जवाहिरसे भरा हुआ कि हर एक रकमकी छूट ने सारे मकानको रौशन कर दिया सौदागर बच्चा हाथमें लिये आया और मेरे तख़्तके आगे निछावर किया और आदाब कोरनिशात बजा लाकर खड़ा हुआ ॥

ख़ाजेनेभी जमीन चूमी और दुआ करने लगा इस गोयाईसे बोलताथा कि गोया बुलबुल हजार दास्तां है मैंने उसकी लियाकतको बहुत पसन्द किया लेकिन गुस्से से कहा के शैतान आदमीकी सूरत तूने यह क्या जाल फैलायाहै और अपनी राहमें कुआं खोदाहै तेरा क्या दीनहै और यह कौन आईनहै किस पैगम्बरकी उम्मतहै अगर काफर है तोभी यह कैसी मतहै और तेरा क्या नामहै कि तेरा यह कामहै ॥

उसने कहा कि जहांपनाहकी उमर और दौलत बढ़ती रहे गुलामका दीन यहहै कि उसका कोई शरीक नहीं और महम्मद मुस्तफाका कलमा पढ़ताहूं और उसके बाद बारह इमामको अपना पेशवा जानताहूं और आईन मेरा यह है कि पांचों वक्तकी निमाज पढ़ताहूं और रोजा रखताहूं और हजभी कर आयाहूं और अपने मालका पांचवा हिस्सा खैरात करताहूं और मुसलमान कहाताहूं लेकिन जाहिरमें यह सारे ऐब जो मुझमें भरेहैं जिनके सबबसे आप नाखुश हुवेहैं और तमाम खलकुल्लाहमें बदनाम होरहाहूं इसका एक बाइसहै कि जाहिर नहीं कर सक्ता हरचन्द सगपरस्त मशहूरहूं और दूना महसूल देताहूं यह सब कबूल कियाहै पर दिलका भेद किसूसे नहीं कहा ॥

इस बहानेसे मेरा गुस्सा ज्यादा हुआ और कहा मुझे तू बातोंमें फुसलाताहै मैं नहीं मानेका जबतक इस अपनी गुमराही की दलील माकूल अर्ज नकरे कि मेरे दिल नशीन हो तब तू जानसे बचेगा नहीं तो उस्के बदलमें तेरा पेट् चाक करवाऊंगा तो सबको ईबरतहो कि बार दीगर कोई दीन महम्मदीमें रखना नकरे खाजेनें कहा कि बादशाह मुझ कमबख्तके खूनसे दरगुजर कर और जितना माल मेराहै कि गिन्ती और शुमारसे बाहरहै सबको जब्द् करले और मुझे और मेरे बेटेको अपने तख्तके तसद्दुक कर कर छोड़दे और जां बखशी कर॥

मैंने मुस्कराकर कहा कि बेवकूफ् अपने माल की तमा मुझे दिखाताहै सिवाय सच बोलनेके अब तेरी मखलसी नहीं यह सुन्तेही खाजेकी आंखोंसे बेइखतियार आंसू टपकने लगे और अपने बेटेकी तरफ देखकर एक आह भरी और बोला मैं तो बादशाहके रूबरू गुनहगार ठेरा मारा जाऊंगा अब क्या करूं तुझे किसको सौंपू मैंने डांटा कि ऐ मक्कारबस अब उजुर बहुत किये जो कहनाहै जल्द कह॥

तब तो उस मर्दने कदम बढाकर तख्त पास आकर पायेको बोसा दिया और तारिफें करने लगा और बोला ऐ शहनशाह अगर हुकुम कतलका मेरे हकमें नहोता तो सब सियाहें सहता और अपना माजरा नकहता लेकिन जान सबसे अजीजहै कोई आपसे कुवेमें नहीं गिरता पस जानकी महाफिजत वाजिबहै खैर जो मरजी मुबारक यहीहै तो सरगुजश्त इस पीरजईफकी सुनिये॥

पहले हुकुम हो कि वुह दोनों पिञ्जड़े जिनमें दो आदमी कैदहैं हजूरमें लाकर रखें मैं अपना अहवाल कहताहूं अगर कहीं झूट कहूं तो उनसे पूछकर मुझे काइल कीजिये और इनसाफ फरमाइये मुझे यह बात उस्की पसन्द आई पिञ्जड़ोंको मंगवाकर उन दोनोंको निकलवाकर खाजेके पास खड़ा किया॥

खाजेने कहा कि बादशाह यह मर्द जो दाहन तरफहै गुलामका बड़ा भाईहै और जो बायेंको खड़ाहै मंझला बिरादरहै मैं उन दोनोंसे छोटाहूं मेरा बाप मुल्क फारसमें सौदागरथा जब मैं चौदह बरसका हुआ किब्ले गाहने रिहलतकी जब तजहीज तकफीनसे फरागत हुई और फूल उठचुके एक रोज उन दोनों भाइयोंने मुझे कहा कि अब बापका

माल जो कुछ है तकसीम करलें जिस्का दिल जो चाहे सोकाम करे मैंने सुनकर कहा ओ भाईयों यह क्या बातहै मैं तुम्हारा गुलामहूं भाइचारेका दावा नहीं रखता एक बाप मरगया तुम दोनों मेरे बापकी जगह मेरे सिरपर कायमहो एक नान खुश्क चाहताहूं जिसमें जिन्दगी बसर करूं और तुम्हारी खिदमतमें हाजिर रहूं मुझे हिस्से बखरेसे क्या कामहै तुम्हारे आगेके झूठेसे अपना पेट भरलूंगा और तुम्हारे पास रहूंगा मैं लड़काहूं कुछ पढ़ा लिखाभी नहीं मुझसे क्या हो सकेगा अभी तुम मुझे तरबीयत करो यह सुनकर जवाब दिया कि तू चाहताहै अपने साथ हमेंभी खराब और मुहताज करे मैं चुपका एक गोशेमें जाकर रोने लगा फिर दिलको समझाया कि भाई आखिर बुजरग है मेरी तालीमकी खातिर चिशमनुमाई करतेहैं कि कुछ सीखे इसी फिकिरमें सोगया सुबहको एक पियादा काजीका आया और मुझे दारुलकजामें लेगया वहां देखा तो यही दोनों भाई हाजिरहैं काजीने कहा क्यों अपने बापका वरसाबाराट नहीं लेता मैंने घरमें जो कहाथा वहांभी जवाब दिया ॥

भाइयोंने कहा अगर यह बात अपने दिलसे कहताहै तो हमें लादावी लिखदे कि बापके माल और असबाबसे मुझे कुछ इलाका नहीं तबभी मैंने यही समझा कि यह दोनों मेरे बुजुर्गहैं मेरी नसीहतकेवास्ते कहतेहैं कि बापका माल लेकर बेजा खर्च नकरे बमोजिब इनकी मरजीके फारगखती बमुहर काजी मैंने लिखदी यह राजी हुये मैं घरमें आया दूसरे दिन मुझसे कहने लगे ओ भाई यह मकान जिसमें तू रहताहै हमें दरकारहै तू अपने रहनेकी खातिर और जगह लेकर जारह तब मैंने दरियाफ़्त किया कि यह बापकी हवेलीमेंभी रहनेसे खुश नहीं लाचार इरादा उठ जानेका किया जहां पनाह जब मेरा बाप जीताथा तो जिस वक्त सफरसे आता हर एक मुल्कका तुहफा बतरीक सोगातके लाता और मुझे देता इसवास्ते कि छोटे बेटेको हर कोई ज्यादा प्यार करताहै मैंने उसको बेच बेचकर थोड़ीसी अपनी निजकी पूंजी जमाकीथी उसीसे कुछ खरीद फरोखत करता एकबार लौंडी मेरी खातिर तुरकिस्तानसे मेरा बाप लाया और एक दफा घोड़े लेकर आया उनमेंसे एक बछेड़ा नाकन्द कि होनहारथा वुहभी मुझे दिया मैं अपने पाससे दाना घास उसका करताथा ॥

आखिर इनकी बेनसबती देखकर एक हवेली खरीदकी वहां जारहा यह कुत्ता

भी मेरे साथ चला आया वास्ते जरूरीयातके असबाव खानः दारीका और दोगुलाम खिदमत की खातिर मोललीये और बाकी पूंजीसे एक दूकान बज्जाजीकी करके खुदाकी तवक्कुल पर बैठा॥

अपनी किसमत पर राजीथा अगरचे भाइयोंने बद सुलकीकी पर खुदा जो मेहरबानहुवा तिन बरसके अरसेमें ऐसी दुकान जमीकि मैं साहिब ऐतबार हुवा सब सरकारोंमेंजोतुहफा चाहिये मेरेही दुकानसे जाता उसमें बहुतसे रुपे कमाये और नेहायत फरागतसे गुजरने लगी हरदम जिनाब बारीमें शुकराना करता और आरामसे रहता यहकबित अकसर अपने अहवाल पर पढता॥

कबित

रूठेक्योंनराजा वातें कछुनाहींकाजा एक तोसे महाराजा और कौनको सराहिये॥
रूठेक्यों नभाई वातें कछु नबसाई एक तूहीहै सहाई और कौन पास जाइये॥
रूठेक्योंन मित्र शत्रु आठों याम एक राउरे चरण के नेह को निभाइये॥
संसारहै रूठा एक तूहैअनुठा सबचूमेंगे अंगूठा एक तून रूठा चाहिये॥

इत्तफाकन जुम्मेके रोज मैं अपने घर बेठाथा कि एक गुलाम मेरा सोदे सुलफ को बाजार गयाथा बाद एक दमके रोता हुआ आया मैंने सबब पूछा कि तुझे क्या हुआ खफा हो कर बोला कि तुम्हे क्या काम है तुम खुशी मनाओ लेकिन कयामतमें क्या जवाब दोगे मैंने कहा ऐ हबशी ऐसी क्या बला तुझपर नाज़िल हुई उसने कहा यह गजब है कि तुम्हारे बड़े भाईयोंको चौकके चौराहेमें एक यहूदीने मुशके बांधीहें और कमचियां मारताहै और हंसताहैकि अगर मेरे रुपै नदोगे तो मारते मारते मारही डालूंगा भलामुझे सवाब तो होगा पस तुम्हारी भाइयोंकी यह नौबत् और तुम बेफिकिर हो यह बात अच्छी है लोग क्या कहेंगे॥

यह बात गुलामसे सुन्तेही लहूने जोश किया नंगे पांव बाजारकी तरफ दौड़ा और गुलामों को कहा जल्द रुपै लेकर आओ जोंहीं वहांगया देखा तो जोकुछ गुलामने कहाथा सचहै इन पर मार पड़ रहीहै हाकिमके प्यादोंको कहा वास्ते खुदाके ज़रा रह जाओ मैं यहूदीसे पूछू कि ऐसी क्या तकसीर कीहै जिस्के बदले यह सजा होतीहै यह कह कर मैं यहूदीके पास गया और कहा आज जुम्मेका दिनहै इनको क्यों मार रहाहै

उसने जवाब दिया अगर हिमायत् करते हो तो पूरी करो इनके इवज़ रुपै हवाले करो नहीं तो अपने घरकी राहलो मैंने कहा कैसे रुपै दस्ता वेज निकाल मैं रुपै गिन् देताहूं उसने कहा तमस्सुक हाकिम के पास दे आयाहूं इस्में मेरे दोनों गुलाम दोबिदरे रुपै लेकर आयें हज़ार रुपे मैंने यहूदीको दिये और भाइयोंको छुड़ाया ॥

इनको यह सूरत औरहोथी कि बदनसे नंगे और भूखे प्यासे अपने हमराह घरमें लाया, वोही हम्माम्में नहल्वाया नईपोशाक पहनाई खाना खिलाया हरगिज़ इन्से यह नकहा कि इतना माल बापका तुमने क्या किया शायद शर्मिन्दः हों ॥

ऐबादशाह येदोनों मौजूदहैं पूछिये कि सच कहताहूं या कोई बात झूठभी है खैर जब कई दिनमें मारकी कोफतसे बहाल हुवे ऐक रोज मैंने कहाकि ऐ भाइयो अब इस शहर में तुम बेऐतबार हो गयेहो बिहतर यहहे कि चन्द रोज सफ़र करो यह सुन कर चुपहोरहे मैंने मालूम किया कि राजीहैं सफ़रकी तइयारी करने लगा माल परतल बार बरदारी और सवारोंकी फिकर करके बीसहज़ार रुपै की जिनस तिजारत की खरीद की ऐक काफला सौदागरों का बुखारेको जाताथा उनके साथ कर दिया ॥

बाद ऐक सालके वुह काफला फिर आया इनकी खैर खबर कुछ नपाई आखिर ऐक आशनासे कसमें देकर पूछा उसने कहा जब बुखारेमें गये ऐक नेजूवे खाने में अपना तमाम माल हार दिया अब वहां की झाड़ू बर दारी करताहैऔर फड़को लीपता पोत्ता है जुआरी जो जमाहोतेहैं उनकी खिदमत करता है वुह बतरीक खैरात्के कुछ देतेहैं वहांका गुरगा बना पड़ा रहताहै और दूसरा बोजः फरोशके लड़की पर आशक हो अपना मालसारा सरफ कीया अब वुह बुजेखानेकी टहल कीया करताहै काफलेके आदमी इस लीये नहीं कहते कि तू शरमन्दः होगा ॥

यह अहवाल उस शखससे सुन कर मेरी अजब हालत हुई मारे फिकर केनींद भूक जाती रही जाद राहलेकर कसद बुखारे काकिया जब वहां पहुंचा दोनोंको ढूंड कर अपने मकानमें लाया गुसल करवाकर नईपोशाक पहनाई और उनकी खिजालत के डरसे ऐक बात मुहं पर नरखी फिर माल सौदागरोंका इनके वास्ते खरीदा और इरादा

घरका कीया जब नजदीक नेशापूरके आया ऐक गावंमें मे माल असबाब इनको छोड़ कर घरमें आया इसलीये कि मेरे आनेको किसूको खबर नहो ॥

बाद दोदिनके मशहूर कीयाकि मेरे भाई सफरसे आये हैं कल उनकी इस्तकबाल की खातिर जाऊंगा सुबहको चाहाकि चलूं ऐक गिरहस्त उसी मौकेका मेरे पास आया और फरयाद करने लगा मैं उसकी आवाज सुनकर बाहरनिकला उसे रोता देखकर पूंछा कि क्यों जारी करताहै वुह बोला तुम्हारे भाइयोंके सबबसे हमारे घर लूटे गये काशके उनको तुम वहां नछोड़ आते ॥

मैंने पूंछा क्या मुसीबत गुजरी बोलाकी रातको हुका आया इनका माल असबाब लूटा और हमारे घरभी लूट लेगये मैंने अफसोस किया और पूछाकि अब वे दोनों कहां है कहा शहर के बाहर नंगे भूंगे खराब खसतः बैठेहैं वोहीं दोजोड़े कपड़ोंके साथ लेकर गया पहना कर घरमें लाया लोग सुनकर उनके देखने को आतेथे और ये मारे शरमन्दगी के बाहर ननिकलते थे तीन महीने इसीतरह गुजरे तब मैंने अपने दिलमें गौर की कि कबतलक यह कोने मे दबके बैठे रहेंगे बने तो इनको अपने साथ सफरमें लेजाऊं भाईयों सेकहा अगर फरमाइये तो यह फिदवी आपके साथ चले ये खामोश होरहे फिर सबा जिमा सफर का और जिनस सौदागरोकी तइयार करके चला और उनको साथ लीया॥

जिस वक्त मालकी जकात देकर असबाब किश्तीपर चढ़ाया और लंगर उठाया नाव चली यह कुत्ता कनारे पर सोरहाथा जब चौंका और जहाजको मंझ धार देखा हैरान् होकर भौंका और दरियामें कूद पड़ा और पैरने लगा मैंने ऐक पनसोई दौड़ वाई बारे कुत्तेको लेकर किश्तीमें पहुंचाया ॥

ऐक महीना खैरो आफियत्से दरियामें गुजरा कहीं मंझला भाई मेरी लौंडी पर आशिक हुवा ऐक दिन बड़े भाईसे कहने लगा कि छोटे भाई की मिन्नत् उठानेसे बड़ी शरमन्दगी हासिल हुई इसका तदारुक क्या करें बड़ेने जवाब दिया कि ऐक सलाहदिलमें ठैराईहे अगर बनआवे तो बड़ी बातहै आखिरदोनों ने मसलहत करके तजवीज की कि इसे मार डालें और सारे माल असबाबके काबिज और मुतसर्रिफ होां॥

ऐक दिनमैं जहाजकी कोठरीमें सोताथा और लोंडी पांव दबारहीथी कि मंझला

भाई आया और जल्दीसे मुझे जगाया मैं हड़बड़ा कर चौंका और बाहर निकला यह कुत्ताभी मेरे साथ हो लिया देखूं तो बड़ा भाई जहाजकी गाड़ार हाथ टेके निहुड़ाहुवा तमाशा दरयाका देख रहाहै और मुझे पुकारता है मैंने पास जाकर कहा खैर तो है बोला अजब तरह का तमाशा हो रहाहै कि दरयाई आदमी मोतीओं सीपयों और मूंगेके दरख्त हाथ में लिये हुये नाचते हैं अगर और कोई ऐसी बात खिलाफ कयास कहता तो मैं न मानता बड़े भाईके कहनेको रास्त जाना देखनेको सिर झुकाया हरचन्द निगाहकी कुछ नजर न आया और वुह यही कहता रहा अब देखा लेकिन कुछ हो तो देखूं इसमें मुझे गाफिल पाकर मल्लाहने अचानक पीछे आकर ऐसा धकेला कि बेअख्तियार पानीमें गिर पड़ा और वुह रोने धोने लगे कि दौड़ियो हमारा भाई दरयामें डूबा इतनेमें नाव बढ़ गई और दरया की लहरें कहींसे कहीं लेगईं गोते पर गोता खाताथा और मौजों में चला जाताथा आखिर थक गया खुदा को याद करताथा कुछ बस न चलताथा एक बारगी किसू चीज पर हाथ पड़ा आंख खोल कर देखा तो यही कुत्ताहै शायद जिसदम मुझे दरया में डाला मेरे साथ यहभी कूदा और पैरता हुआ मेरे साथ लिपटा हुआ चला आताथा मैंने उसकी दुम पकड़ली अल्लाहने उसको मेरी जिन्दगीका सबब किया सातदिन और रात यही सूरत गुजरी आठवेंदिन किनारे जा लगा ताकत मुतलक नथी लेटे लेटे करवटें खाकर ज्योंत्यों अपने तईं खुश्कीमें डाला एक दिन बेहोश पड़ारहा दूसरे दिन कुत्ते की आवाज कानमें गई होशमें आया खुदाका शुकर बजालाया इधर उधर देखने लगा दूरसे सवाद शहरका नजर आया लेकिन कुव्वत कहां कि इरादा करूं लाचार दो कदम चलता फिर बैठता इसी हालतसे शामतक कोस भर राह काटी बीचमें एक पहाड़ मिला रातको वहां गिर रहा सुबहको शहरमें दाखिल हुआ जब बाजारमें गया नानबाई और हलवाईयोंकी दूकानें नजर आईं दिल तरसने लगा न पास पैसा जो खरीद करूं न जीचाहे कि मुफ्त मांगूं इसी तरह अपने दिलको तसल्ली देता हुआ कि अगली दुकानसे लूंगा चला जाताथा आखिर ताकत न रही और पेट में आग लगी नजदीक था कि रूह बदनसे निकले नागाह दो जवान को देखाकि लिबास अजमका पहने और हाथ पकड़े चले आतेहैं इनको देख कर खुश हुवाकि यह अपने मुल्कके इनसान हैं शायद आशना सूरत हों इनसे अपना अहवाल कहूंगा जब नजदीक

आये तो मेरे दोनो बिरादर हमीको घे देख कर निपट शादऊवा शुकर खुदाका कियाकि खुदाने अगर रखशी गेर के आग हाथ नयसारा नजदीक जाकर सलाम कियाओर बड़े भाईका हाथ चूमा इनहोंने मुझे देखतेही गुल मचाया मझले भाईने तमांचा माराकि मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा बड़ भाई का दामन पकड़ा शायद यह हिमायत करेगा इसन लात मारी ॥

गरज दोनोंने मुझे खूब खुद खाम किया और हजरत यूनफके भाईयों का सा काम किया हर चन्द मैंने खुदाके वास्ते दिये और बिनया या हरगिज रहम न खाया एक खिलकत इकट्ठी हुई सबने पूछा इसका क्या गुनाह है तब भाइयोंने कहा यह हरामजादा हमारे भाईका नोकरथा सो उसको दरयामें डाल दिया और माल असबाब सब लेलिया हम मुद्दतसे तलाशमें थे आज इस सूरतसे नजर आया और मुझसे पूछतेथे कि ओ जालिम यह क्या तेरे दिलमें आयाकि हमारेभाईको मार खपाया क्या उसे तेरी तकसीर कोथी उसे तुझने क्या बुरा सलूक कीयाथाकि अपना मुखतार बनायाथा फिर इन दोनोने गिरेबान चाक करडाले और बेइख्तियार झूट मूट भाईके खातिर रोतेथे और लात मुक्की मुझ पर करतेथे ॥

इसमें हाकिमके प्यादे आये इनको डांटाकि क्यों मारतेहो और मेरा हाथ पकड़ कर कोतवालके पास ले गये ये दोनोभी साथ चले और हाकिमसेभी यही कहा और बतौर रिशवतके कुछ देकर अपना इनसाफ चाहा और खून नाहकका दावी कीया हाकिमने मुझसे पूछा मेरी यह हालतथी कि मारे भूक और मार पीटके ताकत गोयाई की नथी सिर नीचे किये खड़ाथा कुछ मुहसे जबान न निकली हाकिम को भी यकीन हुआ कि यह मुकर्रर खूनी है फरमायाकि इसे मैदानमें लेजाकर फांसी दो जहां पनाह मैंने रुपै देकर इनको यहूदीके केदसे छुड़ाया था उसके इवज इनहोंने भी रुपै खरच करके मेरी जानका कसद किया ये दोनो हाजिर हैं इनसे पूछये किमेंइसमें सरे मु तफावत कहताहूं खेर मुझे लेगये जब दारको देखा हाथ जिन्दगीसे धोये सिवाय इस कुत्तके कोई मेरा रोने वाला नथा इसकी यह हालत थी कि हर एक आदमीके पांवमें लोटता और चिल्लाताथा कोई लकड़ीकोई पतथर से मारता लेकिन यह उस जगहसे नसरकता और मैं रूब किबला खड़ा हो खुदाको कहताथाकि इसवक्त तेरी जातके सिवा मेरा कोई नहीं ओछाड़े

आवे और बेगुनाहको बचावे अबतुही बचावे तोबचताहूं यह कहके तियोरा कर गिरपड़ा॥

खुदाकी हिकमतसे उस शहरके बादशाहको कुलंजकी बीमारी हुई उमराओ और हकीम जमा हुवे जो इलाज करतेथे फायदामन्द नहोताथा एकनुजूमी ने कहाकि सबसे बेहतर यह दवाहैकि मुझ ताजोंकों कुछ खैरात करो और बन्दीवानोंको आजाद करो दवासे दुआमें बड़ा असरहै वोंही बादशाही चेले कैद खानेकी तर्फ दौड़े॥

इत्तेफाकन एक उस मैदानमें आ निकला भीड़ देख कर मालूम किया किमूको सूली चढाते हैं यह सुन्तेही घोड़ेको दारके नजदीक लाकर तलवारसे तनावें काट दीं हाकिमके प्यादोंको डांटा और तंबीहकीकि ऐसे वक्तमें बादशाहकी यह हालत है तुम खुदाकेबन्देको कतल करतेहो और मुझे छुड़वा दिया तब यह दोनों भाई फिर हाकिमके पास गये और मेरे कतलके वास्ते कहा हाकिमने तो रीशवत खाईथी जो यह कहतेथे सो करताथा॥

कोतवालने इनसे कहाकि खातिर जमा रखो अब मैं इसे ऐसा कैद करताहूंकि आपसे आप मारे भूखोंके बेताब होकर जावे किसूको खबर नहो वे मुझे पकड़ लाये और एक गोशेमें रखखा उस शहरसे बाहर कोस एक पर एक पहाड़थाकि हजरत सुलेमानके वक्तमेंदेवोंने एक कुवा तंग और तारीक उसमें खोदाथा उसका नाम जिन्दान सुलेमान कहते थे जिस पर बड़ा गजब बादशाही होता उसे वहां कैद करते वुह खुद बखुद मर जाता॥

अलकिस्सः रातको चुपके ये दोनो भाई और कोतवालके हाड़ मुझे उस पहाड़ पर लेगये और उस गारमें डालकर अपनी खातिर्जमः करके फिरे ऐ बादशाह यह कुत्ता मेरे साथ चला गया जब मुझे कुवेमें गिराया तब यह उसकी मुंडेर पर लेट रहामैं अन्दर बेहोश पड़ाथा ज़रा सुर्त आई तो मैंने अपने तईं मुर्दा खयाल किया और उस मकानको गोर समझा इतमें दो शखसों की आवज कानमें पड़ी कि कुछ आपुसमें बातें करतेहैं यही मालूम किया कि नकीर मुनकिरहैं तुझसे सवाल करने आयेहैं सर सराहट रस्सीकी सुनी जैसे किसूने वहां लटकाई मैं हैरतमेंथा जमीन को टटोलता तो हड्डियां हाथमें आतीं॥

बाद एक साअतके आवाज चपड़ चपड़ मुंह चलानेकी मेरे कानमें आई जैसे कोई कुछ खाताहै मैंने पूछाकि ऐ खुदाके बन्दो तुम कौनहो खुदाके वास्ते बताओ वुह हंसे और

बोले यह जिन्दान सुलेमान् काहै और हम कैदीहैं मैंने उनसे पूछा क्या मै जीताहूं फिर खिल खिला कर हंसे और कहा अबतलक तो तू जिनदाहै पर अब मरेगा· मैंने कहा तुम क्या खातेहो जो हो मुझेभी थोड़ा दो तब झूंझला कर खाली जवाब दिया और कुछ नदिया वुह खा पी कर सोरहे मैं मारेज़ोफ़ और नाताकतीके ग़ममें पड़ा रोताथा और ख़ुदाको याद करताथा क़िबले आलम सात दिन दरियामें और इतने दिन भाईयों के बुहतानके सबब दाना न मुयस्सर आया अलावः खानेके बदले मार पीट खाई और ऐसे कैद खानेमें फसा कि सूरत रिहाईकी मुतलक खयालमें भी न आतीथी ॥

आखिर जां कन्दनीकी नौबत पहुंची कभू दम आता कभू दम निकल जाताथा लेकिन कभू कभू आधी रातको एक शख़स आता और रूमालमें रोटियां और पानी की सुराही डोरीमें बांध कर लटका देता और पुकारता वुह दोनो आदमी जो मेरे पास कैदथे ले लेते और खाते ये ऊपरसे कुत्ते ने हमेशः यह अहवाल देखते देखते अकल दौड़ाई कि जिसतरह यह शख़स रोटी पानी लट्का देता है तूभी ऐसी फिकिर कर कि कुछ उस बेकसको जो मेरा खाविन्दहै आजुका पहुंचे तो उस्कादम बचे यह खयाल करके शहरमें गया नान्बाई कीदूकानमें रोटयां चुनी हुई धरीथी कूद कर एक कुलचा मुंहमें लिया और भागा लोग पीछेदोड़े ढ़ेले मारतेथे लेकिन उसने नानको नछोड़ा आदमी थक कर फिरे शहरके कुत्ते पीछे लगे उनसे लड़ता भिड़ता रोटीको बचाये उस कुवे पर आया रोटीको अन्दर डाल दिया रोज रोशनथा मैंने रोटीको अपने पास पड़ा देखा और कुत्ते की आवाज सुनी कुलचे उठा लिया और यह कुत्ता रोटी फेक कर पानीको तलाश में गया ॥

किसी गांवके किनारे एक बुढ़ियाकी झोंपड़ीथी ठिलया और बधना पानीसे भरा हुआ धराथा और वुह बुढ़िया चरखा कात्तीथी कुत्ता कूजेके नजदीक गया चाहाकि लोटेको उठावे औरतने डांटालोटा उस्के मुंहसे छूटा घड़ेपर गिरा घड़ाफूटा बाकी बासन लुढ़क गये पानी बह चला बुढ़िया लकड़ी लेकर मारनेको उठी यह कुत्ता उस्के दामनमें लिपट गया फिर उस्के पांव पर मुंह मलने और दुम हिलाने लगा और पहाड़ की तरफ दौड़ गया फिर उस्के पास आकर कभू रस्सी उठाता कभू डोल मुंहमें पकड़ कर दिखाता

और मुंह उसके कदमों पर रगड़ता और आंचल चादरका पकड़ खेंचता खुदाने उस औरतके दिलमें रहम दियाकि डोल रस्सी को लेकर उसके साथ चली यह उसका आंचल पकड़े घरसे बाहर होकर आगे आगे हो लिया॥

आखिर को पहाड़ी पर ले आया औरतके जीमें कुत्ते की उस हरकतसे इलहाम हुआ कि इसका मियां मुकर्रर इस गारमें गिरफ्तारहै शायद उसकी खातिर पानी चाहताहै गरज बुढ़िया को लिये हुवे गारके मुंह पर आया औरतने लोटा पानीका भर कर रस्सीसे लटकाया मैंने वह बासन लेलिया और रोटीका टुकरा खाया दो तीन घूंट पानी पिया इस पेटके कुत्ते को राजी किया खुदाका शुक्र कर कर एक किनारे बैठा और खुदाकी रहमतका मुन्तजिरथा कि देखिये अब क्या होताहै यह हैवान् बे जबान उसी तौरसे रोटी लेआता और बुढ़िया के हाथ पानी पिलवाता जब भठियारोंने देखा कि कुत्ता हमेशः रोटी ले जाताहै तर्स खाकर मुकर्रर कियाकि जब इसे देखते एक रोटी उसके आगे फेंक देते और अगर वह औरत पानी नलाती तो यह उसके बासन् फोड़ डालता लाचार वहभी हर रोज एक सुराही पानी भरदेजाती इस रफीकने आबो नानेसे मेरी खातिर जमाकी और आप जिन्दानके मुंह पर पड़ा रहता इस तरह छः महीने गुजरे लेकिन जो आदमी ऐसे जिन्दानमें रहेकि दुनियाकी हवा उसको नलगे उसका क्या हाल हो निरा पोस्त और उस्तखां मुझमें बाकी रहा जिन्दगी वबाल हुई जीमें आवे कि या इलाही यह दम निकल जावे तो बिहतरहै॥

एक रोज रातको वह दोनों कैदी सोतेथे मेरा दिल उमंड आया बेइखितयार रोने लगा और खुदा की दरगाहमें नकघिसी करने पिछले पहर क्या देखताहूं कि खुदाकी कुदरतसे एक रस्सी गारमें लटकी और आवाज सहजमें सुनी कि ऐ कम बखत बदनसीब डोरीका सिरा अपने हाथमें मजबूत बांध और यहांसे निकल॥

मैंने सुन कर दिलमें खयाल किया कि आखिर भाई मुझ पर मिहर बान होकर लहूके जोश से आपही निकालने आये निहायत खुशीसे उस रस्सीको कमरमें खूब कसा जिसने मुझे उपर खींचा रात ऐसी अंधेरीथी कि जिसने मुझे निकाला उसको मैंने नपहचाना किकौनहै जब मैं बाहर आया तब उसने कहा जल्द आ यहां खड़े होनेकी जगह नहीं मुझमें ताकत न थी पर मारे डरके गिरता पड़ता पहाड़से नीचे आया देखूं तो दो घोड़े

जीन बंधे हुवे खड़े हैं उस शखसने एक पर मुझे सवार किया और एकपर आप चढ़ लिया और आगे हुआ जाते जाते दरियाके कनारे पर पहुंचा ॥

सुबह हो गई उस शहरसे दस बारह कोस निकल आये उस जवान को देखा कि खोबवो बना हुआ जिरः बकतर पहने चार आईना बांधे घोडे पर पाखर डाले मेरी तर्फ़ गज़बकी नजरोंसे घूर कर और हाथ अपना दांतोंसे काट कर तलवार मियानसे खींची और घोड़ेको जस्त करके मुझ पर चलाई मैंने अपने तईं घोड़ेसे नीचे गिराया और घिघियाने लगा कि मैं बेतकसीरहूं मुझे क्यों कतल करताहै ऐसाहब मरवत वैसे जिन्दानसे मेरे तईं तूने निकाला अब यह बेमरूअती क्या है उसने कहा सच कह तू कौनहै मैंने जवाब दिया कि मुसाफिरहूं नाहक़ की बलामें गिरफतार हो गयाथा तुम्हारे तसद्दुकसे बारे जीता निकलाहूं और बहुत बातें खुशामदकीकीं ॥

खुदाने उसके दिलमें रहम दिया शमशीर को गिलाफ़ किया और बोला खैर खोदा जो चाहे सोकरे चल तेरीजां बखशीकी जल्द सवारहो यहां तवकुफका मकान नहीं घोड़ोंको जल्दकिया और चले राहमें अफसोस खाता और पचताता जाताथा तीसरे पहरतक ऐक जजीरेमें जा पहुंचे वहां घोड़ेसे उतरा मुझेभी उतारा जीन खूगीर घोड़ोंकी पीठसे खोला और चरने को छोड़ दिया अपनेभी कमरसे हथियार खोल डाले और बेठा मुझसे बोला के बदनसीब अब अपना अहवाल कह तो मालूमहो कि तू कौनहे मैंने अपना नामो निशान बताया और जो जो कुछ बिपता बीतीथी उससे आखिर तक कही ॥

उस जवानने जब मेरी सर गुजश्त सब सुनी रोने लगा और मुखातिब हुआ कि ऐ जवान अब मेरा माजरा सुन मैं कन्या जेर बादके देशके राजा कीहूं और वुह गबरू जो जिन्दान सुलैमानमें कैदहै उसका नाम बहरः मन्दहै मेरे पिताके मंत्रीका बेटाहै ऐक रोज महाराजने आज्ञा दी कि जितने राजा और कुंवरहैं मैदानमें जेर झरोखे निकल कर तीर अन्दाजी और चौगान बाजी करें तो घुड़ चढ़ी और कसब हर ऐकका जाहिर हो ॥

मैं रानीके पास जो मेरी माता थीं अटारी पर झोझलमें बेठीथी और दाईयां और सहेलियां हाजिरथीं तमाशा देखतीथी यह दीवानका पूत सबमें सुन्दरथा और घोड़े कोकावेदे कर.कसब कर रहाथा मुझको भाया और दिलसे उस पर रीझी

मुद्दत तक यह बात गुप्त रही॥ आखिर जब बहुत व्याकुल हुई तब दाईसे कहा और ढेरसा इनाम दिया वुह उस जवानको किसू ढबसे पोशीदा मेरे घराहर में ले आई तब यहभी मुझे चाहने लगा बहुत दिन इस इश्क़ मुश्क़में काटी एक रोज चौकी दारोंने आधी रातको हथियार बांधे और महलमें आते देख कर उसे पकड़ा और राजासे कहा उसे हुकुम क़तलका किया सब अरकान दौलत ने कह सुन कर जां बख़शी करवाई तब फ़रमाया इस्को जिन्दान सुलैमानमें डाल दो और दूसरा जवान जो उसके हमराह क़ैद है उस्का भगना है उस रैनको वुहभी उसके साथथा दोनों को उस कुवेमें छोड़ दिया आज तीन बरस हुवे कि वे फसे हैं मगर किसूने नहो दरियाफ़्त किया कि यह जवान राजाके घरमें क्यों आयाथा भगवान ने मेरी पत रखी उसके शुकरानेके बदले मैंने यह परन किया है कि अन और जल उसको पहुंचाया करूं जबसे अठवारे में एक दिन आतीहूं और आठदिनका आजूका एकट्ठा दे जातीहूं॥

कलकी रात सपनेमें देखा कि कोई आदमी कहताहै कि शिताबी उठ और घोड़ा जोड़ा और कमन्द और कुछ नक़्द खर्च के वास्ते लेकर उस गार पर जा और उस बिचारे को वहांसे निकाल यह सुन कर में चौंक पड़ी और मगन हो कर मरदाना भेस किया और एक सन्दूक़चा जवाहिर और अशरफ़ीसे भर लिया और यह घोड़ा और कपड़े और जोड़ा लेकर वहां गई कि कमन्दसे उसे खेंचूं कर्ममे तेरेथा कि वैसी क़ैदसे इसी तरह छुटकारा पावे और मेरे इस करतबसे महरम कोई नहीं शायद वुह कोई देवताथा कि मेरी मखलसीकी खातिर मुझे भिजवाया खैर जो मेरे भागमेंथा सो हुआ यह कह कर पूरी कचौरी मांस अंगोछे से खोल पहले कन्द निकाल एक कटोरेमें घोला और अर्क बेद मुश्कको उसमें डाल कर मुझे दिया मैंने उस्के हाथसे लेकर पिया फिर थोड़ासा नाशता किया बाद एक साअतके मुझे लुंगी बंधवा कर दरियामें लेगई कैंचीसे मेरे सिरके बाल कतरे नाखुन लिये नहला धुलाकर कपड़े पहनाये नये सिरसे आदमी बनाया मैं दुगांना शुकराने का क़िबलेके मुंह पढने लगा वुह नाज़नीन् इस मेरी हरकतको देखती रही॥

जब निमाजसे फ़ारिग हुआ पूछने लगी कि यह तूने क्या काम किया मैंने कहा जिस खालिकने सारी खिलक़त को पैदा किया और तुझसे महबूबःसे मेरी ख़िदमत करवाई

और तेरे दिलको मुझ पर मिहरबान किया और वैसी जिन्दांसे खलास करवाया उसकी जात लाशरीक है उसकी मैंने इबादतकी और बन्दगी बजालाया और शुक्र अदा किया यह बात सुनकर कहने लगी तुम मुसलमान हो मैंने कहा शुक्र अलहम्दुलिल्लाह बोली मेरा दिल तुम्हारी बातोंसे खुश हुआ मेरे तईंभी सिखाओ और कलमा पढ़ाओ मैंने दिलमें कहा अलहम्दुलिल्लाह कि हमारे दीनकी शरीक हुई ॥

गरज मैंने कलमा अपने दीनका पढ़ा और उसे पढ़वाया फिर वहांसे घोड़ों पर सवार हो कर हम दोनों चले रातको उतरते तो वुह जिकिर दीन ईमानका करती और सुन्नी और खुश होती इसी तरह दो महीने तलक पैहम रात दिन चले गये आखिर एक विलायतमें पहुंचे कि दरमियान सरहद मुल्क जेरबाद और सरंदीपकेथी एक शहर नजर आया कि आबादीमें इस्तम्बोलसे बड़ा और आबहवा बहुत खुब और मवाफिक बादशाह उस शहरका किसरासे ज्यादः आदिल और रईयत परवर देख कर दिल निपट शाद हुआ एक हवेली खरीद करके वहां रहने लगे जब कई दिनमें सफरकी रंजसे आसूदा हुवे कुछ असबाब जरूरी दुरस्त करके उस बीबीसे मवाफिक शरःमहम्मदीके निकाह किया और रहने लगा तीन सालमें वहांके सब छोटों बड़ोंसे मिल जुल कर ऐतबार बहम पहुंचाया और तिजारतका ठाठ फैलाया और वहांके सब सौदागरोंसे बढ़ चला एक रोज वजीरकी खिदमतमें सलामके लिये चला एक मैदानमें भीड़ भाड़ देखी किसूसे पूछा कि क्यों यहां भीड़ भाड़है मालूम हुआ कि दो शख्सोंको जिना और चोरी करते पकड़ाहै और शायद खुनभी कियाहै उनको लायेहैं मुझे सुन्तेही अपना अहवाल याद आया कि एक दिन मुझभी इसी तरह सूली चढ़ाने लेगयेथे खुदाने बचा लिया आया यह कौन हैंगे कि ऐसी बलामें गिरफतार हुवेहैं भीड़को चीर कर अन्दर घुसा देखा तो यही मेरे दोनों भाईहैं कि टुंड्डियां कसे सिरपाबिरहनः उनको लिये जातेहैं उनकी सूरत देखतेही खूनमेंजोश किया और कलेजा जला मुहसिलों को एक मुट्ठी अशरफियां दीं और कहा कि एक साअत तवक्कुफ करो और वहांसे घोड़को सर पटकेंक कर हाकिमके घर गया एक दाना अनमोल याकूतका नजर गुजराना और इनकी जां बख्शी चाही हाकिमने

कहा ऐक शख्स इनका मुद्दई है ओर इनके गुनाह साबित ऊवे है ओर बादशाह का ऊकुम हो चुकाहैमें लाचारहूं ॥

ओर बऊत मिन्नत ओर जारीसे हाकिमने मुद्दईको बुलावाकर पांच हजार रुपे पर राजी किया कि वुह दावा खूनका माफ करे मेंने रुपे गिन दिये ओर लादावा लिखवालिया ओर ऐसी बलासे मखलसी दिलवाई अहां पनाह इनसे पूछिये कि सच कहताहूं या झूठ बकताहूं वे दोनों भाई सिर निचेकिये शर्मिन्दःसे खड़ेथे खैर इनको छुड़वा कर घरमें लाया हम्माम करवाकर लिबास पहन वाया दीवान खानेमें मकान रहनेको दिया उस मर्तबे अपने कबीलेको इनके रूबरू नकिया इनकी खिदमतमें हाजिर रहता ओर इनके साथ खाना खाता सोते वक्त घरमें जाता तीन बरस तक इनकी खातिर दारी में गुजरी ओर इनसेभी कोई हरकत बद जाहिर नऊई कि रंजीदगीका सबब होवे जो में सवार होकर कहीं जाता तो ये घरमें रहते ॥

इत्तफाकन वुह बीबी नेकबखत ऐक दिन हम्मामको गईथी जब दीवान खानेमें आई कोई मर्द नजर नपड़ा उसने बुरका उतारा शायद यह संझता भाई लेटा ऊआ जाग ताथा देखतेही आशक ऊआ बड़े भाई से कहा दोनोंने आपुसमें मेरे मार डालनेकी सलाहकी में इस हरकतसे मुतलक खबर नरखताथा बल्कि दिलमे कहताथा अलहमद् लिल्लाह इस मर्त्तबे अबतक इन्होंने कुछ ऐसी बात नहीकी अब इनको बजः दुरुस्त ऊई शायद गैरतको काम फरमाया ऐक रोज बाद खानेके बड़े भाई साहब आबदीदः ऊवे ओर अपने वतनकी तारीफ ओर ईरानकी खूबियां बयान करने लगे यह सुनकर दूसरेभी बिसोरने लगे मेंने कहा अगर इरदा वतनकाहै तो बिहतर में ताबे मरजीकेहूं मेरी भी यही आरजू है अब इनशा अल्लाह तआला मेंभी आपकी रिकाबमें चलताहूं उस बीबीसे दोनों भाईयोंकी उदासी का मजकूर किया ओर अपना इरादाभी कहा वुह आकिलः बोली कि तुम जानों लेकिन फिर कुछ दगा किया चाहते है ये तुम्हारी जानके दुश्मनहैं तुमने सांप आस्तीनमें पालेहैं ओर इनकी दोस्तीका भरोसा रखतेहो जो जी चाहे सो करो मूजियोंसे खबरदार रहो बहर हाल थोड़े अरसेमें तईयारी सफरकी करके खेमा मैदानमें खड़ा किया बड़ा काफला जमा ऊआ ओरमेरी सरदारी ओर काफिले वाली पर राजी ऊवे अच्छी साअत देखकर रवाना ऊआ

लेकिन इनकी तरफसे मैं अपने जानसे होशियार रहता और सब सूरतसे फर्मांबरदारी और दिलजोई इनकी करता ॥

एक रोज एक मंजिलमें मझले भाईने मजकूर किया कि एक कोस पर यहांसे एक चिश्माजारीहै मानन्द सलसबीलके और मैदानमें खुदरो कोसों तलक लाला और याय-मीन और नरगिस और गुलाब फूलाहै वाकई अजब मकान सैरकाहै अगर अपना इखतियार होता तो कल वहां जाकर तफरीह तबियतकी करते और मान्दगी भी रफा होती मैं बोला कि साहब मुखतारहैं फरमाओ तो कलके दिन मुकाम करें और वहां चलकर सेर करते फिरें ये बोला इससे क्या बिहतर ॥

मैंने हुकुम किया कि सारे काफलेमें पुकारदो कि कल मुकामहै और पकावलसे कहा कि हाजरी किसम बकिसमकी तईयार कर कल सैरको चलेंगे जब सुबह हुई हम दोनों भाइयोंने कपड़े पहन कमरबांधकर मुझे याद दिलाया कि जल्द ठंडे ठंडे चलिये और सैर कीजिये मैंने सवारी मांगी बोले पैदल जो लुतफ सैरका होताहै सो सवारीमें नहीं होता नफरोंको कहदो घोड़े डुरिया कर लेआवें ॥

दोनों गुलामोंने कलियां और कहवःदान लेलिया और साथ हुवे राहमें तीरअन्दाजी करते हुवे चले जातेथे जब काफलेसे दूर निकलगये एक गुलामको इन्होंने किसी कामको भेजा थोड़ी दूर आगे बढ़कर दूसरेकोभी उसको बुलानेको रुखसत किया कमबखती जो आई मेरे मुंहमें जैसे किसूने मुहरदेदी जो वुह चाहतेथे सो करतेथे और मुझे बातोंमें परचाये लिये जातेथे मगर यह कुत्ता साथ रहगया ॥

बहुत दूर निकलगये नचिश्मा नजर आया नगुलजार मगर एक मैदान पुर खारथा वहां मुझे पेशाब लगा मैं पेशाब करनेको बैठा अपने पीछे चमक तलवार कीसी देखी मुड़कर देखूं तो मझले भाई साहबने मुझपर तलवार मारी कि सिर दोटुकरा होगया जबतलक बोलूं कि अय जालिम मुझे क्यों मारताहै बड़े भाईने शानेपर लगाई दोनों जखम कारी लगे त्योराकर गिरा तब इन दोनों बेरहमोंने बखातिरजमा मेरे तईं चूर जखमी किया और लहूलहान कर दिया यह कुत्ता मेरा अहवाल देखकर इनपर झपका इसकोभी घाईल किया बाद उसके अपने बदनोंमें जखमोंके निशान किये और सिर पैर नंगे काफलेमें गये और जाहिर किया कि डकैतोंने उस मैदानमें हमारे भाईको कतल

किया और हमभी लड़ भिड़कर जखमी हुवे जल्दी कूच करो नहीं तो अब काफलेमें आकर सबको नंगियालेंगे काफलेके लोगोंने जो यह सुना वोहीं बदहवास हुवे और घबराकर कूच किया और चल निकले मेरे कमीनेने सलूक और खूबियां इनकी मुन रक्खीथीं जो जो मुझसे दगायेंकीथीं यह वारिदात इन झूटोंसे सुनकर जल्द खंजरसे अपने तईं हलाक किया और मर गई अय दरवेशो उस खाजे सगपरस्तने जब अपनी कैफियत और मुसीबत इस तरहसे यहां तलक कही सुन्तेही मुझे बेइखतियार रोना आया वुह सौदागर बोला कि किब्ले आलम अगर बेअदबी नहोती तो नंगा होकर मैं अपना सारा बदन खोलकर दिखाता तिसपरभी अपनी सचाई पर गिरेबान नांढे तलक चीरकर दिखाया वाकई चार अंगुल तन उसका बगैर जखमके साबुत नथा मेरे हजूर सिरसे अमामा उतारा खोपड़ीमें ऐसा बड़ा गढ़ा पड़ाथा कि एक अनार समूचा उसमें समावे अरकान दौलत जितने हाजिरथे सबने अपनी आंखे बन्दकरलीं ताकत देखनेकी नरही ॥

फिर खाजा बोला कि बादशाह सलामत जब ये भाई अपनी दानिस्तमें मेरा काम तमाम करके चले गये एक तरफ मैं और एक तरफ यह कुत्ता मेरे नजदीक जखमी पड़ाथा लहू इतना बदनसे गया कि मुतलक ताकत और होश कुछ बाकी नथा क्या जानूं दम कहां अटक रहाथा कि जीताथा जिस जगह मैं पड़ाथा विलायत सरन्दीपकी सरहदथी और एक शहर बहुत आबाद उसके करीबथा उस शहरमें बड़ा बुतखानाथा और वहांके बादशाहकी एक बेटीथी निहायत कबूल सूरत और साहब जमाल ॥

अकसर बादशाह और शाहजादे उसके इश्कमें खराबथे वहां रसम हिजाबकी नथी इसवास्ते वुह लड़की तमाम दिन हमजोलियोंके साथ सैरो शिकार करती फिरती हमसे नजदीक एक बादशाही बागथा उस रोज बादशाहसे कहकर उसी बागमें आईथी सैर की खातिर उस मैदानमें फिरतीर आनिकली कई खवासेंभी साथ सवारथीं जहां मैं पड़ाथा आई मेरा कराहना सुनकर पास खड़ी हुई मुझे इस हालतमें देखकर वेभागीं और शाहजादीसे कहा कि एक मर्दुआ और एक कुत्ता लहूमें शोर बोर पड़ाहै उनसे यह सुनकर आप नजदीक मेरे सिरपर आई अफसोससे खाकर कहा देखो तो कुछ जान

बाकी है दो चार दाइयोंने उतर कर देखा और अर्ज़की कि अबतलक तो जीताहै तुर्त फ़र्माया कि अमानत् कालीने पर लिटाकर बागमें लेचलो ॥

वहां लेजाकर जर्राह सरकारका बुला मेरे और मेरे कुत्तेके इलाजकी ख़ातिर बहुत ताकीदकी और उम्मेदवार इनाम और बख़्शिश का किया उस हज्जामने सारा बदन मेरा पोंछ पांछ कर साफ़ किया और शराबसे धोधाकर ज़ख़्मोंको टांके देकर मरहम लगाया और बेदमुश्कका अरक़ पानीके बदले मेरे हलक़में चुवाया मलिकः आप मेरे सिराने बैठी रहती और मेरी ख़िदमत करवाती और तमाम दिन् रात्में दोचार बार कुछ शोरबा याशरबत अपने हाथसे पिलाती ॥

बारे मुझे होश आया तो देखा कि मलिकः निहायत् अफ़सोससे कहतीहै किस ज़ालिम ख़ूंख़ारने तुझपर यह सितम किया बड़े बुत्सेभी नडरा बाद दस रोज़के अरक और शरबत् और माजूनोंकी कूवत्से मैंने आंख खोली देखा तो इन्द्रका अखाड़ा मेरे आसपास जमाहै और मलिकः सिर्हाने खड़ीहै ऐक आह भरी और चाहा कि कुछ हरकत् करूं ताक़त नपाई बादशाहज़ादी मिहरबानीसे बोली कि तू अपनी ख़ातिरजमा रख कुढ़मत अगर्चे किसू ज़ालिमने तेरा यह अहवाल किया लेकिन् बड़े बुत्ने मुझको तुझपर मिहरबान किया अब चंगा हो जावेगा क़सम ख़ुदाकीहै मैं उसे देखकर फिर बेहोश होगया मलिकःनेभी दरियाफ़्त किया और गुलाबपाशसे गुलाब अपने हाथसे छिड़का बीसदिन्के अरसेमें ज़ख़्म भर आये और चंगा करवाये मलिकः हमेशः रातको जब सबसो जाते मेरे पास आती और खिला पिला जाती ॥

गरज़ ऐक चिल्लेमें ग़ुसल किया बादशाहज़ादी निहायत ख़ुश हुई हज्जामको इनाम बहुतसा दिया ओ मुझको पोशाक पहनवाई ख़ुदाके फ़ज़लसे और सई और ख़बरगीरीसे मलिकः की ख़ूब चाक चौबन्द हुआ और बदन निहायत तईयार हुआ और कुत्ताभी मोटा होगया रोज़ मुझे शराब पिलाती और बातें सुन्ती और ख़ुश होती मैंभी ऐक आध नक़ल या कहानी अनूठी कहकर उसके दिलको बहलाता ॥

ऐक दिन पूछने लगी कि तुम बयान करो कि तुम कौन्हो और यह वारिदात तुमपर क्योंकर हुई मैंने सारा माजरा अउव्वलसे आख़िर तक कह सुनाया सुनकर रोने लगी और बोली कि अब मैं तुझसे ऐसा सलूक करूंगी कि अपनी सारी मुराद

भूल जावेगा मैंने कहा खुदा तुझे सलामत रक्खे तुमने नये सिरसे मेरी जां बख़्शीकीहै अबमें तुम्हारा हो रहाहूं वाके खुदाके इसी तरह मुझपर अपनी मिहरबानीकी नज़र रखियो ग़रज़ तमाम रात अकेली मेरे पास बैठी रहती और मुहब्बत रखती बाज़ेदिन दाई उसकी भी साथ रहती हरएक तौरका ज़िकिर मज़कूर सुनती और कहती जब मलिकः उठ जाती और मैं तन्हा होता कोनेमें छिपकर निमाज़ पढ़लेता ।

एकबार ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ कि मलिकः अपने बापके पास गईथी मैं ख़ातिर जमासे वज़ूकरके निमाज़ पढ़ रहाथा कि अचानक शाहज़ादी दाईसे बोलती हुई आई कि देखें अजमी इस वक़्त क्या करताहै सोताहै या जागताहै मुझे मकानपर जो नदेखा तअज्जुबमें हुई कि ऐ वह कहां गयाहै किसूसे कुछ कहगया तो नहीं कहाया कोना अंतरा देखने लगी और तलाश करनेलगी आख़िर जहां मैं निमाज़ कर रहाथा वहां आनिकली उस लड़कीने कभू निमाज़ काहेको देखीथी चुपकी खड़ी देखाकी जब मैंने निमाज़ तमाम करके दुआके लिये हाथ उठाये और सिजदेमें गया बेइख़्तियार खिलखिला कर हंसी और बोली क्या यह आदमी सौदाई होगया यह कैसी२ हरकतें कर रहाहै मैं हंसीकी आवाज़ सुनकर दिलमें डरा मलिकः आगे आकर पूछने लगी कि ऐ अजमी यह तू क्या करताथा मैं कुछ जवाब न देसका इसमें दाई बोली बला लूं तेरे सदके गई मुझे यों मालूम होताहै कि यह शख़्स मुसल्मानहै अन्देखे खुदाको पूजताहै ॥

मलिकःने यह सुनकर हाथपर हाथमारा बहुत गुस्से हुई कि मैं क्या जानतीथी कि यह तुर्कहै तभी हमारे बुतके ग़ज़बमें पड़ाथा मैंने नाहक़ इसकी परवरिशकी और अपने घरमें रक्खा यह कहती हुई चलीगई मैं सुनतेही बदहवास हुआ कि देखिये अब क्या सलूक करे मारे खौफ़के नींद उचाट होगई सुबहतक बेइख़्तियार रोया किया और आंसुओंसे मुंह धोया किया ॥

तीन दिन रात इसी खौफ़में रोते गुज़रे हरगिज़ आंख नझपकी तीसरी शब मलिकः शराबके नशेमें मख़मूर और दाई साथ लिये मेरे मकानपर आई गुस्सेमें भरी हुई और तीर कमान् हाथमें लिये बाहर चमनके किनारे बैठी दाईसे प्याला शराबका मांगापीकर कहा दाईया वह अजमी जो हमारे बड़ेबुत्के क़हरमें गिरफ़्तार है मुआं या अबतक जीताहै दाईने कहा बलाईयां लूं कुछ दमबाक़ीहै बोली कि अब वह हमारी

नज़रोंसे गिरा लेकिन् जबकि बाहर आवे दाइने मुझे पुकारा मैं दौड़ा देखूं तो मलिकः का चहरा मारे गुस्सेके तमतमा रहाहै और सुर्ख होगयाहै सलाम किया और हाथ बांधकर खड़ा हुआ ग़ज़बकी निगाहसे मुझे देखकर दाइसे बोली अगर मैं इस दीनके दुश्मनको तीरसे मारूं तो मेरी ख़ता बहज़रत माफ़ करेगा या नहीं यह मुझसे बड़ा गुनाह हुआहै कि मैंने उसे अपने घरमें रखकर ख़ातिरदारीकी ॥

दाईने कहा बादशाहज़ादीकी क्या तक़ सीरहै कुछ दुश्मन जानकर नहीं रक्खा तुमने उसपर तर्स खाया तुमको नेकीके एवज़ नेकी मिलेगी और यह अपनी बदीका समरा बड़े बुत्से पावेगा यह सुनकर कहा दाई इसे बैठनेको कह दाईने मुझे कहा कि बैठजा मैं बैठ गया मलिकःने और जाम शराबका पिया और दाइसे कहाकि इस कमबख़्तकोभी एक प्यालादे तो आसानीसे मारा जावे दाइने जामदिया मैंने बेउज़्र पिया और सलाम किया हरगिज़ मेरी तरफ़ निगाह नकि मगर कनखियोंसे चोरी २ देखती थी जब मुझे सरूर हुआ कुछ शेरपढ़ने लगा उनमेंसे एक बेत यह पढ़ी ॥

॥ बेत ॥

क़ाबूमें हूं मैं तेरे गोअबजिया तो फिर क्या ॥
खंजरतले किसूने टुक दम लिया तो फिर क्या ॥

सुनकर मुस्कराई और दाईकी तरफ़ देखकर बोली क्या तुझे नींद आतीहै दाईने मरज़ी पाकर कहा कि हां मुझपर ख़ावने ग़लबा कियाहै वह तो रुख़सत होकर जहमुमवासिल हुई बाद एक दमके मलिकःने प्याला मांगा मैं जल्द भरकर हाथ लेगया एक अदा और नाज़से मेरे हाथसे लेकर पीलिया तब मैं क़दमोंपरगिरा मलिकःने हाथ मुझपर झाड़ाबारे ज्यों त्यों उस संगदिलका दिल मुलायम हुआ और मुझपर राज़ी हुई और क़बूल किया ॥

एक रोज मलिकः कहने लगी कि अब यहां रहना मेरे और तुम्हारे हक़में अच्छा नहीं क्योंकि अगर यह बात ज़ाहिरहो तो बड़ी क़बाहतहै इसवास्ते यहांसे भाग चलना अच्छाहै मैंने कहा बात तो तुम माकूल कहतीहो लेकिन किस सूरतसे भागने पाओगी और कहांजाओगी जवाब दिया कि पहले तुम मेरे पाससे जाओ मुसाफ़िरोंके साथ सरायमें जारहो तुम वहां किश्तियोंकी तलाशमें रहियो जो जहाज़ अजमको

तरफ चले मुझे खबर कीजियो मैं इसवास्ते दाइको तुम्हारे पास अकसर भेजा करूंगी ॥

मैंने कहा तुम्हारे जानके कुर्बान् हुआ दाईको क्या करोगी बोली इसकी फिकिर सहलहै ऐक प्यालेमें जहर हलाहल पिला दूंगी यही सलाह मुकर्रर हुई जब दिन हुआ मैं सरायमें गया ऐक कोठरी किरायें लिया और वहां गारहा उस जुदाईमें फकत मुलाकातकी तवक्कःपर जीताथा जब दो महीनेमें सौदागर रूम और शाम और इसफ़हानके जमा हुवे इरादा कूचका तरीकी राहसे किया और अपना असबाब जहाज़पर चढ़ाने लगे ऐक जगह रहनेसे अक्सर आशना सूरत होगयेथे मुझ कहने लगे क्यों साहब तुम भी चलो यहां कबतलक रहोगे मैंने जवाब दिया कि मेरे पास क्याहै जो अपने वतन्को जाऊं यही ऐक लौंडी ऐक कुत्ता ऐक सन्दूक बिसात मैं रखताहूं अगर थोड़ीसी जगह बैठ रहनेको दो और उसका निवल मुकर्रर करो तो मेरी खातिरजमा हो मैंभी सवारहूं ॥

सौदागरोंने ऐक कोठरी मेरे तहतमें करदी मैंने उसे निवलका रुपेया भर दिया दिलजमई करकर किसू बहानेसे दाईके घर गया और कहा कि अम्मा तुझसे रुखसत होने आयाहूं अब वतनको जाताहूं अगर तेरी तवज्जुहसे ऐक नजर मलिकःको देखलूं तो बड़ी बातहै बारे दाइने कबूल किया मैंने कहा मैं रातको आऊंगा फलाने मकान पर खड़ा रहूंगा बोली अच्छा मैं कहकर सरायमें आया सन्दूक और बिछौने उठाकर जहाजमें लाया और नाखुदाको सौंपकर कहा कल फजर अपनी लौंडीको लेकर आऊंगा नाखुदा बोला जल्द आईयो सुबह हम लंगर उठावेंगे मैंने कहा बहुत खूब जबरात हुई उसी मकान पर जहां दाईसे वादा कियाथा जाकर खड़ा रहा पहर रात गये महलका दरवाजा खुला और मलिकः मैली कुचैली कपड़ा पहने ऐक पेटी जवाहिर की लिये बाहर निकली वुह पिटारी मेरे हवालेकी और साथ चली सुबह होते किनारे दरियाके हम पहुंचे ऐक बोट पर सवार होकर जहाजमें जाउतरे यह वफादार कुत्ताभी साथथा जब सुबह खूब रोशन हुई लंगर उठाया और रवाना हुवे बखातिरजमा चले जातेथे ऐक बन्दरसे आवाज तोपोंकी सुनकी आई सब हैरान और फिकिरमन्द हुवे

जहाजको लंगर किया और आपुसमें चरचा होने लगा कि क्या शाहबन्दर कुछ दगा करेगा तोप छोड़नेका क्या सबब है ।

इत्तफ़ाक़न सब सौदागरोंके पास खूबसूरत लौंडियांथीं शाहबन्दरके खौफसे कि मबादा छीनले सबने लौंडियोंको सन्दूकोंमें बन्द किया मैंनेभी ऐसाही किया कि अपनी शाहजादीको सन्दूकमें बैठाकर कुफुल कर दिया इस अरसेमें शाहबन्दर एक गुराब पर मे नौकर चाकर बैठा हुआ नजर आया आते आते जहाज पर आपहुंचा शायद उसके आनेका यह सबबथा कि बादशाहको राईके मरनेकी और मलिकःके गायब होनेकी जब खबर मालूम हुई मारे गैरतके उसका तो नाम नलिया मगर शाहबन्दरको हुकुम किया कि मैंने सुनाहै अजमी सौदागरोंके पास लौंडियां खूबखूबहैं सो मैं शाहजादीके वास्ते लिया चाहताहूं तुम उनको रोककर जितनी लौंडियां जहाजमें हों हुजूरमें हाजिर करोगे उन्हे देखकर जो पसन्द आवेंगी उनकी कीमत दी जावेगी नहीं तो वापस होंगी बमोजिब हुकुम बादशाहके यह शाहबन्दर इस लिये आप जहाज पर आया और मेरे नजदीक एक और शख्सथा उसके पासभी एक लौंडी खूब सूरत सन्दूकमें बन्दथी शाहबन्दर उसी सन्दूक पर आकर बैठा और लौंडियोंको निकलवाने लगा मैंने खुदाका शुक्र किया कि भला बादशाहजादीका मज़कूर नहीं गरज जितनी लौंडियां पाईं शाहबन्दरके आदमियोंने नावपर चढ़ाईं और खुद शाह जिस सन्दूक पर बैठाथा उसके मालिकसेभी हंसते हंसते पूछा कि तेरे पासभी लौंडीथी उस अहमक़ने कहा आपके कदमोंकी सौगन्द मैंनेही यह काम नहीं किया सभोंने तुम्हारे डरसे लौंडियां सन्दूकोंमें छिपाईहैं शाहबन्दरने यह बात सुनकर सब सन्दूकोंका झाड़ा लेना शुरू किया मेराभी सन्दूक खोला और मलिकःको निकालकर सबके साथ लेगया अजब तरहकी मायूसी हुई कि यह कैसी हरकत पेश आई कि तेरी जानतो मुफ्त गई और मलिकःसे देखिये क्या सलूक करे ।

उसकी फिकिरमें अपनीभी जानका डर भूल गया सारे दिन रात खुदासे दुआ मांगता रहा जब बड़ी फजर हुई सब लौंडियोंको किश्तीपर सवार करके लाये सौदागर खुश हुवे अपनी२ कनीजों के सब आये मगर एक मलिकः उनमें नथी मैंने

पूछा कि मेरी लौंडी नहीं आई इसका क्या सबब है उन्होंने जवाब दिया कि हम वाकिफ नहीं शायद बादशाहने पसन्द की होगी सब सौदागर मुझे तसल्ली और दिलासा देने लगे कि खैर जो हुआ सो हुआ तू कुछ मत उसकी कीमत हम सब बिहरी करकर तुझे देंगे मेरे हवासबाखतः हुवे मैंने कहा कि अब मैं वतन नहीं जाऊंगा किश्तीवालोंसे कहा यारो मुझेभी अपने साथ लेचलो किनारे पर उतार दीजियो वे राजी हुवे मैं जहाजसे उतरकर किश्तीमें जाबैठा वह कुत्ताभी मेरे साथ चला आया ॥

जब बन्दरमें पहुंचा ऐक सन्दूकचा जवाहिरका जो मलिकः अपने साथ लाई थी उसे तो रखलिया और सब असबाब शाहबन्दरके नौकरोंको दिया और मैं जासूसोंमें घरकहीं फिरने लगा कि शायद खबर मलिकःकी पाऊं लेकिन हरगिज सुराग नमिला और न इस बातका पता पाया ऐक रातको किसू प्रकारसे बादशाहकेभी महलमें गया और ढूंढा कुछ खबर नमिली करीब ऐक महीनेके शहरके कूचे और महल्ले छान मारे और उस गमसे अपने तईं करीब हलाकतके पहुंचाया और सौदाईसा फिरने लगा आखिर अपने दिलमें खयाल किया कि यकीन है शाहबन्दरके घरमें मेरी बादशाहजादी होवे तो होवे नहीं तो और कहीं नहीं शाहबन्दरकी हवेलीके गिर्द पेश देखता फिरता था कि कहींसेभी जानेकी राह पाऊं तो अन्दर जाऊं ॥

ऐकबदररौ नजर पड़ी कि मवाफिक आदमीकी आमदो रफ्तके मगर लोहेकी जाली उसके दहाने पर जड़ी है यह कसद किया कि इस बदररौकी राहसे चलूं कपड़े बदनसे उतारे और उस नज्जिस कीचड़में उतरा हजार मिहनतसे उस जालीको तोड़ा और संडासकी राहसे चोर महलमें गया और औरतोंकासा लिबास बना हर तरफ देखने भालने लगा ॥

इक मकानसे आवाज मेरे कानमें पड़ी कि कोई रोताहै आगे जाकर देखूं तो मलिकः है मैं देखतेही दौड़कर पांव पर गिर पड़ा मलिकःने मुझे गले लगा लिया हम दोनोंपर ऐक दम बेहोशीका आलम होगया जब हवास बजा हुवे मैंने कैफियत मलिकः से पूछी बोली जब शाहबन्दर सब लौंडियोंको किनारे पर लेगया मैं खुदासे यही दुआ मांगतीथी कि मेरा भेद कहीं खुल नजाय कि मैं पहचानी नजाऊं और तेरी जानपर आफत नआवे लेकिन हरगिज किसूने दरियाफ्त नकिया कि यह मलिकः है शाहबन्दर

हर ऐकको बनजर खरीदारी देखताथा जब मेरी बारी हुई मुझे पसन्द करकर अपने घरमें चुपके भेज दिया औरोंको बादशाहके हजूर गुजराना ॥

मेरे आपने जब उनमें मुझे नदेखा सबको रुखसत कियाबुह सब पर पेश मेरेवास्ते कियाथा अबयों मशहूर कियाहै कि बादशाहजादी बहुत बीमारहै अगर मैं जाहिर नहुई कोई दिनमें मेरे मरनेकी खबर सारे मुल्कमें उड़ेगी तो बदनामी बादशाहकी नहोवे लेकिन अब मैं इस खयालमें हूं कि शाहबन्दर मुझसे और इरादा दिलमें रखता है और हमेशः साथ सोनेको बुलाताहै मैं राजी नहीं होती अजबखिफ्त पावताहै अब तक मेरी रजा मन्दी मंजूरहै लिहाजा चुप होरहताहै पर हैरान हूं इस तरह कहां तक निभेगी सो मैंनेभी जीमें यह ठैरायाहै कि जब मुझसे कुछ और कसद करेगा तो मैं अपनी जान दूंगी और मर रहूंगी लेकिन तेरे मिलनेसे ऐक और तदबीर दिलमें सूझीहै खुदा चाहे तो सिवाय उस फिकिरके दूसरी कोई तरह मखलसीकी नजर नहीं आती मैंने कहा फरमाओ तो वुह कौनसी तदबीरहै कहने लगी अगर तू सई और मिहनत करे तो होसके मैंने कहा फर्मांबरदारहूं अगर हुकुम हो तो जलती आगमें कूद पड़ूं और सीढ़ी पाऊं तो तुम्हारी खातिर आसमान पर चला जाऊं जो कुछ फरमाओ सो बजा लाऊं ॥

मलिकःने कहा तू बड़े बुतके बुतखानेमें जा और जिस जगह जूतियां उतारतेहैं वहां ऐक सियाह टाट पड़ा रहताहै उस मुल्कको रसमहै कि जो कोई मुफलिस और मुहताज होजाताहै उस जगह वुह टाट ओढ़कर बैठताहै यहांके लोग जो जीयारतको जातेहैं मुवाफिक अपने अपने मकदूरके उसे देतेहैं जब दो चार दिनमें माल जमा होताहै पछे ऐक खिलत बड़े बुतकी सरकारसे देकर रुखसत करतेहैं वुह तवंगर होकर चला जाताहै कोई नहीं मालूम करता कि यह कौनथा तूभी जाकर उस पलासके नीचे बैठ और हात मुंह अपना खूब तरहसे छिपाले और किसूसे नबोल ॥

बाद तीनदिनके ब्राहमन और बुत परस्त हरचन्द तुझे खिलअत देकर रुखसत करें हरगिज़ नउठ जब मिन्नत करें तब तू बोलयो कि मुझे रुपया पैसा कुछ दरकार नहीं मैं मालका भूखा नहीं मैं मजलूमहूं फरयादको आयाहूं अगर ब्राहमनोंकी माता मेरी दादरस हो बेहतर नहीं तो बड़ा बुत मेरा इनसाफ करेगा और उस

ज़ालिमसे यही बड़ा बुत मेरी इनसाफको पहुंचेगा जबतक वुह मा बाह्मनांकी आप तेरे पास नआवे बह्लतेरा कोई मनावे तू राज़ी नहोना आख़िर लाचार होकर वुह तेरे नज़दीक आवेगी वुह बहुत बूढ़ीहै होसा चालीस बरसकी उमरहै और छित्तीस बेटे उसके जने हुवे बुतख़ानेके सरदारहैं और उसका बड़े बुतके पास बड़ा दरजाहै इस सबब उसका इतना बड़ा हुकुमहै कि जितने छोटे बड़े उस मुल्कके हैं उसके कहनेको अपनी सआदत जानतेहैं जो वुह फ़रमातीहै बसरोचिश्म मानतेहैं उसका दामन पकड़ कर कहीयो कै माई अगर मुझ मुसाफ़िर मज़लूमका इनसाफ़ ज़ालिमसे नकरेगी तो मैं बड़े बुतकी ख़िदमतमें टक्करें मारूंगा।

आख़िर वुह रहम खाकर तुझसे मेरी सुफ़ारिश करेगा जब वुह तेरा हाल पूछे तू कहियो कि मैं अजमका रहनेवालाहूं बड़े बुतकी ज़ीयारतकी ख़ातिर और तुम्हारी अदालत सुनकर काले कोसोंसे यहां आयाहूं कई दिनों आरामसे रहा मेरी बीबी भी मेरे साथ आईथी वुह जवानहै और सूरत शकलभी अच्छीहै और आंख नाकसे दुरुस्तहै मालूम नहीं कि फ़लाबन्दरने उसे क्योंकर देखा बज़ोर मुझसे छीनकर अपने घरमें डाल दिया और हम मुसलमानोंका यह क़ायदःहै कि जो नामहरम औरतको अपनी देखे या छीनले तो वाजिबहै कि उसको जिस तरह बने मार डालें और अपनी ओरतको लेलें और नहीं तो खाना पीना छोड़दें क्यों कि जब तलक वुह जीता रहे वुह औरत ख़ाविन्दपर हरामहै अब यहां लाचार होकर आयाहूं देखिये तुम क्या इनसाफ़ करतीहो मलिकःने मुझे यह सब सिखा पढ़ा दिया मैं रुख़सत हो उसी तावदानकी राहसे निकला और वुह जोगी आहनी अमारी सुबह होते बुतख़ानेमें गया और वुह सियाह पलास उढ़कर बैठा तीन रोज़में इतना रुपैया और अशरफ़ी और कपड़ा मेरे नज़दीक जमा हुआ कि एक अम्बार लग गया चौथे दिन पढ़े भजन करते और गाते बजाते ख़िलअत् लिये मेरे पास आये और रुख़सत् करने लगे मैं राज़ी नहुआ और दुहाई बड़े बुतकी दी कि मैं गदाई करने नहीं आया बल्कि इनसाफके लिये बड़ेबुत और ब्राह्मनोंकी माताके पास आयाहूं जबतलक अपनी दाद नपाऊंगा यहांसे नजाऊंगा येसुनकर उस पीरज़ालके रूबरू गये और मेरा अहवाल बयान किया बाद उसके एक चोबे आया और मेरे तईं कहने लगा कि चल माता बुलातीहै मैं वोहीं टाठ कालीं सिरसे पांवतक ओढे हुये

बुतखानेमें गया देखताहूं कि जड़ाऊ सिंहासन पर जिसमें लाल अलमास और मोती मूंगा लगा हुआ है बड़ा बुत बैठाहै और एक कुरसी ज़रीं पर फ़र्श मारूफ़ बिछाहै उसपर एक बुढ़िया सियाह पोश मसनद तकिये लगाये और दो लड़के दस बारह बरसके एक दाहने एक बायें शान शौकतसे बैठीहै मुझे आगे बुलाया मैं अदबसे आगे गया और तख़तके पायेको बोसा दिया फिर उसका दामन पकड़ लिया उसने मेरा अहवाल पूछा मैंने उसी तरह जिस तौरसे मलिकाने तालीम कर दियाथा ज़ाहिर किया सुनकर बोली कि क्या मुसलमान अपनी इस्त्रियोंको उभ्भलमें रखतेहैं मैंने कहा हां तुम्हारे बच्चोंकी ख़ैर हो यह हमारी रसम क़दीमहै ॥

बोली कि तेरा अच्छा मज़हबहै मैं अभी हुकुम करतीहूं कि शाहबन्दर मै तेरी जूरू आनकर हाज़िर होताहै और उस गीदीको ऐसी सियासत् करूं कि बादिदीगर कोई ऐसी हरकत नकरे और सबके कान खड़ेहों और डरें अपने लोगोंसे पूछने लगी कि शाहबन्दर कौनहै उसकी यह मजाल हुई कि बेगानी त्रियाको बज़ोर छीन लेताहै लोगोंने कहा कि फलाना शख़्सहै यह सुनकर उन दोनों लड़कोंको जो पास बैठेथे फ़रमाया कि जलदी इस मानसको साथ लेकर बादशाहके पास जाओ और कहो कि माता फ़रमातीहै कि हुकुम बड़े बुत्का यहहै कि शाहबन्दर आदमियोंपर ज़ोर ज़ियादती करताहै चुनाचे इस गरीबकी औरतको छीनलियाहै उसकी तकसीर बड़ी साबित हुई जलद उस गुमराहके मालका तालोकः करकर इस तुरकके कि हमारा मनज़ूर नज़रहैं हवाले कर नहींतो आज रातको तो सत्यानास होगा और हमारे ग़ज़बमें पड़ेगा वे दोनो तिफ़्ल उठकर मंडपसे बाहर आये और सवार हुये सब पगड़े शंख बजाते और आरती गाते जिलौमें हालिये॥

ग़रज़ वहांके बड़े छोटे जहां उन लड़कोंका पांव पड़ताथा वहांकी मट्टी तबर्रुक जानकर उठालेते और आंखोंसे लगाते उसी तरह बादशाहके क़िले तक गये बादशाहको ख़बर हुई नंगे पांव इसतकबालकी ख़ातिर निकल आया और उनको बड़े मानसे लेजाकर अपने पास तख़्तपर बैठाया और पूछा आज क्योंकर तशरीफ़ फ़रमाना हुआ उन दोनों साहब बचोंने माकी तरफ़से जो कुछ सुन आयेथे कहा और बड़े बुतकी ख़फ़गीसे डराया बादशाहने सुनतेही फ़रमाया बहुतख़ूब और

अपने नौकरोंको हुकुम किया कि मुहस्सिल जावें और शाहबन्दरको मैं उस औरतके हुजूरमें हाज़िर करें तो मैं तकसीर उसकी तजवीज़ करके सज़ादूं यह सुनकर मैं अपने दिलमें घबराया कि यह बात तो अच्छी नहुई अगर शाहबन्दरके साथ मलिकः कोभी लावें तो परदः फाशहोगा और मेरा क्या अहवाल होगा दिलमें निहायत खौफज़दः होकर खुदाकी तरफ रुजूकी लेकिन मेरे मुंहपर हवाइयां उड़ने लगीं और बदन कांपने लगा लड़कोंने मेरा रंग देखकर शायद दरयाफ्त किया कि यह हुकुम इसकी मरज़ीके मुवाफक नहुआ वोहीं खफा हो बरहम हो उठे और बादशाहको झिरककर बोले कि मरदक तू देवाना हुआहै जो फरमाबरदारीसे बड़े बुतकी निकला और हमारे बचनको झूठ समझा जो दोनोंको बुलवाकर तहकीक किया चाहताहै अब खबरदार तू गज़बमें बड़े बुतके पड़ा हमने तुझे हुकुम पहुंचा दिया अब तू जाने और बड़ा बुत जाने इस कहनेसे बादशाहकी अजब हालत हुई कि हाथ जोड़कर खड़ाहो गया और सिरसे पांवतलक राशा होगया मिन्नतकरके मनाने लगा ये दोनों हरगिज़ नबैठे लेकिन खड़े रहे इसमें जितने अमीर अमराओ वहां हाज़िरथे एक मुंह होकर बदगोई शाहबन्दरकी करने लगे कि वुह ऐसाही हरामज़ादा बदकार और पापीहै ऐसी ऐसी हरकतें करताहै कि हुजूरमें बादशाहके क्या क्या अरज़ करें जो कुछ ब्राह्मणोंकी माताने कहला भेजाहै दुरुस्तहै इसवास्तेकि हुकम बडेबुतकाहै यह दरोग क्योंकर होगा बादशाहने जब सबकी ज़बानी एकही बात सुनी अपने कहनेसे बहुत खिजिल और नादिम हुआ जल्द एक खिलअत पाकीज़ः मुझेदी और हुकुमनामा अपने हाथसे लिख उसपर दस्ती मुहर कर कर मेरे हवाले किया और एक रुक्का मादर ब्राह्मणोंको लिखा और जवाहिर अशरफियोंके ख्वान् लड़कोंके रूबरू पेशकश रखकर रुखसत किया मैं खुशी बखुशी बुतखानेमें आया और उस बुढ़ियाके पास गया बादशाहका खत जो आयाथा उसका यह मज़मूनथा कि मवाफिक हुकुम हुजूरके इस मर्द मुसलमानको खिदमत शाहबन्दरकी मुकर्रर हुई और खिलअत दीया गया अब यह उसके कतल करनेका मुख़तारहै और सारा माल असबाब उसका तर्का हुआ जो चाहे सोकरे उम्मैदवारहूं कि मेरी तकसीर माफ़हो ब्राह्मणोंकी माने खुश होकर फ़रमाया कि बुतखानेमें नौबत बजे और पांचसौ सिपाही बरकन्दाज़ मेरे साथ कर दिये और

ऊकुम किया कि बन्दरमें जाकर शाहबन्दरको दस्तगीर करके इस मुसलमानके हवाले करें जिसतरहके ऋजाबसे इस्को जीचाहे उसे मारे श्रीर सिवाय इस अजीजके कोई महलसरामें दाखिल नहोवे श्रीर उस्के माल श्रो खजानेको अमानत इस्के हवाले करें जब यह बखशी रुखसत् करे रसीद श्रीर साफीनामा उस्से लेकर फिर आवें श्रीर एक सरापा कुतेबुजरुगकी सरकारसे मेरे तईं देकर सवारकरवा बिदा किया जब मैं बन्दरमें पऊंचा एक आदमीने बढ़कर शाहबन्दरको खबरकी वुह हैरानसा बैठाथा कि मैं जा पऊंचा गुस्सातो दिलमें भरही रहाथा देखतेही शाहबन्दरको तलवार खेंचकर ऐसी गरदनमें मारी कि उस्का सिर अलग भुटासा उड़ गया श्रीर वहांके गुमाश्ते खजानची दारोगोंको पकड़वाकर सब दफतर जब्त किये श्रीर मैं महलमें दाखिल ऊआ मलिकासे मुलाकातकी आपसमें गले लगकर रोये श्रीर शुक्र खुदाका किया मैंने उस्को उसने मेरे आंसू पोंछे फिर बाहर मसनद पर बैठकर अहलकारोंको खिलअतेंदीं श्रीर अपनी २ खिदमतोंपर सबको बहाल किया नोकर श्रीर गुलामोंको सर्फराजी दी वुह लोग जो मंडपसे मेरे साथ आयेथे हर एकको इनआम बखशिश देकर श्रीर उनके जमादार रिसालदारको जोड़े पहनाकर रुखसत किया श्रीर जवाहर बेशकीमत श्रीर थान नूरबाफी श्रीर शाल बाफी श्रीर जरदोजी श्रीर जिनस तुहफे हर एक मुल्कके श्रीर नकद बऊतसा बादशाहकी नजरकी खातिर श्रीर मवाफिक हर एक उमरावोंके दरजेबदरजे पशायनके लिये श्रीर सब पशोंके तकसीम करनेकी खातिर अपने साथ लेकर बाद एक महीनेके मैं कुतकदेमें आया श्रीर उस माताके आगे बतरीक भेंटके रखा उसने एक श्रीर खिलअत सरफराजीकी मुझे बखशी श्रीर खिताब दिया फिर बादशाहके दरबारमें जाकर पेशकश गुजरानी श्रीर जो जो जुल्म श्रो फसाद शाहबन्दरने ईजाद कियाथा उसके मौकूफ करनेकी खातिर अरजकी इस सबबसे बादशाह श्रीर अमीर सौदागर सब मुझसे राजी ऊये बऊत नवाजिश मुझपर फरमाई श्रीर खिलअत श्रीर घोड़ा देकर मनसब जागीर इनायतकी श्रीर आबरू ऊरमत बखशी ॥

अब बादशाहके हजूरसे बाहर आया शागिर्द पेशोंको श्रीर अहलकारोंको इसना कुछ देकर राजी किया कि सब मेरा कलमा पढ़ने लगे गरज मैं बऊत मुरफः उलहाल होगया श्रीर निहायत चैन आरामसे उस मुल्कमें मलिकःसे उकुद बांधकर रहने लगा

और खुदाकी बन्दगी करने लगा मेरे हमसायके बाइस रइयत प्रजा सब खुश थे महीनेमें ऐकबार कुतखानेमें और बादशाहके हजूर आता जाता बादशाह रोज बरोज जियादः सरफराजी फरमाते ॥

आखिर मुसाहबतमें मुझे दाखिल किया मेरी बेसलाह कोई काम नकरता निहायत बेफिकरीसे जिन्दगी गुजरने लगी मगर खुदाही जानताहै अकसर अन्देशः इन दोनों भाईयोंका दिलमें आता कि वे कहां होंगे और किस तरह होंगे बाद मुद्दत दो बरसके ऐक काफिला सौदागरोंका मुल्क जेरबादसे उस बन्दरमें आया वे सब कस्द अजमका रखतेथे उन्होंने यह चाहा कि दरयाकी राहसे अपने मुल्कको जावें वहां कायदः यह था कि जो कारवां आता उसका सरदार सौगात औ तुहफा हर ऐक मुल्कका मेरे पास लाता नजर गुजराता दूसरे रोज मैं उसके मकान पर जाता दहकी बसरीक महसूलके उसके मालसे लेता और परवानगी कूचकी देता इसी तरह वह सौदागर जेरबादके भी मेरी मुलाकातको आये और बेबहा पेशकश लाये दूसरे दिन मैं उनके खीमेमें गया देखा तो दो आदमी फटे पुराने कपड़े पहने गठरी सिरपर उठाकर मेरे रूबरू लातेहैं बाद मुलाहजः करनेके फिर उठा लेजातेहैं और बड़ी मेहनतसे खिदमत कर रहेहैं मैंने खूब पहचान कर जो देखा तो यही मेरे दोनों भाईहैं उसवक्त गैरत और हिम्मतने नचाहा कि उनको इस तरह खिदमतगारीमें देखों जब मैं अपने घरको चला आदमियोंको कहा कि इन दोनों शखसोंको लिये आओ जब उनको लाये फिर लिबास औ पोशाक बनवादी और अपने पास रखा उन बदजातोंने फ़िर मेरे मारनेका मनसूबा कर कर ऐक रोज आधी रातमें सबको गाफिल पाकर चोरोंकी तरह मेरे सिरहाने आपहुंचे मैंने अपनी जानके डरसे चौकीदारोंको दरवाजे पर रखाथा और यह कुत्ता वफादार मेरी चारपाईकी पट्टी तले सोताथा ज्यों इन्होंने तलवारें मियानसे खेंचीं पहले कुत्तेने भोंक कर उन पर हमलः किया उसकी आवाजसे सब जाग पड़े मैंभी हड़बड़ाकर चौंका आदमियोंने उनको पकड़ा मालूम हुआ कि आपहीहैं सब लानतें देने लगे कि बावजूद इस खातिरदारीके यह क्या हरकत उनसे जहूरमें आई ॥

बादशाह सलामत तब तो मैंभी डरा मसल मशहूरहै ऐक खता दो खता तीसरी खता मादरबखता दिलमें यही सलाह ठैरी कि अब इनको मुकय्यद करूं लेकिन अगर

बंदीखानेमें रखूं तो इनका कौन खबर गीरां रहेगा भूख पियाससे मरजायेंगे या कोई और खांमजायेंगे इसवास्ते कफसमें रखाहै कि हमेशः मेरी नज़रोंके तले रहें तो मेरी खातिर जमा रहे मबादा आंखोंसे ओझल होकर कुछ और मकर करें और इस कुत्तेकी इज़्ज़त उसकी नमकहलाली और वफादारीका सबबहै सुबहान् अल्लाह आदमी बेवफा बदतर हैवान वफासे है मेरी यह सरगुजश्तथी जो हुज़ूरमें अर्जकी अब ख़ाह कतल फरमाइये या जां बख्शी कीजिये हुकुम बादशाहका है ॥

मैंने सुनकर उस जवानपर आफरींकी और कहा कि तेरी मुरव्वतमें कुछ खलल नहीं और इनकी बेहयाई और हरामजादगीमें हरगिज़ कसूर नहीं सचहै कुत्तेकी दुमको बारह बरस गाड़ो तौभी टेढी रहै उसके बाद मैंने हकीकत उन बारहों लालकी कि उस कुत्तेके पट्टेमेंथे पूछी ख़ाजः बोला कि बादशाह की सदुबीस सालकी उमर हो उसी बन्दरमें जहां मैं हाकिमथा ॥

बाद तीन चार सालके एक रोज़ बालाखाने पर महलके कि बलन्दथा वास्ते सैर और तमाशा दरया औ सहराके मैं बैठाथा नागाह एक तरफ जंगलमें कि वहां शाहराह नथी दो आदमीकी तसवीरसी नजर आई कि चले आतेहैं दूरबीन लेकर देखा तो अजब शकलके इनसान दिखाई दिये चोवदारोंको उनके बुलानेकेवास्ते दौड़ाया जब वे आये मालूम हुआ कि एक औरत और एक मर्दहै रण्डीको महल सरामें मलिकःके पास भेज दिया और मर्दको रूबरू बुलाया देखा तो एक जवान बरस बीस बाईसका दाढ़ी मूछ आगाजहै लेकिन धूपकी गरमीसे उसके चेहरेका रंग काले तवेकासा होरहा है और सिरके बाल और हाथोंके नाखून बढ़कर बनमानसकी सूरत बन रहीहै और एक लड़का बरस तीन चारका कांधेपर और दो आलीमें कुरतेकी भरी हुई हैंकलकी तरह गलेमें डाले अजब सूरत और अजब वज़ा उसकी देखी मैंने निहायत् हैरान् होकर पूछा ऐअजीज़ तू कौनहै और किसमुल्कका बाशिन्दःहै और यह क्या तेरी हालत्है वह जवान् बेअख्तियार रोनेलगा और वह हमयानी खोलकर मेरे आगे जमीनपर रखी और बोला वास्ते खुदाके कुछ खानेको दो मुद्दतसे घास और बनासपतियां खाता चला आताहूं एक ज़रा कूवत् मुझमें बाकी नहीं रही बोलों

नान् औ कबाब और शराब मैंने मंगवादी वुह खाने लगा इतनेमें ख़ाजःसरा महलसे कई थैलियां और उसके बावर्चीके पाससे लेआया मैंने उन सबको खुलवाया हरएक किसमके जवाहिर देखे कि एक२ दानः उनका ख़राज सलतनतका चाहिये ॥

ऐकसे ऐक खुशनुमा डौलमें और तौलमें और आबदारीमें और उनकी जोत पड़नेसे सारा मकान् रंगारंग होगया जब उसने टुकड़ा खाया और एक जामदारूका पिया और दम्लिया हवासबजा हुये तब मैंने पूछा येपत्थर तुझे कहां हाथ लगे जवाब दिया कि मेरा वतन विलायत् आज़र बायजान है लड़कपनमें घरबार मा बापसे जुदा होकर बहुत सख़तियां खैंचीं और एक मुद्दत् तलकमैं जिन्दः दरगोरथा और कईबार मलकुलमौतके पंजेसे बचाहूं मैंने कहा ऐ मर्द आदमी मुफ़स्सल कह तो मालूमहो तब वुह अपना अहवाल बयान करने लगा कि मेरा बाप सौदागर पेशःथा हमेशः सफर हिंदोस्तान् औ रूम औ चीन औ खता औ फरंग्का करता जब मैं दस बरसका हुआ बाप हिंदोस्तानको चला मुझे अपने साथ लेजानेको चाहा हरचन्द वालिदःने और खाला ममानी फुफीने कहा कि अभी यह लड़काहै लाइक सफरके नहीं हुआ वालिदने नमाना और कहा कि मैं बूढ़ा हुआ अगर यह मेरे रूबरू तरबीयत नहोगा तो यह हसरत गोरमें लेजाउंगा मर्द बच्चाहै अब नसीखेगा तो कब सीखेगा ॥

यह कहकर मुझे ख़ाह मख़ाह साथ लिया और रवानः हुआ खैरो आफियत्से राहकटी जब हिंदोस्तान्में पहुंचे कुछ जिनस वहां बेची और वहांकी सोगात लेकर जेरबादके मुल्कको गये यहभी सफर बखूबी हुआ वहांसेभी ख़रीद फरोख्त करके जहाज़पर सवार हुये कि जलदी वतन्में पहुचें बाद एक महीनेके एकरोज़ आंधी और तूफान् आया औ मेंह मूसलधार बरसने लगा सारा ज़मीन आसमान् धुवांधार होगया और पतवार जहाज़की टूटगई नाखुदा सिर पीटने लगे दसदिन तलक हवा और मौज जिधर चाहतीथी लिये जातीथी ग्यारहवें रोज़ एक पहाड़से टक्कर खाके पुरजे२ होगया नमालूम बाप और नौकर चाकर और असबाब कहां गया ॥

मैंने अपने तईं एक तखतेपर देखा तीन रात और दिन वैसा बेअखतियार चला गया चौथे दिन किनारेपर जालगा मुझमें फकत् जान बाकीथी उसपरसे उतरकर घुटनोंसे चलकर बारे किसू नकिसूतरह ज़मीन्पर पहुंचा दूरसे खेत नज़र आये और

बहुतसे आदमी वहां जमाथे लेकिन् सब सियाहफाम और नंगे मादरजाद मुझसे कुछ बोले लेकिन् मैंने उनकी ज़ुबान नसमझी वुह खेत जिनांकाथा वुह आदमी आगका अलाव जलाकर बूटोंके होले करतेथे और खातेथे और वहीं बस्तेथे मुझेभी इशारत करने लगे कि तूभी खा मैंनेभी एक मुट्ठी उखाड़कर भूने और फांकने लगा थोड़ासा पानी पीकर एक गोशेमें सोरहा॥

बाद देरके जबजागा उनमेंसे एक शख्स मेरे नज़दीक आया और राहदिखाने लगा मैंने थोड़ेसे चने और उखेड़ लिये और उस राहपर चला एक लकोदक मैदान था गोया सहराय कयामत्का नमूना कहा चाहिये वुही बूंट खाता हुआ चलाजाताथा बाद चारदिनके एक किला नज़र आया जब पास गया तो एक कोट देखा बहुत बलन्द तमाम् पत्थरका और हरएक अलंग उसकी दो दो कोसकी और दरवाज़ा एक पत्थरका तराशा हुआ एक कुफल बड़ासा जड़ाथा लेकिन् वहां इनसान्का निशान नज़र नपड़ा वहांसे आगे चला एक टीला देखा कि उसकी खाक सुरमेके रंग सियाहथी जब उस टीलेके पार हुआ तो एक शहर नज़र पड़ा बहुत बड़ा गिर्द शहरपनाह और जाबजा बुर्ज एक तरफ शहरके दरयाथा बड़े पाटका जाते जाते दरवाजे परगया और कदम् अन्दर रखा एक शखसको देखा पोशाक अहलफरंगकी पहने हुये कुरसीपर बैठाहै ज्यों उसने मुझे अजनबी मुसाफीर देखा पुकारा कि आगे आओ मैंने जाकर सलाम किया नेहायत् मेहरबानीसे सलामका जवाब दिया तुर्त मेज़पर पावरोटी और माखन् और मुर्गका कबाब और शराब रखकर कहा पेट भरकर खाओ मैंने थोरासा खाया और पिया और बेखबर होकर सोया जब रात होगई आंख खुली हाथ मुंह धोया फिर मुझे खाना खिलाया और कहा ऐ बेटा अपना अहवाल कह जो कुछ मुझपर गुज़राथा सब कह सुनाया तब बोला कि यहां तू क्योंकर आया मैंने दिक होकर कहा शायद तू देवानःहै मैंने बाद मुद्दतकी मेहनतके अब बस्तीकी सूरत देखीहै खुदाने यहां तलक पहुंचाया और तू कहताहै क्यों आया कहने लगा अब तू आराम कर कल जो कहना होगा कहूंगा॥

जब सुबहः हुई बोला कोठरीमे फावड़ा और छलनी और तोबड़ाहै बाहर लेआ मैंने दिलमें कहा कि खुदा जाने रोटी खिलाकर क्या मेहनत् मुझसे करवायेगा

आखिर वुह सब निकाल कर उसके रूबरू लाया तब उसने फर्माया कि उस टीलेपर और एक गज़के मवाफिक गढाखोद्‌ वहांसे जो कुछ निकले इस कफनीमें छान् जो नहन्सके उसे इस तोबड़ेमें भरकर मेरे पासला मैं वुह सब चीजें लेकर वहां गया और उसनाही खादकर छान् छून् कर तोबड़ेमें डाला देखा तो रंग बरंगके जवाहिरथे उनकी जोतसे आंखें चोंधिया गईं उसी तरह थैलेको मुंहा मुंह भरकर उस अजीज़के पास लेगया देखकर बोला कि जो इसमे भराहै तूले और यहांसे जा कि तेरा रहना इस शहरमें खूब नहीं मैंने जवाब दिया कि साहबने अपनी जानिबमें बड़ी मेहरबानगी की कि इतना कुछ कंकर पत्थर दिया लेकिन् मेरे किस कामका जब भूखा हूंगा तो इनको चबा सकूंगा नपेट भरेगा पस अगर औरभी दो तो मेरे किस काम आवेंगे वुह मर्द हंसा और कहने लगा कि मुझको तुझपर अफसोस आताहै कि तूभी हमारी मानन्द मुल्क अजमका मुतवतनहै इस लिये मैं मना करताहूं नहीं तू जान अगर ख़्वाहमख़्वाह यही क़स्‌द है कि शहरमें जाऊं तो मेरी अंगूठी लेता जा जब बाजारके चौकमें जावे तो एक शख़्स सफेद रीश वहां बेठा होगा और उसकी सूरत शकल मुझसे बहुत मुशाबःहै मेरा बड़ा भाईहै उसको यह छाप दीजियो तो वुह तेरी खबरगीरी करेगा और जो कुछ वुह कहे उसी मवाफिक काम कीजियो नहीं तो मुफ्त मारा जायगा और मेरा हुकुम यहीं तलकहै शहरमें मेरा दखल नहीं मैंने वुह अंगूठी उससे ली और सलाम करकर रुखसत हुआ शहरमें गया बहुत खासा शहर देखा कोचः बाजार साफ और जन औ मर्द बेहिजाब आपुसमें खरीद फरोख़्त करते सब खुशलिबास मैं सैरकरता और तमाशा देखता जब चौकके चौराहेमें पहुंचा ऐसा इजदिहामथा कि थाली फेंकिये तो आदमीयोंके सिरपर चली जाय खिलकतका यह ठठबंधाथा कि आदमीको राह चलना मुशकिलथा जब कुछ भीड़ छटी मैंभी धक्कम धुक्का करता हुआ आगे गया बारे उस अजीज को देखा कि एक चौकीपर बैठाहै और एक जड़ाऊ जमाधर रूबरू धराहै मैंने जाकर सलाम किया और वुह मुहर दी नज़र गज़बसे मेरी तरफ देखा और बोला क्यों तू यहां आया और अपने तईं बलामें डाला मगर मेरे बेवकूफ भाईने तुझे मना नकियाथा मैंने कहा उन्होंने तो कहा लेकिन मैंने नमाना और तमाम कैफियत अपनी अउवलसे आखिर तक कह सुनाई वुह शख़्स उठा और मुझे साथ लेकर अपने घरकी तरफ चला उसका

मकान बादशाहों कासा देखनेमें आया और बहुतसे नोकर चाकर उसके थे जब खिलवतमें जाकर बैठा बमुलाअेमत बोला कि अै फरजन्द यह क्या तूने हिमाकतकी कि अपने पांवसे गोरमें आया कोई भी इस कमबखत तिलिसमाती शहरमें आताहै मैंने कहा मैं अपना अहवाल पेशतरकह चुकाहूं अब तो किसमत लेआई लेकिन शफक्कत फरमाकर यहां कीराह और रसमसे मुत्तले कीजये तो मालूम करूं कि इसवास्ते तुमने और तुम्हारे भाईने मुझे मनाकिया तब वुह जवांमर्द बोला कि बादशाह और तमामरईस इस शहरके रांदे हुयेहैं अजब तरहका उनका रवइया और मजहबहै यहां बुतखानेमें एक बुतहै कि शैतान उसके पेटमें से नाम और जात और दीन हर किसूका बयान कर्ताहै पस जो कोई गरीब मुसाफिर आताहै बादशाहको खबर होतीहै ॥

उसे मन्दरमें लेजाताहै और बुतको सजदः करवाताहैं अगर डण्डवतकी तो बेहतर नहीं तो बेचारेको दरयामें डुबोदेताहै अगर वुह चाहेकि दरयासे निकल भागे तो आलत और खुसये उसके लंबेहो जातेहैं ऐसेकि जमीन् में घिसटते हैं मारेबोझके वुह हरगिज् चल नहीं सकता ऐसा कुछ तिलिस्म इस शहरमें बनायाहै मुझको तेरी जवानीपर रहम आताहै मगर तेरी खातिर एक तदबीर करताहूं कि भला कोई दिन तो तू जीता रहै और इस अजाबसे बचे मैंने पूछा वुह क्या सूरत् तजवीजकीहै इरशादहो कहने लगा तुझे कदखुदा करूं और वजीरकी लड़की तेरी खातिर ब्याह लाऊं मैंने जवाब दिया कि वजीर अपनी बेटी मुझसे मुफलिसको कब देगा मगर जब उनका दीन कबूल करूं सो यह मुझसे न होसकेगा कहने लगा इस शहरकी यह रस्महै कि जो कोई उस बुतको सजदः करे अगर फकीरहो और बादशाहको बेटी मांगे तो उसकी खुशीकी खातिर हवाले करें और उसे रंजीदः नकरें और मेरा भी बादशाहके नजदीक ऐतिबारहै और अजीज रखताहै लेहाजा सब अरकान् और अकाबिर यहांके मेरी कदर करतेहैं और बीच एक हफतेके दोदिन बुतकदेमें जियारतको जातेहैं और इबादत् बजा लातेहैं चुनाचे कल सबजमा होवेंगे मैं तुझे लेजाउंगा यहकहकर खिला पिलाकर सुला रखा जब सुबह हुई मुझे साथ लेकर बुतखानेकी तरफ् चला वहां जाकर जो देखा तो आदमी आते जाते हैं ओ परस्तिश करते हैं बादशाह और अमीर

बुतके साम्हने परीओंके पास सिर नंगे किये अदबसे दुज़ानू बैठेथे और नाकदखुदा लड़कीयां और लड़के खूब सूरत जैसे हूरगिलमान् चारों तरफ सफ बांधे खड़ेथे तब वुह अजीज़ मुझसे मुखातिब हुवा कि अबमैं जोकुछ कहुं मैंने कबूल किया कि जो फरमावो सो बजालाऊं बोलाकि पहले बादशाहके हाथ पावोंको बोसादे बाद उसके वज़ीरका दामन् पकड़ मैंने वैसाही किया बादशाहने पूछा कि यह कोनहै और क्या चहताहै उस मर्दने कहा यह जवान् मेरे रिश्तेमेंहै बादशाहकी कदम्बोसीकी आरजूमें दूरसे आयाहै इस तवक्कोपर कि वज़ीर उसको अपनी गुलामीमें सरबुलन्द करे अगर हुकुम बुति बड़ोंका और मरज़ी हुजूरकी होय बादशाहने पूछा कि हमारा मज़हब और दीन को आईन कबूल करेगा तो मुबारकहै वहीं बुतखानेका नक्कारखाना बजने लगा और भारी खिलअत मुझे पहनाई और एक रस्सी सियाह मेरे गलेमें डालकर खेंचते हुये बुतके सिंहासनके आगे लेजाकर सजदः करवाकर खड़ा किया बुतसे आवाज़ निकली कि ऐखुशःआमदे खूब हुआ कि तू हमारी बन्दगीमें आया अब हमारी रहमत् और इनायतका उम्मैदवाररह यह सुनकर सब खिलकतने सजदः किया और जमीनमें लोटने लगे और पुकारे धनहै क्यों नहो तुम ऐसेही ठाकुरहो जब शाम हुई बादशाह और वजीर सवार होकर वजीरके महलमें दाखिल हुये और वजीरकी बेटीको अपने तोर की रीत रसम करके मेरे हवाले किया और बहुतसा दान दहेज दिया और बहुत मिन्नतवार हुये कि बमोजिब हुकुम बड़े बुतके इसे तुम्हारी खिदमतमें दियाहै ऐक मकानमें हम दोनोंको रखा उस नाज़नीनको जो मैंने देखा तो फिलवाके उसका आलम परीकासाथा नखसिखसे दुरस्त जो जो खूबियां पदमिनी की सुनी जातीहैं सो सब उसमें मौजूदथीं बफरागत तमाम मैंने सुहबतकी और खत उठाया सुबहको गुसल करके बादशाहके मुजरेमें हाजिर हुआ बादशाहने खिलअत दामादीकी इनायतकी और हुकुम फरमाया कि हमेशः दरबारमें हाजिर रहा करे आखिरको बाद चन्दरोजके बादशाह की मुसाहिबतमें दाखिल हुआ बादशाह मेरी सोहबतसे नेहायत महजूज होते और अकसर खिलअत और इनआम इनायत करते अगरचे दुनियाके मालसे मैं गनीथा इसवास्ते कि मेरे कबीलेके पास इतना नकद वो जिनस और जवाहिरथा कि जिसकी हद नथी दो सालतक बहुत ऐश आरामसे गुजरी इत्तफाकन वजीरज़ादी

को पेट रहा जब सतवांसा हुआ और आठवां महीना गुजरकर पूरे दिन हुये पेरें लगीं दाई जनाई आई तो मुवा लड़का पेटमेंसे निकला उसका विस असाको चढ़ा वुहभी मर गई मैं मारे गमके दीवानः होगया कि यह क्या आफत टूटी उसके सिरहाने बैठा रोताथा ऐक बारगी रोनेकी आवाज सारे महलमें बलन्द हुई और चारों तरफसे औरतें आने लगीं जो आतीथी ऐक दुहत्तर मेरे सिरपर मारती और अपनी कुल और बूनको नंगा करके मेरे मुंहके मुकाबिल खड़ी रहती और रोना शुरू करती इतनी रडियां इकट्ठी हुईं कि मैं उनके चूतरोंमें छिप गया नजदीकथा कि जान निकल जावे ॥

इतनेमें किसूने पीछेसे गरेबान मेरा खेंचकर घसीटा देखूं तो वुही मर्द अजमीहै जिसने मुझे ब्याहाथा कहने लगा कि अहमक तू किस लिये रोताहै मैंने कहा ऐ जालिम तूने यह क्या बात कही मेरी बादशाहत लुटगई आराम खानःदारीका गया गुजरा तू कहता है क्यों गम करताहै हंसके बोला कि अब अपनी मौतकी खातिर रो मैंने पहलेही तुझे कहाथा कि शायद इस शहरमें तेरी अजल लेआईहै सोही हुआ अब सिवाय मरनेके तेरी रिहाई नहीं आखिर लोग मुझे पकड़कर बुतखानेमें लेगये देखा तो बादशाह और उमरा और रईयत प्रजा वहां जमाहैं और वजीरजादोंका माल असबाब सब धराहै जो चीज जिसका जी चाहताहै लेताहै और उसकी कीमतके रुपये धर देताहै ॥

गरज सब असबाबके नकद रुपै हुये उन रुपैयोंका जवाहिर खरीदा गया और ऐक सन्दूकमें नाज हलुवा और गोश्तके कबाब और मेवा खुश्क वो तर और खानेकी चीजें लेकर भरी और लाश उस बीबीकी ऐक सन्दूकमें रख सन्दूक आबुसेका ऐक शुतर पर चढ़वाया और मुझे सवार किया और सन्दूकचा जवाहिरका मेरी बगलमें दिया और सारे ब्राह्मण आगेआगे भजन करते वो शंखबजाते चले और पीछे ऐक खिलकत मुबारक बाद कहती हुई साथ होली इस तौरसे उसी दरवाजेसे कि मैं पहले रोज आयाथा शहरके बाहर निकला जोंहीं दारोगःकी नजर मुझपर पड़ी रोने लगा और बोला ऐ कमबख्त अजलगिरफ्तः मेरी बात नसुनी और इस शहरमें आकर मुफ्त अपनी जान दी मेरी तकसीर नहीं मैंने मना कियाथा यह बात कही लेकिन मैं तो हक्कावक्का होरहाथा नजबानयारी देतीथी कि जवाबदूं नहोसहाम् बजाये कि देखिये अंजाम मेरा क्या होताहै ॥

आखिर उसी किलेके पास जिस्का मैंने पहले रोज़ दरवाजः बन्द देखाथा लेगये और बहुतसे आदमियोंने मिलकर कुफलको खोला ताबूत और सन्दूकको अन्दर लेचले एक पखिल मेरे नज़दीक आया और समझाने लगा कि मानस एक दिन जनम पाताहै और एक रोज़ नासहोताहै दुनियाका यही आगम है अब यह तेरी स्त्री और पूत और धन और चालीसदिनका असबाब भोजन्का मौजूदहै इस्को ले और यहां रह जबतलक बड़ा बुत तुझपर मेहरबान होवे मैंने गुस्सेमें चाहा कि उस बुतपर और वहांके रहनेवालोंपर और इस रीत रस्मपर लानत करूं और उस ब्राह्मणको धौल थप्पड़ करूं वही मर्द अजमी अपनी जबानमें माने हुआ कि खबरदार हरगिज़ दम्मत्मार अगर कुछ भी बोला तो उसी वक्त तुझे जलादेंगे खैर जो तेरी किसमतमें था सो हुआ अब खुदाके करमसे उम्मेदवार रह शायद अल्लाह तुझे यहांसे जीतानिकाले॥

आखिर सब मुझे तन्हा छोड़कर उस हिसारसे बाहर निकले और दरवाजः फिर बन्द करदिया उस वक्त मैं आपनी तन्हाई और बेबसीपर बेवखतियार रोया और उस औरतकी लोथपर लातें मारने लगा कि मुरदार अगर तुझे जन्तेही मरजानाथा तो व्याह काहेको कियाथा और पेटसे क्यों हुई थी मारमूरकर फिर चुपका बैठा इसमें दिन चढ़ा और धूप गर्म हुई सिरका भेजा पकने लगा घबराहट्के मार रूह निकलने लगी जिधर देखताहूं मुरदोंकी हड्डीयां और सन्दूक जवाहरके ढ़ेरलगेहैं तब कई सन्दूक पुरानेले कर नीचउपर रखे कि दिनको धूपसे और रातको ओससे बचावहो आप पानीकी तलाशकरने लगा एकतरफ झरनासा देखा कि किलेकी देवारमें पत्थरका तराशा हुआ घड़ेके मुंहके मवाफिकहै बारे कई दिन उस पानी और खानेसे जिन्दगी हुई॥

आखिर आजुकः तमाम हुआमैं घबराया और खुदाकी जिनाबमें फरयादकी तुरत ऐसा मालूमहै कि दरवाजः कोट्का खुला और एक मुरदेको लाये उस्के साथ एक पीरमर्द आया जब उसे भी छोड़कर गये यह दिलमें आया कि इस बूढ़ेको मारकर उस्के खानेका सन्दूक सबका सबलेले एकसन्दूकका पाया हाथमें लेकर उस्के पास गया वह बेचारः सिरजानूपर धरे हैरान् बैठाथा मैंने पीछेसे आकर उस्के सिरमें ऐसा माराकि सिर फटकर मगज़ निकल्पड़ा और फिलफौर जांबहक तसलीम हुआ

उस्का आजुकः लेकर मैं खानेलगा मुद्दत्तक यही मेरा कामथा कि जो जिन्दः मुर्दे के साथ आता उसेमैं मार डालता और खानेका असबाब लेकर बफरागत् खाता बाद कितनी मुद्दत्के एक मरतबः ऐक लड़की ताबूतके हमराह आई नेहायत् कबूल सूरत् मेरे दिलने चाहाकि उसेभी मारूं उन्ने मुझे देखा और मारे डरके बेहोश होगई मैं उस्का भी आजुकः उठाकर अपने पास लेआया लेकिन अकेला नखाया जब भूख लगती खाना उस्को नजदीक लेजाता और साथ मिलकर खाता जब उस औरतने देखा कि मुझे यह शख्स नहीं सताता दिन् बदिन् उस्की वहशत् कम हुई और रामहोती चली मेर मकान्में आने जाने लगी ऐक रोज् उस्का अहवाल पूछा कि तू कोनहै उसने जवाब दिया कि मैं बादशाहके वकीलकी बेटीहूं अपने चचाके बेटेसे मनसूब हुईथी शबअरूसीके दिन उसे कुलंज हुआ ऐसा दर्दसे तड़पने लगा कि ऐक आनकी आन्में मरगया मुझे उस्के ताबूतके साथ लाकर यहां छोड़गयेहैं तब उसने मेरा अहवाल पूछा मैंने भी तमाम् कमाल बयान किया और कहा खुदाने तुझे मेरी खातिर यहां भेजाहै वुह मुस्कराकर चुपकी होरही ॥

उसी तरह कई दिनमें आपुसमें मुहब्बत जियादः होगई मैंने उसे अरकान मुसल मानीके सिखाकर कलमा पढ़ाया और मुहब्बतकी वुहभी हामिलः हुई ऐक बेटा पैदा हुआ करीब तीन बरसके इसी सूरतसे गुजरी जब लड़केका दूध बढ़ाया ऐक रोज बीबीसे कहा कि यहां कबतलक रहेंगे और किस तरह यहांसे निकलेंगे वुह बोली खुदा निकाले तो निकलें नहीं तो ऐक रोज योंही मरजायेंगे मुझे उस्के कहने पर और अपने रहने पर कमाल रिक्कत आई रोते रोते सोगया ऐक शख्सको ख्वाबमें देखा कि कहता है परनालेकी राहसे निकलनाहै तो निकल मैं मारे खुशीके चोंक पड़ा और औरतको कहा कि लोहेकी मेखें और सीखें जोपुराने सन्दूकोंमेंहैं जमा करके ले आओ तो मैं इस्को कुशाद करूं गरज मैं उस मोरीके मुंहपर मेख रखकर पत्थरोंसे ऐसा ठोंकता कि थक जाता ऐक बरसकी मेहनतमें वुह सूराख इतना बड़ा हुआ कि आदमी निकल सके ॥

बाद उस्के मुर्दोंकी आस्तीनोंमें अच्छे २ जवाहिर चुनकर भरे और साथ लेकर

उसी राहने हम तीनों बाहर निकले खुदाका शुक्र किया और बेटेको कांधे पर बैठा लिया ऐक महीना ऊआहे कि राह छोड़कर मारे डरके जंगल पहाड़ोंकी राहसे चला आताहूं जब भूख लगतीहै घास पात खाताहूं कुवत बात कहनेकी मुझमें नहीं यह मेरी हकीकतहै जो तुमने सुनी बादशाह सलामत मैंने उसकी हालत पर तरसखाया और हमाम करवाकर अच्छा लिबास पहनवाया और अपना नाइब बनाया और मेरे घरमें मलिकःसे कई लड़के पैदा ऊये लेकिन खुर्दसालीमें मरमर गये ऐक बेटा पांच बरसका होकर मुवा उसके गममें मलिकःनेभी वफात पाई मुझे कमाल गम ऊआ और वुह मुल्क बगैर उसके काटने लगा दिल उदासीहोगया इरादा अजमका किया बादशाहसे अर्ज करकर खिदमत शाहबन्दरकी उस जवानको दिलवादी इस अरसेमें बादशाहभी मर गया मैं इस वफादार कुत्तेको और सब माल खजानः जवाहिर साथ लेकर नैशापूरमें आरहा इसवास्ते कि मेरे भाईयोंके अहवालसे कोई वाकिफ नहोवे मैं ख़्वाजः सगपरस्त मशहूर ऊआ और इस बदनामीमें दुगना महसूल आजतक बादशाह ईरानकी सरकारमें भरताहूं ॥

इत्तफाकन यह सौदागर बच्चा वहां गया उसके वसीलेसे जहांपनाहका कदम बोस किया मैंने पूछा क्या यह तुम्हारा फरजन्द नहीं ख़्वाजेने जवाब दिया किबलः आलम यह मेरा बेटा नहीं आपहीकी रईयतहै लेकिन अब मेरा मालिक और वारिस जो कुछ कहिये सो यहीहै यह सुनकर सौदागरबचेसे मैंने पूछा कि तू किस ताजिरका लड़का है और तेरे मा बाप कहां रहतेहैं उस लड़केने जमीन चूमी और जानकी अमानमांगी और बोला कि यह लौंडी सरकारके वजीरकी बेटीहै मेराबाप हजूरके इताबमें बसबब इसी ख़्वाजेके लालोंके पड़ा और ऊकुमयों ऊआ कि अगर ऐक सालतक उसकी बात कुरसीनशीन नहोगी तो जानसे मारा जायेगा मैंने सुनकर यह भेस बनाया और अपने तईं नेशापूर पऊंचाया खुदाने ख़्वाजेको मै कुत्ते और लालोंके हजूरमें हाजिर कर दिया आपने तमाम अहवाल सुन लिया उम्मेदवारहूं कि मेरे बूढ़े बापकी मखलसीहो ॥

यह बयान वजीरजादीसे सुनकर ख़्वाजःने ऐक आह की और बेइख़तियार गिरपड़ा जब गुलाब उस पर छिड़का गया तब होशमें आया और बोला कि हाय कमबख़ती इतनी दूरसे यह रंज औ मेहनत खेंचकर मैं इस तवक्कः पर आयाथा कि इस सौदागर

बचेको अपना फरज़न्द कहूंगा और अपने माल मताका इसको हिब:नामा लिखदूंगा तो मेरा नाम रहेगा और सारा आलम इसे ख़्वाजःज़ादा कहेगा सो मेरा ख़याल ख़ाम हुआ इस औरतसे होकर मुझ मर्द पीरको ख़राब किया मैं रण्डीके चरित्रमें पड़ा अब मेरी वुह कहावत हुई घरमें रहें न तीर्थ गये मूंड मुंडाये फ़ज़ीहत भये ॥

अलक़िस्सः मुझे उसकी बेक़रारी और नालः ज़ारी पर रहम आया ख़्वाजेको नज़दीक बुलाया और कानमें मुज़दः उसके वसलका सुनाया कि ग़मगीन मतहो इसीसे तेरी शादी करदेंगे ख़ुदाचाहे तो औलाद तेरी होगी और यही तेरी मालिक होगी इस ख़ुश ख़बरीके सुनेसे फ़िलजुमलः उसको तसल्ली हुई तब मैंने कहा कि वज़ीरज़ादीको महलमें लेजाओ और वज़ीरको पहलत्ख़ानेसे भेजाओ और हमाममें नहलाओ और ख़िलअत सरफ़राज़ीकी पहनाओ और जल्दी मेरे पास लेआओ जिस वक़्त वज़ीर आया फ़र्श तक उसका इस्तक़बाल फ़रमाया और अपना बुज़ुर्ग जानकर गले लगाया और नयेसिरसे क़लमदान् वज़ारतका इनायत् किया ख़्वाजेकोभी जागीर औ मनसब दिया और अच्छी साअत् देखकर वज़ीरज़ादीसे निकाह पढवाकर मनसूब किया कई सालमें दो बेटे और एक बेटी उसके घरमें पैदा हुई चुनांचे बड़ा बेटा मुल्क उलतिजार है और छोटा हमारी सरकारका मुख़्तार है औ दरवेशो मैंने इस लिये यह नक़ल तुम्हारे साम्हनेकी कि कलकी रात दो फ़क़ीरोंकी सरगुज़श्त मैंने सुनीथी अब तुम दोनों भी जो बाक़ी रहेहो यह समझो कि हम उसी मकान्में बैठेहैं और मुझे अपना ख़ादिम और इस घरको अपना तकियः जानो बेवसवास अपनी अपनी सैरका अहवाल कहो और चन्दे मेरे पास रहो जब फ़क़ीरोंने बादशाहकी तरफ़से बहुत् ख़ातिरदारी देखी कहने लगे ख़ैर जब तुमने गदाओंसे उलफ़तकी तो हम दोनोंभी अपना माजरा बयान करतेहैं सुनिये ॥

॥ सैर तीसरे दरवेशकी ॥

तीसरा दरवेश कोट बांध बैठा और अपनी सैरका बयान् इस तरहसे करने लगा ॥

अहवाल इस फ़क़ीरका औ दोस्तां सुनो ।
याने जो मुझपर बीतीहै वुह दास्तां सुनो ॥

जो कुछ कि शाह इश्कने मुझसे कि सलूक ।

तफसीलवार करताहूं उसका बयां सुनो ॥

कि यह कमतरीन बादशाहजादा अजमकाहै मेरे वलीन्यामत् वहांके बादशाहथे और सिवाय मेरे कोई फरजन्द नरखतेथे मैं जवानीके आलममें मुसाहबोंके साथ चौपड़ गंजीफा शतरंज तख्तःनर्द खेलाकरता या सवार होकर सैर शिकारमें मशगूल रहता ॥

एक दिनका यह माजराहै कि सवारी तइयार करवाकर और सब यार आशना ओंको लेकर मैदान्की तरफ निकला बाज़ बहरी जुर्रः बाशा मुरखाब और तीतरोंपर उड़ाता हुआ दूर निकल गया अजब तरहका एक किता बहारका नजर आया कि जिधर निगाह जातीथी कोसोंतलक सबज़ और फूलोंसे लाल ज़मीन् नज़र आतीथी यह समा देखकर घोड़ोंकी बागें डाल दीं और कदम् कदम् सैर करते हुये चले जातेथे नागाह उस सहरामें देखा कि एक काला हिरन उसपर ज़रबफत्की झूल औ भंवरकली मुरस्सेकी औ घूंगरू सोनेके ज़रदोज़ी पट्टेमें टके हुये गलेमें पड़े खातिरजमासे उस मैदान्में कि जहां इनसान्का दखल नहीं और परन्दःपर नहीं मारता चरता फिरता है हमारे घोड़ोंके सुमकी आहट् पाकर चौकन्ना हुआ और सिर उठाकर देखा और आहिस्तः २ चला ॥

मुझे उसको देखनेसे यह शौक हुआ कि रफीकोंसे कहा कि तुम यहीं खड़े रहो मैं उसे जीता पकड़ूंगा खबरदार तुम कदम् आगे नबढाइयो और मेरे पीछे नआइयो और घोड़ा मेरे रानोंतले ऐसा परन्दथा कि बारहा हिरनोंके उपर दौड़ाकर उनकी करछालोंको भुलाकर हाथोंसे पकड़ २ लियेथे उसके अकब दौड़ाया वुह देखकर छलांगें भरने लगा और घोड़ाभी बादसे बातें करताथा लेकिन् उसकी गर्दको नपहुंचा वुह रहवार भी पसीने २ होगया और मेरीभी जीभ मारे प्यासके चटखने लगी पर कुछ बस् नचला शाम होने लगी और मैं क्या जानूं कहांसे कहां निकल आया लाचार होकर उसे भुलावा दिया और तरकशमेंसे तीर निकालकर और कुरबान्से कमान् संभालकर चिल्लेमें जोड़कर कशिश कान्तलक लाकर रान्को उसकी ताक अल्लाह अकबर कहकर मारा बारे पहलाही तीर उसके पांवमें तराजू हुआ तब लंगड़ाता हुआ पहाड़के

दामन की सिमत चला फकीरभी घोड़ेपरसे उतर पड़ा और पापियादः उसके पीछे लगा उसने कोहका इरादा किया और मैंनेभी उसका साथ दिया कई उतार चढ़ावके बाद एक गुमबज नजर आया जब पास पहुंचा एक बागचा और एक चिश्मा देखा वुह हिरन नजरोंसे गाइब होगया मैं नेहायत थकाथा हाथ पांव धोने लगा॥

एक बारगी आवाज रोनेकी उस बुर्जके अन्दरसे मेरे कानमें आई जैसे कोई कहता है के बच्चे जिसने तुझे तीर मारा मेरी आहका तीर उसके कलेजेमें लगियो वुह अपनी जवानीसे फल नपावे और खुदा उसको मेरासा दुखिया बनावे मैं यह सुनकर वहां गया देखा तो एक बुजर्ग रेश सफेद अच्छी पोशाक पहने एक मसनद पर बैठाहै और हिरन आगे लेटाहै उसको जांगस तीर खेंचताहै और बद्दुआ देताहै॥

मैंने सलाम किया और हाथ जोड़कर कहा कि हजरत सलामत यह तकसीर नादानिस्तः इस गुलामसे हुई मैं यह नजान्ताथा खुदाके वास्ते माफ करो बोला कि बेजबानको तूने सतायाहै अगर अनजान यह हरकत तुझसे हुई अल्लाह माफ करेगा मैं पास जाबैठा और तीर निकालनेमें शरीक हुआ बड़ी दिक्कतसे तीरको निकाला और जखममें मरहम भरकर छोड़ दिया फिर हाथ धोधाकर उस पीर मर्दने कुछ हाजरी जो उस वक्त मौजूदथी मुझे खिलाई मैंने खापीकर एक चारपाई पर लम्बीतानी॥

मांदगीके सबब खूब पेट भरकर सोया उस नींदमें आवाज नोहजारीकी कानमें आई आंखें मलकर जो देखताहूं तो उस मकानमें नवुह बूढ़ाहै नकोई औरहै अकेला मैं पलंग पर लेटाहूं और वुह दालान खाली पड़ाहै चारों तरफ भयानक होकर देखने लगा एक कोनेमें परदा पड़ा नजर आया वहां जाकर उसे उठाया देखा तो एक तख्त बिछाहै और उस पर एक परीजाद औरत बरस चौदः एककी महताबकी सूरत और जुलफें दोनों तरफ छूटीं हुईं हंसता चेहरा फरंगी लिबास पहने हुये अजब अदासे देखतीहै और बैठीहै और वुह बुजर्ग अपना सिर उसके पांव पर धरे बेइखति-यार रो रहाहै और होश हवास खोरहाहै॥

मैं उस पीर मर्दका यह अहवाल और उस नाजनीनका हुसन जमाल देखकर मूरछा गया मुरदेकी तरह बेजान होकर गिर पड़ा वुह मर्द बुजर्ग यह मेरा हाल

देखकर शीशा गुलाबका लेआया और मुझपर छिड़कने लगा जब मैं जीता उठा उस माशूकके मुकाबिल आकर सलाम किया उसने हरगिज नहाथ उठाया और नहोंठ हिलाया मैंने कहा ऐ गुलबदन इतना गरूर करना और जवाब सलामका नदेना किस मजहबमें दरुस्तहै ॥

॥ बैत ॥

कम बोलना अदाई हरचन्द पर न इतना ।
मुंदजाय चश्मि आशक तोभी वुह लबनखोले ॥

वास्ते उस खुदाके जिसने तुझे बनायाहै कुछ तो मुंहसे बोल हमभी इत्तफाकन यहां आ निकलेहैं मेहमानकी खातिर जरूरहै मैंने बहुतेरी बातें बनाईं लेकिन कुछ काम नआईं वुह चुपकी बुतकी तरह बैठी सुनाकी तब मैंनेभी आगे बढ़कर हाथ पांव पर चलाया जब पांवका छेड़ा तो सख्त मालूम हुआ आखिर यह दरियाफ्त किया कि पत्थरसे इस लालको तराशाहै और आजरने इस बुतको बनायाहै तब उस पीर मर्द बुत परस्तसे पूछा कि मैंने तेरे हिरनकी टांगमें खपरामारा तूने इस इश्कके नावकसे मेरा कलेजा छेद कर वार पार किया तेरी दुआ कबूल हुई अब इसकी कैफियत मुफस्सल बयान कर कि यह तिलस्म क्यों बनायाहै और तू बस्तीको छोड़कर जंगल पहाड़ क्यों सेताहै तुझपर जो कुछ बीतीहै मुझसे कह ॥

जब उसका बहुत पीछा लिया तब उसने जवाब दिया कि इस बातने मुझे तो खराब किया क्या तूभी सुनके हलाक हुआ चाहताहै मैंने कहा लो अब बहुत मकर जकर क्या मतलबकी बात कहो नहीं तो मारडालूंगा मुझे नेहायत दरपै देखकर बोला ऐ जवान हकताला हरऐक इनसानको इश्ककी आंचसे बचावे देख तो इस इश्कने क्या क्या आफतें बरपाकीहैं इश्कहीके मारे औरत खाविन्दके साथ सती होतीहै और अपनी जान खोतीहै और फरहाद और मजनूंका किस्सा सबको मालूमहै तू उसके सुननेसे क्या फल पावेगा घरबार दौलत दुनिया छोड़कर निकल जावेगा ॥

मैंने जवाब दिया बस अब अपनी दोस्ती तहकर रखो इस वक्त मुझे अपना दुश्मन समझो अगर जान अजीजहै तो साफ कहो लाचार होकर आंसू भर लाया और कहने लगा कि मुझ खान-खराब की यह हकीकतहै कि बन्देका नाम नामान सइयाह है मैं बड़ा

सौदागरथा इस सिवमें तिजारतके सबब हफ्त इकलीमकी सैरकी और सब बादशाहों की खिदमतमें रसाई हुई ॥

एक बार यह खयाल जीमें आया कि चारों दांग मुल्क तो फिरा लेकिन जजीरः फरंगकी तरफ नगया और वहांके बादशाहको और रईयत वो सिपाहको नदेखा और रसम राह वहांकी कुछ नदरयाफ़्त हुई एक दफे वहांभी चला चाहिये रफीकों और शफीकोंसे सलाह लेकर इरादा किया और तुहफा जहां तहांका जो वहांके लाइकथा लिया और एक काफिला सौदागरोंका इकट्ठा करकरजहाज पर सवार होकर रवानः हुआ हवा जो मुवाफिक पाई चाइः महीनोंमें उस मुल्कमें जा दाखिल हुआ शहरमें डेरा किया अजब शहर देखा कि कोई शहर उस शहरकी खूबीको नहीं पहुंचा हर एक बाजार वो कूचेमें पुख़्ता सड़कें बनी हुई और छिड़काव किया हुआ सफाई ऐसी कि एक तिनका कहीं पड़ा नजर नआया कूड़ेका तो क्या जिकरहै और इमारतें रंगबरंग की और रातको रस्तोंमें दुरस्तः कदम बकदम रोशनी और शहरके बाहर बागात कि जिनमें अजाइब गुलबूटे और मेवे नजर आये कि शायद सिवाय बिहिश्तके कहीं और नहोंगे जो वहांकी तारीफ करूं सो बजाहै ॥

गरज सौदागरोंके आनेका चरचा हुआ एक ख़्वाजःसरा मातबर सवार होकर कई खिदमतगार साथ लेकर काफिलेमें आया और बेपारियोंसे पूछा कि तुम्हारा सरदार कौनसाहै सभोंने मेरी तरफ इशारतकी वुह महली मेरे मकानमें आया मैं ताजीम बजा लाया बाहम सलाम अलेक हुई उसको सोजनी पर बैठाया तकिये की तवाजा की बाद उसको मैंने पूछा कि साहबके तशरीफ लानेका क्या बाइसहै फरमाइये जवाब दिया कि शाहजादीने सुनाहै कि सौदागर आयेहैं और बहुत जिनस लायेहैं लेहाजा मुझको हुकुम किया कि जाकर उनको हजूरमें लेआओ पस तुम जो कुछ असबाब लाइक बादशाहों की सरकार हो साथ लेकर चलो और सआदत आस्तानः बूसीको हासिल करो ॥

मैंने जवाब दिया कि आजतो मांदगीके बाइस कासिरहूं कल जानमालसे हाजिरहूं जो कुछ इस आजिजके पास मौजूदहै नजर गुजराऊंगा जो पसन्द आवे माल सरकारका है यह वादः करकर और अतर पान देकर ख़्वाजःसराको रुखसत किया और सब

सौदागरोंको अपने पास बुलाकर जो जो तुहफा जिसके पासथा लेलेकर जमा किया और जो मेरे घरमें था वुहभी लिया और सुबहःके वक्त दरवाजे पर बादशाही महलके हाजिर हुआ॥

चारोदारोंने मेरी खबर अर्जकी हुकुम हुआ कि हजूरमें लाओ वुही ख्वाजःसरा निकला और मेरा हाथ हाथमें लेकर दोस्तीकी राहसे बातें करता हुआ लेचला पहले ख्वासपुरेसे होकर एक मकान आलीशानमें लेगया ऐ अजीज तू बावर नकरेगा यह आलम नजर आया गोया पर काट कर परियोंको छोड़ दियाहै जिस तरफ देखताथा निगाह गिरजातीथी पांव जमींनसे उखड़े जातेथे बजोर अपने तईं संभालता हुआ हुजूर पहुंचा जोंहीं बादशाहजादी पर नजर पड़ी गशकी नौबत हुई और हाथ पांवमें रअशा होगया बहरसूरत सलाम किया दोनों तरफ दाहने बायें सफबसफ नाजनीन परी चेहरः दस्तबस्तः खड़ींथीं मैं जो कुछ जिनस जवाहिर और पारचः पोशाकी और तुहफे अपने साथ लेगयाथा जब कई किश्तियां हजूरमें चुनी गईं अजबस्कि सब जिनस लायक पसन्दकेथी खुश होकर खानसामानके हवाले हुईं और फरमाया कि कीमत इसकी बमोजिबफर्दके कल दी जायगी मैं तसलीमात बजा लाया और दिलमें खुश हुआ कि इस बहानेसे भला कलभी आना होगा जब रुखसत होकर बाहर आया तो सौदाईकी तरह कहता कुछथा और मुंहसे कुछ निकलताथा उसी तरह सरामें आया लेकिन हवास बजानथे सब आश्ना दोस्त पूछने लगे कि तुम्हारी क्या हालतहै मैंने कहा इतनी आमद रफतसे गरमी दिमागमें चढ़गईहै गरज वुह रात ज्योंत्यों काटी फजरको फिर जाकर हाजिर हुआ और उसी ख्वाजःसराके साथ फिर महलमें पहुंचा वुही आलम जो कल देखाथा देखा बादशाहजादीने मुझे देखा और हर एकको अपने अपने काम पर रुखसत किया जब परछा हुआ खिलवतमें उठ गईं और मुझे तलब किया जब मैं वहां गया बैठनेका हुकुम किया मैं आदाब बजा लाकर बैठा फरमाया कि यहां जो तू आया और यह असबाब लाया इसमें मुनाफा कितना मंजूरहै मैंने अर्जकी कि आपके कदम देखनेकी बड़ी ख्वाहिशथी सो खुदाने मयस्सर की अब मैंने सब कुछ भरपाया और दोनों जहानकी सआदत हासिल हुई और कीमत जो कुछ फेहरिस्तमेंहै निस्फकी खरीद है और निस्फ नफाहै फरमाया नहीं जो कीमत तूने लिखीहै वुही इनायत होगी

बल्कि औरभी इनआम दिया जायगा बशर्ते कि ऐक काम तुझसे हो सके तो हुकुम करूं ॥

मैंने कहा कि गुलामका जानमाल अगर सरकारके काम आवे तो मैं अपने नसीब की खूबी समझूं और आंखोंसे करूं यह सुनकर कलमदान याद फरमाया ऐक रुक्का लिखा और ऐक रूमाल शबनमका ऊपर लपेटकर मेरे हवाले किया और ऐक अंगूठी निशानके वास्ते अंगुलीसे उतारदी और कहा कि उस तरफको ऐक बड़ा बागहै दिल कुशा उसका नामहै वहां तू जाकर ऐक शख्स कैखुसरो नाम दारोगःहै उसको हाथमें यह अंगूठी दीजो और हमारी तरफसे दुआ कहियो और इस रुक्केका जवाब मांगियो लेकिन जल्द आइयो अगर खाना वहां खाइयो तो पानी यहां पीजियो इस कामका इनआम तुझे ऐसा दूंगी कि तू देखेगा ॥

मैं रुखसत हुआ और पूछता पूछता चला करीब दो कोसके जब गया बाग नजर पड़ा जब पास पहुंचा ऐक अजीज मुझको पकड़के दरवाजेमें बागके लेगया देखूं तो ऐक जवान शेरकीसी सूरत सोनेकी कुरसी पर जिरह बखतर पहने चार आईनः बांधे पोलादीखूद सिरपर धरे निहायत शानशोकतसे बैठाहै और पांचसे जवान तइयार ढाल तलवार हाथमें लिये और तरकश कमान बांधे खड़ेहैं मैंने सलाम किया मुझे नजदीक बुलाया मैंने वुह खातम दी और खुशामदकी बातें करकर वुह रुमाल दिखाया और चिट्ठीकेभी लानेका अहवाल कहा उसने सुनतेही अंगुली दांतोंसे काटी और सिरधुनकर बोला कि शायद तेरी अजल तुझको लेआई है खैर बागके अन्दरजा सरोके दरखतमें ऐक आहनी पिंजरा लटकताहै उसमें ऐक जवान कैदहै उसको यह खत देकर जवाब लेकर जल्दी फिरआ ॥

मैं शिताब बागमें घुसा बाग क्या था गोया जैसे बिहिश्तमें गया हर ऐक चमन रंगबरंगका फूलरहाथा और फंवारे छूट रहेथे जानवर चहचहे मार रहेथे मैं सीधा चला गया और उस दरखतमें कफस देखा उसमें ऐक जवान हसीन नजर आया मैंने अदबसे सिर नेहोड़ा और सलाम किया और वुह खत सरबमुहर पिंजरेकी तीलियों की राहसे दिया वुह अजीज रुक्का खोलकर पढ़ने लगा और मु‍झे मुशताकवार अहवाल मलिकःका पूछने लगा ॥

अभी बातें तमाम नहुईं थीं कि ऐक फौज जंगियोंकी नमूद हुई और चारों तरफसे मुझपर आटूटी और बेतहाशे बरछी तलवार मारने लगी ऐक आदमीकी बिसात क्या ऐक दममें चूर जखमी कर दिया मुझे कुछ अपनी सुध बुध नरही फिर जो होश आया अपने तईं चारपाई पर पाया कि दोप्यादे उठाये लिये जातेहैं और आपसमें बतियातेहैं ऐकने कहा इस मुरदेकी लोथको मैदानमें फेंकदो कुत्ते कउवे खाजायेंगे दूसरा बोला अगर बादशाह तहकीक करे और यह खबर पहुंचे तो जीता गड़वादे और बालबचोंको कोल्हूमें पिड़वादे क्या हमें अपनी जान भारी पड़ीहै जो ऐसी नामाकूल हरकतकरें॥

मैंने यह गुफ्तगू सुनकर दोनों याजूज माजूजसे कहा कि वास्ते खुदाके मुझपर रहम करो अभी मुझमें ऐक रमक जान बाकीहै जब मर जाऊंगा जो तुम्हारा जो चाहेगा सो कीजियो मुरदः बदस्तजिन्दः लेकिन यह तो कहो मुझपर यह क्या हकीकत बीती मुझे क्यों मारा और तुम कौनहो भला इतना तो कह सुनाओ॥

तब उन्होंने रहम खाकर कहा कि वुह जवान जो कफसमें कैदहै इस बादशाहका भतीजाहै और पहले इसका बाप तख्तनशीनथा रेहलतके वक्त यह वसीयत अपने भाईकोकी कि अभी मेरा बेटा जो वारिस इस सलतनतकाहै लड़का और बेशऊरहै कारबार बादशाहतका खैरख्वाही और हुश्यारीसे तुम किया कीजो जब यह बालिगहो अपनी बेटीसे शादी इसकी करदीजो और मुखतार तमाम मुल्क और खजानेका कीजो॥

यह कहकर उन्होंने वफात पाई और सलतनतकी नौबत छोटे भाई पर आई उसने वसीयत पर अमल नकिया बल्कि दीवाना और सौदाई मशहूर करके पिंजरेमें डाल दिया और चौकी गाढ़ी चारों तरफ बागके रखीहै कि परन्दः परनहीं मार सक्ता और कई मरतबे जहर हलाहल दियाहै लेकिन जिन्दगी जबरदस्तहै असर नहीं किया अब वुह शाहजादी और यह शाहजादा दोनों आशक माशूक बन रहेहैं वुह घरमें तलफेहै और यह कफसमें तड़फेहै तेरे हाथ शौकका नामा उसने भेजा यह खबर हरकारोंने बजिनस बादशाहको पहुंचाई हबशियोंका दस्तःमुतहयन हुआ तेरा यह अहवाल किया और उस जवान कैदीके कतलकी वज़ीरसे तदबीर पूछी उस नमकहरामने मलिकःको राजी कियाहै कि उस बेगुनाहको बादशाहके हजूर अपने हाथसे शाहजादी मार डाले॥

मैंने कहा चलो मरते २ यहभी तमाशा देखलें आखिर राजी होकर वुह दोनों और मैं जखमी चुपके एक गोशेमें जाकर खड़े हुये देखा तो तखतपर बादशाह बैठा है और मलिकःके हाथमें नंगी तलवार है और शाहजादेको पिंजरेसे बाहर निकाल कर रूबरू खड़ा किया मलिकः जल्लाद बनकर शमशेर लिये हुये अपने आशिकके कतल करने को आई जब नज़दीक पहुंची तलवार फेंक दी और गलेमें चिमट गई तब वुह आशिक बोला कि ऐसे मरने पर मैं राजीहूं यहांभी तेरी आरजू है वहांभी तेरी तलबगार हेंगी मलिकः बोली कि इस बहानेसे मैं तेरे देखनेको आई थी बादशाह यह हरकत देखकर सखत बरहम हुआ और वज़ीरको डांटा कि तू यह तमाशा मुझे दिखलानेको लायाथा महलकी मलिकःको जुदा करके महलमें लेगये और वजीरने खफा होकर तलवार उठाई और बादशाहजादेके उपर दौड़ा कि एकही वारमें काम उस बेचारेका तमाम करे ज्यों चाहताहै कि तेगा चलावे गैबसे एक तीर नागहानी उसकी पेशानी पर बैठा कि दोसार होगया और वुह गिरपड़ा बादशाह यह वारिदात देखकर महलमें घुसगये जवानको फिर कफसमें बन्द कर कर बागमें लेगये मैंभी वहांसे निकला राहमेंसे एक आदमी मुझे बुलाकर मलिकःके हजूर लेगया मुझे घाइल देखकर एकजराहको बुलवाया और नेहायत तक्कायुदसे फरमाया कि इस जवानको जल्द चंगा करके गुसल शफाकादे यही तेरा मुजराहै इसके उपर जितनी मेहनत तू करेगा वैसाही इनआम और सरफराजी पावेगा गरज वुह जराह बमोजिब इरशाद मलिकःके दौड़ धूप करके ऐक चिल्लेमें नहला धुला मुझे हजूरमें लेगया मलिकःने पूछा कि अब तो कुछ कसर बाकी नहीं रही मैंने कहा कि आपकी मेहरबानीसे अब हट्टाकट्टाहूं तब मलिकःने ऐक खिलअत और बहुतसे रुपै जो फरमायेथे बल्कि उससे भी दुचन्द अता किये और रुखसत किया॥

मैंने वहांसे सब रफीक और नौकर चाकरोंको लेकर कूच किया जब इस मुकामपर पहुंचा सबको कहा तुम अपने वतनको जावो और मैंने इस पहाड़पर यह मकान और उसकी सूरत बनाकर अपना रहना मुकर्रर किया और नौकरों और गुलामोंको मवाफिक हर एककी कदरके रुपै देकर आज़ाद किया और यह कह दिया कि जबतलक मैं जीतारहूं मेरे कूतकी खबरगीरी तुम्हीं जरूरहै आगे मुखतारहो अब वुही अपनी

नमक हलालीसे मेरे खानेकी खबर लेते हैं और मैं बज़ाहिर जमा इस बुतकी परस्तिश करता हूं जबतलक जीता हूं मेरा यही काम है यह मेरी सरगुज़श्त है जो तूने सुनी खाकसीरा मैंने बमुजरद सुन्ने इस किस्सेके कफनी गलेमें डाली और फकीरोंका लिबास किया और इश्तियाकमें फ़रंगके मुल्कके देखनेके रवानः हुआ कितने एक अरसेमें जंगल पहाड़ोंकी सैर करता हुआ मजनुन और फरहाद कीसूरत बन गया।

आखिर मेरे शौकने उस शहरतलक पहुंचाया गलीकूचेमें बावलासा फिरने लगा अकसर मलिकःके महलके आसपास रहा करता लेकिन कोई ढब ऐसा नहोता जो वहां तलक रसाई हो अजब हैरानीथी कि जिसवास्ते यह मेहनत कड़ी कर कर गया वुह मतलब हाथ नआया एक दिन बाज़ारमें खड़ाथा कि एक बारगी आदमी भागने लगे और दूकान्दार दूकानें बन्द करके चले गये या वुह रौनकथी या सुनसान होगया एक तरफसे एक जवान रुस्तमकासा कदः अवड़ा शेरकी मानन्द गूंजता और तलवार दुहत्थी झाड़ता हुआ जिरह बकतर गलेमें और टोप झिलमका सिरपर और तमंचेकी जोड़ी कमरमें कफ़ीकी तरह बका झका नजर आया और उसके पीछे दो गुलाम बनात की पोशाक पहने एक ताबूत मखमल काशानीसे मढ़ा हुआ सिर पर लिये चले आते हैं मैंने यह तमाशा देखकर साथ चलनेका कसद किया जो कोई आदमी मेरी नजर पड़ता मुझे मना करता लेकिन मैं कब सुनताहूं रफ्तः रफ्तः वुह जवां मर्द एक आलीशान मकानमें चला मैंभी साथ हुआ उसने फिरतेही चाहा कि एक हाथ मारे और मुझे दो टुकड़े करे मैंने उसे कसमदी कि मैंभी यही चाहताहूं मैंने अपना खून माफ किया किसू तरह मुझे इस जिन्दगीके अज़ाबसे छुड़ादे कि निहायत तंग आयाहूं मैं जानबूझ कर तेरे साम्हने आयाहूं देर मतकर मुझे मरने पर साबित कदम देखकर खुदाने उसके दिलमें रहम डाला और गुस्साभी ठण्ढा हुआ बहुत तव्वजः और मेहरबानीसे पूछा कि तू कौनहै और क्यों अपनी जिन्दगीसे बेज़ार हुआहै॥

मैंने कहा ज़रा बैठिये तो कहूं मेरा किस्सा बहुत दूर दराज़है और इश्कके पञ्जे में गिरफ्तारहूं इसं सबबसे लाचारहूं यह सुनकर उसने अपनी कमर खोली और हाथ मुंह धोधाकर कुछ नाश्ता किया मुझेभी खिलाया जब फरागत करके बैठा बोला कह तुझपर क्या गुजरी मैंने सब वारिदात उस पीर मर्दकी और मलिकःकी और वहां

अपने आनेकी कुछ सुनाई पहले सुनकर रोया और यह कहा कि इस कमबख़्तने किस किसका घर घाला लेकिन भला तेरा इलाज मेरे हाथमें है अग़लब है कि इस आसीके सबबसे तू अपनी मुरादको पहुंचे और तू अन्देशा मकर और ख़ातिरजमा रख हज्जाम को फ़रमाया कि इसकी हजामत करके हमाम करवादे एक जोड़ा कपड़ा उसके गुलामने लाकर पहनाया तब मुझसे कहने लगा कि यह ताबूत जो तूने देखा उसी शाहज़ादः मरहूमकाहै जो क़फ़समें कैदथा उसको दूसरे वज़ीरने आख़िर मकरसे मारा उसकी तो नजात हुई कि मज़लूम मारा गया मैं उसका चोचाहूं मैंनेभी उस वज़ीरको बज़र्ब शमशेर मारा और बादशाहके मारनेका इरादा किया बादशाह गिड़गिड़ाया और सौगन्द खाने लगा कि मैं बेगुनाहहूं मैंने उसे नामर्द जानकर छोड़ दिया जबसे मेरा काम यही है कि हर महीनेकी नौचन्दी जुमेरातको मैं इस ताबूतको इसी तरह शहरमें लिये फिरताहूं और इसका मातम करताहूं ॥

उसकी ज़बानी यह अहवाल सुनेसे मुझे तसल्ली हुई कि अगर यह चाहेगा तो मेरा मक़सद बर आवेगा ख़ुदाने बड़ा एहसान किया जो ऐसे जनूनीको मुझपर मेहरबान किया सचहै ॥

ख़ुदा मेहरबां हो तो कुल मेहरबां ॥

जब शाम हुई और आफ़ताब ग़ुरूब हुआ उस जवाने ताबूतको निकाला और एक गुलामके यवज़ वुहताबूत मेरे सिरपर धरा और अपने साथ लेकर चला फ़रमाने लगा कि मलिकःके नज़दीक जाताहूं तेरी सुफ़ारिश मक़दूर भर करूंगा तू हरगिज़ दम नमारियो चुपका बैठा सुना कीजियो मैंने कहा जो कुछ साहिब फ़रमातेहैं सोही करूंगा ख़ुदा तुमको सलामत रखे जो मेरे अहवालपर तर्स खातेहो उस जवाने क़स्द बादशाही बाग़का किया जब अन्दर दाख़िल हुआ एक चबूतरा संग मरमरका हश्त पहलू बाग़के सहनमेंथा और उस पर एक नमगीरा सफ़ेद बादलेका मोतियोंकी झालड़ लगी हुई अलमासके इस्तादोंपर खड़ाथा और एक मसनद किमख़्वाबी गाव तकिया और बग़ली तकिये ज़रबफ़्तके लगे हुवे वुह ताबूत वहां रखवाया और हम दोनोंको फ़रमाया कि उस दरख़्तके पास जाकर बैठो ॥

बाद एक माहके मल्लकी रोशनी नजर आई मलिकः आप कई खवासें साथ लेकर तशरीफ लाईं लेकिन उदासी और खफगी चेहरे पर जाहिरथी आकर मसनद पर बैठीं यह कोका अदबसे दस्तबस्तः खड़ा रहा फिर अदबसे फर्शके किनारे पर बैठा आतेही पढ़ी और कुछ बातें करने लगा मैं कान लगाके सुन रहाथा आखिर उस जवाने कहा कि मलिकः यहां सलामत मुल्क अजमका शाहजादः आपकी खूबियां और महबूबियां गायबानः सुनकर अपनी सल्तनतको बरबाददे फकीर बन मानन्द इब्राहीम अदहमके तबाहहो और बड़ी मेहनत खेंचकर यहांतलक आपहुंचाहै ॥ साईं तेरे कारनेछोड़ा शहरबलख ॥ और इस शहरमें बहुत दिनोंसे हैरान परीशान फिरता है आखिर वुह कसद मरनेका करके मेरे साथ लग चला मैंने तलवारसे डराया उसने गरदन आगे धरदी और कसम दी कि अब मैं यही चाहताहूं देर मतकर ॥

गरज तुम्हारे इश्कमें साबितहै मैंने खूब आजमाया सब तरह पूरा पाया इस सबबसे इसका मजकूर मैं दरमियां लाया अगर हजूरसे उसके अहवाल पर मुसाफिर जानकर मेहरबानी हो तो खुदा तरसी और कदरशिनासीसे दूर नहीं यह जिकिर मलिकःने सुनकर फरमाया कहांहै अगर शाहजादाहै तो क्या मुजायकः हजूरमें आवे वुह कोका वहांसे उठकर आया और मुझे साथ लेकर गया मैं मलिकःके देखनेसे निहायत शाद हुआ लेकिन अकल होश बरबाद हुये आलम सुकूत होगया यह हिजाब नपड़ा कि कुछ कहूं एक दममें मलिकः सिधारी और कोका अपने मकानको चला घर आकर बोला कि मैंने तेरी सब हकीकत अउवलसे आखिर तलक मलिकःको कह सुनाई और सुफारिशभीकी अब तू हमेशः रातको बिलानागः जाया कर और ऐश खुशी मनायाकर मैं उसके कदम पर गिरपड़ा उसने गले लगा लिया तमाम दिन घड़ियां गिन्ते रहा कि कब सांझहो जो मैं जाऊं जब रात हुई मैं उस जवानसे रुखसत होकर चला और वहीं बागमें मलिकःके चबूतरे पर तकिया लगाके बैठा ॥

बाद एक घड़ीके मलिकः तनतन्हा एक खवासको साथ लेकर आहिस्तः२ आकर मसनद पर बैठीं खुशनसीबीसे यह दिन मुयस्सर हुआ मैंने कदम्बोस किया उन्होंने सिर मेरा उठा लिया और गलेसे लगा लिया और बोलीं कि इस फुरसतको गनीमत जान और मेरा कहा मान मुझे यहांसे लेनिकल किसू और मुल्क चल मैंने कहा चलिये

यह कहकर हम दोनों बागसे बाहर तो हुवे पर हैरतसे और खुशीसे हाथ पांव फूल गये और राह भूल गये और हेरफेरको चले जातेथे पर कुछ ठिकाना नहीं पातेथे मलिकः परेशान होकर बोली कि अब मैं थक गई तेरा मकान कहांहै जल्द जाकर पहुंच नहीं तो क्या किया चाहताहै मेरे पांवमें फफोले पड़ गयेहैं रस्तेमें कहीं बैठ जाऊंगी ॥

मैंने कहा कि मेरे गुलामकी हवेली नज़दीकहै अब आपहुंचे खातिर जमा रक्खो और कदम उठावो झूठ तो बोला पर दिलमें हैरानथा कि कहां लेजाऊं एक राह पर एक दरवाजः मुक़फ़्फ़ल नज़र पड़ा जल्दीसे कुफ़लको तोड़कर मकानके भीतर गये अच्छी हवेली फ़र्श बिछाहुवा शराबके शीशे भरे करीनेसे ताकमें धरे और बावरचीखाने में नान कबाब तइयारथे मान्दगी कमाल होरहीथी ऐक ऐक गुलाबी शराबकी गज़कके साथ पी और सारी रात बाहम खुशीकी जब इस ऐशसे सुबह हुई शहरमें गुल मचा कि शाहज़ादी गाइब हुई मुहल्लः२ कूचः२ मुनादी फिरने लगी कुटनियां और हरकारे छूटे कि जहांसे हाथ आवे पैदा करें और सब दरवाजों पर शहरके बादशाही गुलामों की चौकी आबैठी गुज़रबानोंको हुकुम हुआ कि बगैर परवानकी चौंवटी बाहर शहरके न निकल सके जो कोई सुराग मलिकःका लावेगा हज़ार अशरफ़ी और खिलअत इनआम पावेगा तमाम शहरमें कुटनियां फिरने और घर घरमें घुसने लगीं मुझे जो कमबख़्ती लगी दरवाजः बन्द नकिया एक बुढ़िया शैतानकी खाला उसका ख़ुदा करे मुंह काला हाथमें तसबीह लटकाये बुरका ओढ़े दरवाजा खुला पाकर निधड़क चली आई और साम्हने मलिकःके खड़ी होकर हाथ उठाकर दुआ देने लगी कि इलाही तेरी नथ चूड़ी सुहागकी सलामती रहे और कमाऊकी पगड़ी काइम रहे मैं गरीब रण्डी फ़क़ीरनीहूं एक बेटी मेरीहै कि पेट दोजीसे पूरे दिनों दर्दमें मरतीहै और मुझको इतनी वसअत नहीं कि अधेला तेल चराग़में जलाऊं खाने पीनेको तो कहांसे लाऊं अगर मर गई तो गोर कफ़न क्यों कर करूंगी और जनी तो दाई जनाईको क्या दूंगी और जच्चाको अछवानी कहांसे खिलाऊंगी आज दो दिन हुवेहैं कि भूखी प्यासी पड़ीहै ऐ साहबज़ादी अपनी खैर कुछ टुकड़ा पारचा दिला तो उसको पानी पीनेका आधारहो ॥

मलिकःने तर्स खाकर अपने नज़दीक बुलाकर चार नान और कबाब और ऐक अंगूठी छेअंगुलियासे उतारकर हवाले की कि इसको बेचवांचकर गहना पाता बना दीजो और खातिरजमासे गुजरान कीजो और कभू आया कीजो तेरा घरहै उँसने अपने दिलका मुद्दआ जिसकी तलाशमें आईथी बजिनस पाया खुशीसे दुआयें देती और बलायें लेती रफ़ा ऊई डेवढीमें नान कबाब फेंक दिये मगर अंगूठीको मुट्ठीमें लेलिया कि पता मलिकःके हाथका मेरे हाथ आया खुदा उस आफ़तसे जो बचाया चाहे उस मकानका मालिक जवां मर्द सिपाही ताज़ी घोड़े पर चढ़ा ऊआ नेजः हाथमें लिये शिकार बन्दसे ऐक हिरन लटकाये आपऊंचा अपनी हवेलीका ताला टूटा और किवाड़ खुले पाये उस दल्लालःको निकलते देखा मारे गुस्से के ऐक हाथसे उसकी चूटी पकड़कर लटका लिया और घरमें आया उसके दोनों पांवमें रस्सी बांधकर ऐक दरख़तके टहनोमें लटकाया सिर तले पांव उपर किये ऐक दममें तड़प तड़प कर मर गई उस मर्दकी सूरत देखकर यह हैबत ग़ालिब ऊई कि हवाइयां मुंहपर उड़ने लगीं और मारे डरके कलेजः कांपने लगा उस अज़ीज़ हम दोनोंको बदहवास देखकर तसल्ली दी कि बड़ी नादानी तुमने की ऐसा काम किया और दरवाज़ा खोल दिया मलिकःने मुसकराकर फ़रमाया कि शाहज़ादः अपने गुलामकी हवेली कहकर मुझे लेआया और मुझको फुसलाया उसने इल्तिमास किया कि शाहज़ादेने सच कहा जितनी खलक जहांनहै बादशाहोंकी लौंडी गुलामहैं उन्होंकी बरकत और फ़ैज़से सबकी परवरिश और निबाहहै यह गुलाम बेदाम दिरम ज़र ख़रीद तुम्हाराहै लेकिन भेद छिपाना अक्लका मुक्तज़ाहै ऐ शाहज़ादे तुम्हारा और मलिकःका इस ग़रीबख़ानेमें तवज्जुः फ़रमाना और तशरीफ़ लाना मेरी सआदत दोनों जहानकीहै और अपने फ़िदवीको सरफ़राज़ किया मैं निसार होनेको तइयारहूं किसू सूरतमें जान मालसे दरेग़ न करूंगा आप शौकसे आराम फ़रमाइये अब कोड़ीभर ख़तरा नहीं यह मुरदार कुटनी अगर सलामत जाती तो आफ़त लाती अब जबतक मिज़ाज शरीफ़ चाहे बैठे रहिये और जो कुछ दरकार हो इस ख़ानःज़ादको कहिये सब हाज़िर करेगा और बादशाह तो क्या चीज़है तुम्हारी ख़बर फ़िरशतेकोभी न होगी उस जवां मर्दने ऐसी ऐसी बातें तसल्ली की कहीं कि टुक ख़ातिरजमा ऊई तब मैंने कहा शाबाश तुम बड़े मर्दहो इस मुरौवतका इवज़ हमसेभी जब होसकेगा तब

शहरमें आवेगा तुम्हारा नाम क्या है उसने कहा गुलामका इसम बहज़ादख़ांहै गरज़ छः महीने तक जितनी हुई ख़िदमतकी थी आज वो दिलसे खाना खाया ख़ूब आरामसे गुज़री ॥

ऐक दिन मुझे अपना मुल्क और मा बाप याद आये इस लिये नेहायत मुज़्तरिब बैठाथा मेरा चेहरा मलीन देखकर बहज़ाद रूबरू हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और कहने लगा इस फ़िदवीसे अगर कुछ तक़सीर हुई हो तो इरशाद हो मैंने कहा अज़ बराय ख़ुदा यह क्या मज़कूर है तुमने ऐसा सलूक किया कि इस शहरमें ऐसे आरामसे रहे जैसे अपनी माके पेटमें कोई रहताहै नहीं तो यह ऐसी हरकत हमसे हुईथी कि तिनका तिनका हमारा दुश्मनथा ऐसा दोस्त हमारा कौनथा कि ज़रा दम लेते ख़ुदा तुम्हें ख़ुश रखे बड़े मर्द हो तब उसने कहा अगर यहांसे दिल बरदाश्तः हुआ हो तो जहां हुकम हो वहां ख़ैरो आफ़ियतसे पहुंचाऊं फ़क़ीर बोला अगर अपने वतनतक पहुंचूं तो वालिदैनको देखूं मेरी तो यह सूरत हुई ख़ुदा जाने उनकी क्या हालत हुई होगी मैं जिसवास्ते जलावतन हुआथा मेरी तो आरज़ू बर आई अब उनकीभी क़दम बोसी वाजिबहै मेरी ख़बर उनको कुछ नहीं कि मुआ या जीताहै उनके दिलपर क्या क्या गुज़रता होगा कह जवां मर्द बोला कि बहुत मुबारक है चलिये यह कहके ऐक राख घोड़ा तुरकी सौकोस चलनेवाला और ऐक घोड़ी अबलक़ जिसके पर नहीं कटेथे बिन शाहज़ादः मलिकःकी ख़ातिर लाया और हम दोनोंको सवार करवाया फिर ज़िरहबक्तर पहन सिलाह बांध चोपचीकन अपने घोड़े पर चढ़ बैठा और कहने लगा गुलाम आगे होलेताहै साहब ख़ातिरजमासे घोड़े दबाये हुये चले आवें जब शहरके दरवाजे पर आया ऐक आवाज मारी और तबरसे कुफ़लको तोड़ा और निगाहबानोंको डांटकर ललकारा कि अपने ख़ाविन्दको जाकर कहो कि बहज़ादख़ान मलिकःमेहर निगार और शाहज़ादः कामगारको जो तुम्हारा दामादहै हांके पुकारे लिये जाताहै अगर मरदीका कुछ नशाहै तो बाहर निकलो और मलिकःको छीनलो यह न कहो कि चुपचाप लेगया नहीं तो घरमें बैठे आराम किया करो यह ख़बर बादशाहको जल्द जा पहुंची वज़ीर और मीर बख़्शीको हुकुम हुआ उन तीनों

बदज़ात मुफसिदोंको बांधकर भेजो या उनके सिर काटकर हजूरमें मंगाबों ऐक इसके बाद शह फौज मकूर हुआ और तमाम मुहीम सामान सब बाद होगया बहजादखांने मलिकःको और इस फकीरको दरमियान गुलके कि गारत गुले और सिकन्दरके गुलके बराबरथा खड़ा किया और आप घोड़ेको आगा दे उस फौजकी तरफ फिरा और शेरकी मानन्द गूंजकर फौजके दरमियान घुसा तमाम लश्कर काईसा फटगया और वह दोनों सर्दारों तलक आपहुंचा दोनोंके सिर काट लिये जब सर्दार मारे गये लश्कर पीछे हटगई गुरु कहावतहै (सिरसे सिर बाला जब सेव फूटी राई राई होगई) वहीं आप बादशाह जितनी फौज बकतर पोशोंकी साथ लेकर कुमकको आये उनकीभी लड़ाई उस यका जवाने मारदी शिकस्ताश खाई ॥

बादशाह परवा हुवे सबके मतहदाद इनायतोहै लेकिन बहजादखांने ऐसी जवां मर्दी की कि शायद रुस्तमसेभी नहो सकती जब बहजादखांने देखा कि अब कोन बाकी रहाहै जो हमारा पीछा करेगा बेखबास होकर और खातिरजमासे जहां हम खड़ेथ आया और मलिकःको और मुझको साथ लेकर चला सफरकी उमर कोताह होतीहै थोड़े अर्सेमें अपने मुल्ककी सरहदमें आपहुंचे ॥

ऐक आदमी सही सलामत आनेकी बादशाहके हजूरमें जो किवलःगाह मुझ फकीरकेथे लिखकर रवानःकी नमाज़ शुकराना पढ़कर शाद हुये इमामः शुकराना अदा किया जैसे सूखे धानमें पानीपड़ा खुश होकर सब अमीरोंको साथ लेकर इस आजिज़के इस्तक बालकी खातिर दरयाके किनारे आकर खड़े हुये और निवाड़ोंके वास्ते मीर बहरको हुकुम हुआ मैंने दूसरे किनारे पर सवारी बादशाहकी खड़ी देखी कदम्बोसीकी आरजू में घोड़ेको दरयामें डाल दिया होवःमारकर हजूरमें हाजिर हुआ मुझे मारे शफ्क़ तके कलेजेसे लगा लिया अब ऐक और आफतनागहानी पेश आई जिस घोड़े पर मैं सवारथा शायद वुह बच्चा उसी मादयानकाथा जिस पर मलिकः सवारथी हम जिनसियतके बाइस मेरे मरकबको देखकर घोड़ीनेभी जल्दी करकर अपने तईं मलिकः समेत मेरे पीछे दरयामें गिराया और पैरने लगी मलिकःने घबराके बाग खेंची वुह मुंहकी नर्मथी उलट गई मलिकः गोते खाकर मैं घोड़ी दरयामें डूब गई कि फिर उन दोनोंका निशान नजर नआया बहजादखांने यह हालत देखकर अपने तईं घोडे समेत

मछलीकी तरह भी खातिर दरयामें पड़ जाता तौभी उस भंवरमें आजाता फिर निकल सकता बहुतेरे हाथ पांव मारे कुछ बस नचला डूब गया जहांपनाहने यह वारिदात देखकर महाजाल मंगवाकर खिंचवाया और मल्लाहों और गोतःखोरोंको फरमाया उन्होंने सारा दरया छान मारा पाहकी मिट्टी लेले आये पर वे दोनों हाथ नआये या फकीरो यह हादिसः ऐसा हुआ कि मैं सौदाई और जनूनी होगया और फकीर बनकर यही कहता फिरताथा (इन नैनोंका यही बिसेख वुहभी देखा यहभी देख) अगर मलिकः कहीं गाइब होजाती या मरजाती तो दिलको तसल्ली आती फिर तलाशको निकलता या सबर करता लेकिन जब नजरोंके रूबरू गर्क होगई तो कुछ बस नचला आखिर जीमें यही लहर आई कि दरयामें डूब जाऊं शायद अपने महबूबको मरकर पाऊं ॥

एक रोज रातको उसी दरयामें पैठा और डूबनेका इरादा करकर गलेतक पानीमें गया चाहताहूं कि आगे पांव रखूं और गोता खाऊं वुही सवार बुरकःपोश जिन्होंने तुमको बशारतदीहै आपहुंचे मेरा हाथ पकड़ लिया और दिलासा दिया कि खातिर जमा रख मलिकः और बहजादखान जीतेहैं तू अपनी जान नाहक क्यों खोताहै दुनया में ऐसाभी होताहै खुदाकी दरगाहसे नाउम्मेद मतहो अगर जीता रहेगा तो तेरी मुलाकात उन दोनोंसे एक नएक रोज होरहेगी ॥

अब तू रूमकी तरफजा औरभी दो दरवेश दिलरेश वहां गयेहैं उनसे तू जब मिलेगा अपनी मुरादको पहुंचेगा या फकीरो बमौजिब हुकुम अपने हादीके मैंभी खिदमत शरीफमें आकर हाजिर हुआहूं उम्मैदकवीहै कि हर एक अपने अपने मतलबको पहुंचे टुकड़ गदाका यह अहवालथा जो तमाम कमाल कह सुनाया ॥

॥ चौथे दरवेशकी सैर ॥

चौथा फकीर अपनी सैरकी हकीकत रो रो कर इस तरह बयान करने लगा ॥

किस्सः हमारी बेसरोपाईका अब सुनो ।
टुक अपना ध्यानरखके मेरा हाल सब सुनो ॥
जिसवास्ते मैं आयाहूं यहांतक तबाह हो ।
सारा बयान करताहूं इसका सबब सुनो ॥

या मुरशिद अल्लाह अरा मुतवज्जः हो वह फ़कीर जो इस हालतमें गिरफ़्तारहै चीनके बादशाहका बेटाहै नाज़ न्यामतसे परवरिश पाई और बखूबी तरबीयत हुआ ज़मानेके भले बुरेसे कुछ वाकिफ़ न था जानता था कि हमेशः योंहीं निभेगी ऐश बेफ़िकरीमें यह हादिसः दरपेश हुआ कि क़िबलः आलम जो वालिद इस यतीमकेथे उन्होंने रेहलत फ़रमाई जांकन्दनीके वक्त अपने छोटे भाईको जो मेरा चचाहै बुलाया और फ़रमाया कि हमने तो सब माल मुल्क छोड़कर इरादा कूचका किया लेकिन यह वसीयत मेरी तुम बजा लाइयो और बुजुर्गीको काम फ़रमाइयो जब तलक शाहज़ादः जो मालिक इस तख्त औ छतरकाहै जवानहो और शऊर संभाले और अपना घर देखे भाले तुम इसकी नियाबत कीजो और सिपाह रअय्यतको खराब होने न दीजो जब यह बालिगहो उसको सब कुछ समझा बुझाकर तख्त हवाले करना और रौशन अख्तर जो तुम्हारी बेटीहै उससे शादी करके तुम सल्तनतसे किनारः पकड़ना इस सलूकसे बादशाहत हमारे खान्दानमें क़ायम रहेगी कुछ खलल न आवेगा यह कहकर आप तो जां बहक़ तसलीम हुवे चचा बादशाह हुआ और बन्दोबस्त मुल्कका करने लगा मुझे हुकुम किया कि ज़नाने महलमें रहा करे जबतलक जवान न हो बाहर न निकले यह फ़क़ीर चौदह बरसकी उमर तक बेगमात और खवासोंमें पाला गया और खेला कूदा किया चचाकी बेटीसे शादीकी खबर सुनकर शाद था और इस उम्मेदपर बेफ़िकर रहता और दिलमें कहता कि अब कोई दिनमें बादशाहत भी हाथ लगेगी और कत्खुदाई भी होगी दुनया बउम्मेद क़ायम है एक हबशी मुबारक नाम कि वालिद मरहूमकी खिदमतमें तरबीयत हुआ था और उसका बड़ा एतिबारथा और साहिब अक्ल और नमकहलाल था मैं अकसर उसके नज़दीक जा बैठता वह भी मुझे बहुत प्यार करता और मेरी जवानी देखकर खुश होता और कहता कि शाहज़ादे अब तुम जवान हुवे इनशा अल्लाहताला अनक़रीब तुम्हारा चचा बादशाहकी नसीहतपर अमल करेगा अपनी बेटी और तुम्हारे बापका तख्त तुम्हें देगा ।

एक रोज़ यह इत्तफ़ाक़ हुआ कि एक बदना सहेलीने बेगुनाह मेरे तईं ऐसा तमांचा खेंचकर मारा कि मेरे गाल पर पांचों अंगुलियोंका निशान उभर आया मैं

रोता हुआ मुबारकके पास गया उसने मुझे गलेसे लगा लिया और आंसू आस्तीनसे पोंछे और कहा कि ऐ बेटा आज तुम्हें बादशाह पास लेचलूं शायद देखकर मेहरबान हो और लायक समझकर तुम्हारा हक तुम्हें दे उसी वक्त पहनाके हजूरमें लेगया पनाने दरबारमें नेहायत शफ़क़तकी और पूछा कि क्यों दिलगीर हो और आज यहां क्योंकर आये मुबारक बोला कुछ अर्ज करने आयेहैं यह सुनकर खुदबखुद कहने लगा कि अब मियांका ब्याह कर देतेहैं मुबारकने कहा बहुत मुबारकहै बादशाहने नजूमी और रमालोंको रूबरू तलब किया और ऊपरी दिलसे पूछा कि इस साल कौनसा महीना और कौनसा दिन और घड़ी महूरत अच्छीहै कि सरअञ्जाम शादीका करें उन्होंने मरजी पाकर गिनगिनाकर अर्जकी कि किबलः आलम यह बरस बारा नहसहै इस चांदमें कोई तारीख अच्छी नहीं ठहरती अगर यह साल तमाम बखैर आफियत कटे तो आयन्दः कारखैरके लिये बेहतरहै ॥

बादशाहने मुबारककी तरफ देखा और कहा शाहजादेको महलमें लेजा खुदा चाहे तो इस सालके गुजरनेसे उसकी अमानत उसके हवाले करदूंगा खातिरजमा रखे और पढ़े लिखे मुबारकने सलाम किया मुझे साथ लिया महलमें पहुंचा दिया दो तीन दिनके बाद मैं मुबारकके पास गया मुझे देखतेही रोने लगा मैं हैरान हुआ और पूछा कि दादा खैरतो है तुम्हारे रोनेका क्या बाइसहै तब वुह खैरख्वाह कि मुझे दिल जानसे चाहताथा बोला कि मैं उस रोज तुम्हें उस जालिमके पास लेगया काशके अगर यह जान्ता तो नलेजाता मैंने घबराकर कहा मेरे जानेमें क्या ऐसी कबाहत हुई कहो तो सही तब उसने कहा कि सब अमीर वजीर अरकान दौलत छोटे बड़े तुम्हारे बापके वक्तके तुम्हें देखकर खुशहुवे और खुदाका शुक्र करने लगे कि अब हमारा साहबजादा जवान हुआ और सलतनतके लायक हुआ अब कोई दिनमें हक हकदारको मिलेगा तब हमारी कदरदानी करेगा यह खबर उस बेईमानको पहुंची उसकी छातीपर सांप लोटने लगा मुझे खिलवतमें बुलाकर कहा ऐ मुबारक अब ऐसा काम कर कि शाहजादेको किसू फरेबसे मार डाल और उसका खतरा मेरे जीसे निकाल जो मेरी खातिरजमा हो तबसे मैं बेहवास होरहाहूं कि तेरा चचा तेरी जानका दुश्मन हुआ जोहीं

मुबारकसे यह खबर नामुबारक मैंने सुनी बगैर मारे सहमका और जानके डरसे उसके पांव पर गिरपड़ा कि वास्ते खुदाके मैं सलतनतसे गुजरा किसूतरह मेरा जी बचे उस गुलाम बावफाने मेरा सिर उठाकर छातीसे लगा लिया और जवाब दिया कि कुछ खतरा नहीं एक तदबीर मुझे सूझीहै अगर रास्त आई तो कुछ परवा नहीं जिन्दगीहै तो सब कुछहै उमेदहै कि इस फिकिरसे तेरी जानभी बचे और अपने मतलबसे कामयाबहो, यह भरोसा देकर मुझे साथ लेकर उस जघः जहां बादशाह याने वालिद इस फकीरके सोते बैठतेथे गया और मेरी बहुत खातिरजमा की वहां एक कुरसी बिछीथी एक तरफ मुझे पकड़ा और एक तरफ आप पकड़ कर सन्दलीको सरकाया और कुरसीके तलेका फर्श उठाया और जमीनको खोदने लगा एक बारगी एक खिड़की नमूद हुई कि जंजीर और ताला उसमें लगाहै मुझे बुलाया मैं अपने दिलमें मुकर्रर यह समझा कि मेरे ज़िबह करने और गाड़नेको यह गढ़ा इसने खोदाहै मौत आंखोंके आगे फिर गई लाचार चुपके चुपके कलमः पढ़ता हुआ नजदीक गया देखताहूं तो उस दरीचेके अन्दर इमारतहै और चारमकानहै हर एक दालानमें दस दस खुमें सोनेकी जंजीरोंमें कड़ी हुई लटकतीहैं और हर एक गोलीके मुंहपर एक सोनेकी ईंट और एक बन्दर जड़ाऊ बना हुआ बैठाहै उनतालीस गोलियां चारों मकानमें गिनीं और एक खुमको देखा कि मुंहामुंह अशरफियां भरीहैं उस पर न बन्दरहै न ईंटहै और एक हौज जवाहिरसे लबालब भरा हुआ देखा मैंने मुबारकसे पूछा कि ऐ दादा यह क्या तिलस्म है और किसका मकानहै और यह किस कामकेहैं बोला कि यह बन्दर जो देखतेहो इनका यह माजराहै कि तुम्हारे बापने जवानीके वक्तसे मलिक सादिक जो बादशाह जिनोंकाहै उसके साथ दोस्ती और आमद रफ्त पैदाकीथी ॥

चुनाचे हरसालमें एक दफे कई तरहके तोहफे खुशबूयें और इस मुल्ककी सौगातें लेजाते और एक महीनेके करीब उसकी खिदमतमें रहते जब रुखसत होते तो मलिक सादिक एक बन्दर जमर्रदका देता हमारा बादशाह उसे लाकर इस तहखानेमें रखता इस बातसे सिवाय मेरे कोई दूसरा वाकिफ नथा, एक मर्तबः गुलामने अर्ज की कि जहांपनाह लाखों रुपैके तुहफे लेजातेहैं और वहांसे एक बन्दर पत्थरका मुर्दः आप लेआतेहैं इसका आखिर फायदः क्याहै जवाब मेरी इस बातका मुस्कराकर फरमाया

खबरदार कहीं जाहिर नहोजो खबर शर्तहै यह ऐक बन्दर बेजान जो तू देखताहै हर ऐकके हजार देव जबरदस्त ताबे और फरमाबरदारहैं लेकिन जबतलक मेरे पास चालीसों बन्दर पूरे जमा नहोवे तबतलक यह सब निकम्मेहैं कुछ काम नआवेंगे सो ऐक बन्दरकी कमीथी कि उसी बरस बादशाहने वफात पाई॥

इतनी मेहनत कुछ नेक नलगी उसका फायदा जाहिर नहुआ ऐ शाहजादे तेरी यह हालत बेकसीकी देखकर मुझे याद आया और यह जीमें ठेराया किसू तरह तुझको मलिकसादिक पास लेचलूं और तेरे चचाका जुलम बयान करूं गालिबहै कि वुह दोस्ती तुम्हारे बापकी याद करकर ऐक बन्दर जो बाकीहै तुझे दे तब उसकी मददसे तेरा मुल्क तेरे हाथ आवे और चैनसे सलतनत तू खातिरजमासे करे और अभी इस हरकतसे तेरी जान बचतीहै अगर और कुछ नहुआ तो इस जालिमके हाथसे सिवाय इस तदबीरके और कोई सूरत मखलसीकी नजर नहीं आती मैंने उसकी जुबानी यह सब अहवाल सुनकर कहा कि दादाजान अब तू मेरी जानका मुखतारहै जो मेरी हकमें भलाहो सो कर मेरी तसल्ली करके और आप जो कुछ वहांके लेजानेकी खातिर मुनासिब जाना खरीद करने बाजारमें गया॥

दूसरे दिन मेरे उस काफिर चचाके पास गया और कहा जहांपनाह शाहजादेके मार डालनेकी ऐक सूरत मैंने दिलमें ठैराईहै अगर हुकुम हो तो अरज करूं वुह कमबख्त खुश होकर बोला वुह क्या तदबीरहै तब मुबारकने कहा कि इसको मार डालने मैं सब तरह आपकी बदनामीहै मगर मैं इसे बाहर जंगलमें लेजाकर ठिकाने लगाऊं और गाड़ दाबकर चला आऊं हरगिज कोई महरम नहोगा कि क्या हुआ यह तदबीर मुबारकसे सुनकर बोला कि बहुत मुबारक मैं यह चाहताहूं कि वुह सलामत नरहे उसका दगदगः मेरे दिलमेंहै अगर मुझे इस फिकिरसे तू छुड़ावेगा तो इस खिदमतके इवज बहुत कुछ पावेगा जहां तेरा जीचाहे लेजाकर खपादे और मुझे यह खुशखबरी लादे मुबारकने बादशाहकी तरफसे अपनी खातिर्जमा करके मुझे साथ लिया और वेतुहफे लेकर आधी रातको शहरसे कूच किया और उत्तरकी सिमत चला ऐक महीने तलक पैहम चला गया ऐक रोज रातको चले जातेथे मुबारक बोला कि शुक्र खुदाका अब मंजिल मकसूदको पहुंचे मैंने सुनकर कहा कि दादा यह तूने क्या कहा

कहने लगा ऐ शाहजादे तू जिनोंका लश्कर क्या नहीं देखता मैंने कहा मुझे तेरे सिवा और कुछ नज़र नहीं आता मुबारकने एक सुरमःदानी निकाल कर सुलेमानी सुरमेकी सलाइयां मेरे दोनों आंखोंमें फेरदीं वोंहीं जिनोंकी ख़िलकत और लश्करके तम्बू क़नात नज़र आने लगे लेकिन सब ख़ुशरू और ख़ुशलिबास मुबारकको पहचान कर हर एक आशनाईको राहसे गले मिलता और मज़ाखें करता, आख़िर जाते जाते बादशाही महलोंके नज़दीक गये और बारगाहमें दाख़िल हुये देखताहूं तो रोशनी क़रीनेसे रोशनहै और सन्दलियां तरहबतरह की दुरुयः बिछीहैं और आलिम फ़ाज़िल दरवेश और अमीर वज़ीर मीर बख़शी दीवान उस पर बैठेहैं और यसावल चोबदार हाथ बांधे खड़ेहैं और दरमियानमें एक तख़्त मुरस्सेका बिछाहै उस पर मलिकसादिक ताज और ख़िलअत मोतियोंकी पहने हुये मसनद पर तकिये लगाये बड़ी शान शोकतसे बैठाहै मैंने नज़दीक जाकर सलाम किया मेहरबानगीसे बैठनेका हुकुम किया फिर खानेका चर्चा हुआ बाद फ़रागतके दस्तरख़ान बढ़ाया गया तब मुबारककी तरफ़ मुतवज्जः होकर अहवाल मेरा पूछा मुबारकने कहा कि अब इनके बापकी जगः पर चचा इनका बादशाहत करताहै और इनका दुश्मन जानी हुआहै इस लिये मैं इन्हें वहांसेले भाग कर आपकी ख़िदमतमें आयाहूं कि यतीमहै और सलतनत इनका हक़है लेकिन बग़ैर मुरब्बी किसूसे कुछ नहीं होसक्ता हज़ूरकी दस्तगीरीके बाइस इस मज़लूमकी परवरिश होतीहै इनके बापकी ख़िदमतका हक़ याद कीजिये इनकी मदद फ़रमाइये और वुह चालीसवां बन्दर इनायत कीजिये जो चालीसों पूरे हों और यह अपने हक़को पहुंच कर तुम्हारे जानमालको दुआदें सिवाय साहबकी पनाहके कोई इनका ठिकाना नज़र नहीं आता ॥

यह तमाम कैफ़ियत सुनकर सादिकने कहा कि वाके हक़ ख़िदमत और दोस्ती बादशाह मग़फ़ूरके हमारे ऊपर बहुतथे और यह बेचारा तबाह होकर अपनी सलतनत मैारूसी छोड़कर जान बचानेके वास्ते यहांतलक आयाहै और हमारे दामन दैालतमें पनाहलीहै तामक़दूर किसू तरह हमसे कमी नहोगी और दरगुज़र नकरूंगा लेकिन एक काम हमाराहै अगर वुह इससे होसका और ख़यानत नकी और बख़ूबी अंजाम दिया और इस इमतिहानमें पूरा उतरा तो मैं क़ौलक़रार

करताहूं कि ज़ियादः बादशाहसे सलूक करूंगा और जो वह चाहेगा सो दूंगा ॥ मैंने हाथ बांधकर इलतिमास किया कि इस चिट्ठीसे तावमक़दूर जो ख़िदमत सरकारकी होसकेगी बसरोचश्म बजा लावेगा और उसको बख़ूबी दियानतदारी और हुश्यारीसे करेगा और दोजहांनकी सआदत समझेगा फ़रमाया कि तू अभी लड़का है इसवास्ते बार बार ताकीद करताहूं मबादा ख़यानत करे और आफ़तमें पड़े मैंने कहा ख़ुदा बादशाहके इक़बालसे आसान करेगा और मैं भी जानसे कोशिश करूंगा और अमानत हज़ूर तक लेआऊंगा यह सुनकर मलिक सादिकने मुझको नज़दीक बुलाया और एक काग़ज़ हाथोंसे निकालकर मेरे तईं दिखलाया और कहा यह जिस शख़्सकी सूरतहै उसे जहांसे जाने तलाश करके मेरी ख़ातिर पैदा करके ला और जिस घड़ी तू उसका नाम निशान पावे और साम्हने जावे मेरी तरफ़से बहुत इश्तियाक़ ज़ाहिर कीजो अगर यह ख़िदमत तुझसे सरअंजाम हुई तो जितनी तवक़्क़ः तुझे मनज़ूरहै उससे ज़ियादः और परदाख़्त की जावेगी नहीं तो जैसा करेगा वैसा पावेगा ॥

मैंने उस काग़ज़को जो देखा एक तसवीर नज़र पड़ी कि ग़शसा आने लगा बज़ोर मारे डरके अपने तईं सम्भाला और कहा बहुत ख़ूब मैं रुख़सत होताहूं अगर ख़ुदाने मेरा भलाकरनाहै तो बमोजिब हुकुम हज़ूरके मुझसे अमलमें आवेगा यह कहकर मुबारकको हमराह लेकर जंगलकी राहली गांव२ बस्ती बस्ती शहर शहर मुल्क मुल्क फिरने लगा और हर एकसे उसका नाम निशान तहक़ीक़ करने किसूने नकहा कि हां मैं जान्ताहूं या किसूसे मज़कूर सुनाहै सात बरस तक उसी आलममें हैरानी परेशानी सहता हुवा एक नगरमें वारिद हुआ इमारत आली और आबाद लेकिन वहांके हरएक छोटे बड़े इसम आज़म पढ़तेथे और ख़ुदाकी इबादत बन्दगी करतेथे एक अंधा हिन्दुस्तानी फ़क़ीर भीक मांगता नज़र आया लेकिन किसूने एक कौड़ी या निवालः न दिया मुझे ताज्जुब आया और उसके ऊपर रहम खाया जेबमेंसे एक अशरफ़ी निकाल कर उसके हाथमें दी वुह लेकर बोला कि ऐ दाता ख़ुदा तेरा भला करे तू शायद मुसाफ़िरहै इस शहरका बाशिन्दः नहीं मैंने कहा सच तो योंहै कि सात बरससे मैं तबाह हुआहूं

जिस कामको निकलाहूं उसका सुराग नहीं मिलता आज इस नगरमें आपड़ंचाहूं कुछ बूढ़ी दुआयें देके चला मैं उसके पीछे चल दिया बाहर शहरके एक मकान आलीशान नज़र आया वुह उसके अन्दर गया मैंभी चला देखा तो आला इमारत गिरपड़ीहै और बेमरम्मत होरहीहै ।

मैंने दिलमें कहा कि यह महल लाइक बादशाहोंके है जिस वक्त तय्यारी इसकी होगी अच्छी मकान दिलचस्प बना होगा और अब तो वीरानीसे क्या सूरत बनरहीहै पर मालूम नहीं कि उजाड़ क्यों पड़ाहै और वह नाबीना इस महलमें क्यों रहताहै वुह अन्धा लाठी टेकता हुआ चला जाताथा कि एक आवाज़ आई जैसे कोई कहताहै कि ऐ बाप खैर तो है आजसवेरे क्यों फिरे आते हो पीरमर्दने सुनकर जवाब दिया कि बेटी खुदाने एक जवान मुसाफिरको मेरे अहवालपर मेहरबान किया ॥

उसने एक मुहर मुझकोदी बहुत दिनोंसे पेट भरकर अच्छा खाना नखाया था सोगोश्त मसाला घी तेल आटा लोन मोल लिया और मेरी खातिर कपड़ा जो ज़रूर था खरीद किया अब इसको सीकर पहन् और खाना पका तो खापीके उस सखीके हक में दुआदें अगरचे मतलब उसके दिलका मालूम नहीं पर खुदा दाना बीनाहै हम बेकसों की दुआ कबूल करे मैंने यह अहवाल उसकी पाकः कहीका जो सुना बेइख्तियार जीमें आया कि बीस अशरफियां और इसको दूं लेकिन आवाज़की तरफ ध्यान जो गया तो एक औरत देखी कि ठीक वुही तसवीर उसी माशूककी थी तसवीरको निकालकर मुकाबिल किया ज़रा तफावत नदेखा एक आह दिलसे निकली और बेहोश हुआ मुबारक मेरे तईं बगलमें लेकर बैठा और पंखा करने लगा मुझमें ज़रासा होश आया उसकी तरफ ताक रहाथा मुबारकने पूछा कि तुमको क्या होगया अभी मुंहसे जवाब नहीं निकलाथा वुह नाज़नीन बोली कि ऐ जवान् खुदासे डर और बेगानी स्त्रीपर निगाहमत कर हया और शर्म सबको ज़रूरहै इसलियाकतसे गुफ्तगूकी कि मैं उसकी सूरत और सीरत्पर आशक होगया मुबारक मेरी खातिरदारी बहुतसी करने लगा लेकिन दिलकी हालतकी उसको क्या खबर थी लाचार होकर मैं पुकारा कि ऐ खुदाके बन्दो और इस मकानके रहनेवालो मैं गरीब मुसाफिरहूं अगर अपने पास मुझे बुलावो और रहनेको जघः दो तो बड़ी बातहै उस अन्धेन नज़दीक बुलाया और आवाज़ पह

जानकर मुझे बुलाया और वहां वुह मुखबरह बैठीथी उस मकानमें जाया वुह एक कोनेमें छिप गई उस बूढेने मुझसे पूछा कि अपना माजरा कह कि क्यों घरबार छोड़कर अकेला पड़ा फिरताहै और तुझे किसकी तलाशहै मैंने मलिक सादिकका नाम नलिया और वहांका कुछ ज़िकर मज़कूर नकिया इस तौरसे कहा कि यह बेबस शाहज़ादः चीन माचीन काहै चुनांचः मेरे वलीन्यामत अबतक बादशाहहैं एक सौदागरसे लाखों रुपे देकर यह तसवीर मोललीथी उसको देखनेसे सब होश आराम जाता रहा और फकीरका भेसकर कर तमाम दुनया छानमारी अब वहां मेरा मतलब मिलाहै सो तुम्हारा इख़तियारहै ॥

यह सुनकर उन्होंने एक आह मारी और बोला कि अज़ीज़ मेरी लड़की बड़ी मुसीबतमें गिरफ़तारहै किन्तु बशरकी मजाल नहीं कि इससे निकाह करे और फलपावे मैंने कहा उम्मेदवारहूं कि मुफस्सल बयां करो तब उस मर्द अजमीने अपना माजरा इस तौरसे ज़ाहिर किया कि सुन ऐ बादशाहज़ादे मैं रईस और अकाबिर इस कम्बख्त शहरकाहूं मेरे बुज़रुग नामआवर और आली खान्दानथे खुदाने यह बेटी मुझे इनायत की जब बालिग हुई तो इसकी खूबसूरती और नज़ाकत और सलीकेका शोर हुआ और सारे मुल्कमें मशहूर हुआ कि फलानीके घरमें ऐसी लड़कीहै कि उसके हुसनके साम्हने हूर परी शरमिन्दःहै इनसानका तो क्या मुंहहै कि बराबरी करे यह तारीफ इस शहरके शाहज़ादेने सुनी गाइबानः बगैर देखे भाले आशक हुआ खाना पीना छोड़ दिया आखिर बादशाहको यह बात मालूम हुई मेरे तईं रातको खिलवतमें बुलाया और यह मज़कूर दरमियां लाया और मुझे बातोंमें फुसलाया गरज़ कि निसबत नाता करनेमें राज़ी किया मैंभी समझा कि जब बेटी घरमें पैदा हुई तो किसू न किसूसे ब्याहाही चाहिये पस इससे क्या बेहतरहै कि बादशाहज़ादेसे मनसूब करूं इसमें बादशाहभी मिन्नतदार होताहै मैं कबूल करके रुखसत हुवा उसी दिनसे दोनों तरफ तइयारी बियाहकी होने लगी एक रोज़ अच्छी साअतमें काज़ी मुफती आलिम फाज़िल सब जमा हुवे निकाह बांधा गया औ महर मुअइयन हुआ दुलहनको बड़ी धूमसे लेगये सब रसम रसूमात करके फारिग हुये नौशाहने रातको जब कसदखास सोनेका किया उस मकानमें एक शोर गुल ऐसा हुआ कि जो बाहर जाग चौकीमें थ

हैरान हुवे दरवाज़ः कोठरीका खोलकर चाहा देखें कि यह क्या आफ़तहै अन्दरसे ऐसा बन्द था कि किवाड़ खोल नसके एक दममें वुह रोनेकी आवाज़भी कम हुई पटको चूल उखाड़ कर देखा तो दुल्हा सिर कटा हुवा पड़ा तड़पताहै और दुलहनके मुंहसे कफ चला जाताहै और उसी मिट्टीलहूमें लिथड़ी हुई बदहवास पड़ी लोटतीहै ॥

यह क़यामत देखकर सबके होश जातेरहे ऐसी खुशीमें यह ग़म ज़ाहिर हुआ बादशाहको खबर पहुंची सिर पीटता हुवा दौड़ा तमाम अरकान सलतनतके जमा हुये पर किसूकी अकल काम नहीं करती कि इस अहवालको दरयाफ़्त करे निहायतको बादशाहने उस ग़मकी हालतमें हुकुम किया कि इस कम्बख़्त नाशुदनी दुल्हनकोभी सिर काट डालो यह बात बादशाहकी ज़बानसे ज्योंहीं निकली फिर वैसाही हंगामः बरपा हुआ बादशाह डरा और अपनी जानके खतरेसे निकल भागा और फर्माया कि इसे महलसे बाहर निकालदो खवासोंने इस लड़कीको मेरे घरमें पहुंचा दिया यह चरचा दुनयामें मशहूर हुवा जिसने सुना हैरान हुवा और शाहज़ादेके मारे जानेके सबबसे खुद बादशाह और जितने बाशिन्दे इस शहरके हैं मेर दुशमन जानी हुये ॥

जब मातमदारीसे फ़राग़त हुई और चेहलुम हो चुका बादशाहने अरकान दौलतसे सलाह पूछी कि अब क्या किया चाहिये सभोंने कहा और तो कुछ हो नहीं सक्ता पर ज़ाहिरमें दिलकी तसल्ली और सबरके वास्ते उस लड़कीको उसके बाप समेत मरवा डालिये और घरबार ज़ब्त कर लीजिये जब मेरी यह सज़ा मुकर्ररकी कोतवालको हुकुम हुआ उसने आकर चारों तरफसे मेरी हवेलीको घेर लिया और नरसिंगा दरवाजेपर बजाया और चाहाकि अन्दर घुसें और बादशाहका हुकुम बजालावें ग़ैबसे ईंट पत्थर ऐसे बरसने लगे कि तमाम फ़ौज ताब नलासकी अपना सिर मुंह बचाकर जिधर तिधर भागी और एक आवाज़ मुहीब बादशाहने महलमें अपने कानों सुनी कि क्यों कम्बख़्ती आईहै क्या शैतान लगाहै भला चाहताहै तो उस नाज़नीनके अहवालका मुतअर्ज़ नहो नहीं तो जो कुछ तेरे बेटेन उससे शादी करकर देखा तू भी उसकी दुशमनी से देखेगा अब अगर उनको सतावेगा तो मज़ा पावेगा बादशाहको मारे दहशतके तप चढी वोंहीं हुकुम किया कि इन बदबख़्तोंसे कोई मुज़ाहिम नहो कुछ कहो नसुनो हवेलीमें पड़ा रहने दो और ज़ुल्म इनपर नकरो उस दिनसे आमिल बाउ बतास

जानकर दुआ तावीज़ जंत्र मंत्र करतेहैं और सब बाशिन्दे इस शहरके इल्म आज़म और कुरानमजीद पढ़तेहैं मुद्दतसे यह तमाशा होरहाहै लेकिन अबतक कुछ इसरार मालूम नहीं और मुझे भी हरगिज़ इत्तला नहीं मगर इस लड़कीसे एकबार पूछा कि तुमने अपनी आंखोंसे क्या देखाथा यह बोली कि और तो कुछ मैं नहीं जानती लेकिन यह नज़र आया कि जिस वक्त मेरे खाविन्दने कसद मुबाशरतका किया वहीं फट कर एक तख्त सोनेका निकला उसपर एक जवान खूबसूरत शाहाना लिबास पहने बैठाथा और साथ बहुतसे आदमी इन्तिज़ाम करते हुवे उस मकानमें आये और शाहज़ादेके कतलके मुस्तइद हुवे वुह शख्स सरदार मेरे नज़दीक आया बोला क्यों जानी अब हमसे कहां भागोगी उनकी सूरतें आदमी कीसीथीं लेकिन पांउ बकरियोंकेसे नज़र आये मेरा कलेजा धड़कने लगा और खौफसे गशमें आगई फिर मुझे कुछ सुध नहीं कि आखिर क्या हुवा तबसे मेरा यह अहवालहै कि इस टूटे मकानमें हम दोनोंजी पड़े रहतेहैं बादशाहके गुस्सेके बाइस अपने रफीकसब जुदा होगये और मैं गदाई करने जो निकलताहूं तो कोई कौड़ी नहीं देता बल्कि दूकानपर खड़े रहनेके रवादार नहीं इस कमबख्त लड़कीके बदनपर लत्ता नहीं कि सतर छिपावे और खानेका मुयस्सर नहीं जो पेटभर खावे खुदासे यह चाहताहूं कि मौत हमारी आवे या ज़मीनफाटे और यह नामुरादी समावे इस जीनेसे मरना भलाहै खुदाने शायद हमारेही वास्ते तुझे भेजाहै जो तूने रहम खाकर एक मुद्दतको खाना मज़ेदार पकाकर खाया और बेटीकी खातिर कपड़ाभी बनाया खुदाकी दरगाहमें शुक्र किया और तुझे दुआदी अगर इसपर आसेब जिन या परीका नहोता तेरी खिदमतमें लौंडीकी जगह देता और अपनी सआदत जानता यह अहवाल इस आजिज़काहै तू उसके दरपै मतहो और कसदसे दरगुज़र।

यह माजरा सुनकर मैंने बहुत मिन्नत ज़ारीकी कि मुझे अपनी फरज़न्दीमें कबूल कर जो मेरी किस्मतमें बदा होगा सो होगा वुह पीरमर्द हरगिज़ राज़ी न हुवा शाम जब हुई उससे रुखसत होकर सरामें आया मुबारकने कहा कि शाहज़ादे मुबारक हो खुदाने असबाब तो दुरुस्त कियाहै बारे यह मेहनत अकारत न गई मैंने कहा आज कितनी खुशामदकी पर वुह अन्धा बेईमान राज़ी नहीं होता खुदा जाने देवेगा

था नहीं पर मेरे दिलकी यह हालतथी कि रातकाट्नी मुश्किल हुई कि कब सुबह हो तो फिर जाकर हाज़िरहूं कभू यह ख़याल आताथा अगर वुह मेहरबान हो और कबूल करे तो मुबारक मलिकसादिककी ख़ातिर लेजावेगा फिर कहता भला हाथ तो आवे मुबारकको मनावना कर मैं ऐश करूंगा फिरजीमें यह ख़तरा आता कि अगर मुबारक भी कबूल करे जिन्होंके हाथसे वुही नौबत् मेरी होगी जो बादशाहज़ादेकी हुई और इस शहरका बादशाह कब चाहेगा कि उसका बेटा माराजाय और दूसरा खुशी मनाय तमाम रात नीन्द उचाट् होगई और इसी मनसूबेके उलझेड़ेमें काटी जब रोज़ रोशन हुआ मैं चला चौकमेंसे अच्छे थान पोशाकी और मेवः खुश्क तर ख़रीद करके उस बुज़र्गकी ख़िदमतमें हाज़िर हुवा नेहायत् खुश होकर बोला कि सबको अपनी जानसे ज़ियादः कुछ अज़ीज़ नहीं पर अगर मेरी जानभी तेरे काम आवे तो दरेग नकरूं और अपनी बेटी अभी तेरे हवाले करूं लेकिन् यही ख़ौफ आताहै कि इस हरकतसे तेरी जानको ख़तरा नहो कि यह दाग़ लानतका मेरे ऊपर ताक़यामत रहे मैंने कहा अब इस वक़्तमें बेकसहूं और तुम मेरे दीन दुनयाके बापहो मैं इस आरज़ूमें मुद्दतसे क्या क्या तबाही और परीशानी खेंचता हुआ और कैसे कैसे सदमें उठाता हुआ यहांतक आया और मतलबका भी सुराग़ पाया खुदाने तुम्हें भी मेहरबान किया जो ब्याह देनेपर रज़ामन्द हुवे लेकिन मेरेवास्ते आगा पीछा करतेहो ज़रा मुनसिफ होकर गौरफरमावो तो इश्क़की तलवारसे सिर बचाना और अपने जानको छिपाना किस मज़हबमें दुरुस्तहै हरचेः बादा बाद मैंने सबतरह अपने तईं बरबाद कियाहै माशूक़के विसालको मैं ज़िन्दगी समझताहूं अपने मरने जीनेको कुछ परवा नहीं बल्कि अगर नाउम्मेद हूंगा तो बिलअजल मरजाऊंगा और तुम्हारा दामनगीर हूंगा ॥

ग़रज़ इस गुफ्तोशनूद और हांनामें क़रीब एक महीनेके गुज़रा हररोज़ उस बुज़र्गकी ख़िदमतमें दौड़ा जाता और खुशामद बरामद किया करता इत्तफाक़न् वुह बूढ़ा बीमार हुआ मैं उसकी बीमार दारीमें हाज़र रहा हमेश: क़ारूर: हकीमपास लेजाता जो नुसख़ा लिखदेता उसी तरकीबसे बनाकर पिलाता और ग़िज़ा अपने हाथसे पकाकर कोई निवाला खिलाता एकदिन मेहरबान होकर कहने लगा ऐजवान तू बड़ा

ज़िद्दी है मैंने हरचन्द सारी कबाहतें कह सुनाईं और मनाकरताहूं कि इस कामसे बाज़ आओ जो है तो जहान है पर ख़्वाह मख़्वाह कुयेमें गिरा चाहता है अच्छा अपनी लड़कीसे तेरा मज़कूर करूंगा देखूं वुह क्या कहती है या फ़क़ीरो यह ख़ुश ख़बरी सुनकर मैं ऐसा फूला कि कपड़ोंमें न समाया आदाब बजा लाया और कहा कि अब आपने मेरे जीनेकी फ़िकरकी रुख़सत होकर मकानपर आया और तमाम शब मुबारकसे यही ज़िकिर मज़कूर रहा कहांकी नीन्द और कहांकी भूख सुबहको तड़के वक्त फिर जाकर हाज़िर हुवा सलाम किया फ़रमाने लगा लिलो अपनी बेटी हमने तुमको दी ख़ुदा मुबारक करे तुम दोनोंको ख़ुदाकी अमानमें सौंपा जबतलक मेरे दम्में दम है मेरी आंखोंके साम्हने रहो जब मेरी आंख मुन्द जायगी जो तुम्हारे जीमें आवेगा सो कीजियो मुख़तार हो कितने दिन पीछे वुह बूढ़ा अन्धा मरगया और उसको गोरकफ़न करके चालीस दिन बाद उस नाज़नीनको मुबारक डोली करके कारवांसरामें लेआया और मुझसे कहा कि यह अमानत मलिकसादिककी है ख़बरदार ख़यानत नकीजियो और यह मेहनत मशक़्क़त बरबाद नदीजो मैंने कहा ऐ काका मलिकसादिक यहां कहां है दिल नहीं मान्ता मैं क्योंकर सबर करूं जो कुछहो सोहो जियूं या मरूं अब तो ऐश करूं मुबारकने दिक होकर डांटा कि लड़कपन् नकरो अभी एक दम्में कुछ का कुछ होजाता है मलिकसादिकको दूर जान्ते हो जो उसका फ़रमाना नहीं मान्ते हो उसने चलते वक्त पहलेही ऊंच नीच सब समझा दी है अगर उसके कहनेपर रहोगे और सही सलामत् इसको वहांतलक लेचलोगे तो वुहभी बादशाह है शायद तुम्हारी मेहनत पर रहम करके तुम्हींको बख़्शदे तो क्या अच्छीबात होवे जीतकी जीत रहे और मीतका मीत हाथ लगे उसके डराने और समझानेसे मैं हैरान होकर चुपका होरहा और दो घोड़े ख़रीद करके उनपर सवार होकर मलिकसादिकके मुल्ककी राहली चलते चलते एक मैदानमें आवाज़ ग़ुल शोर की आने लगी मुबारकने कहा शुक्र ख़ुदाका हमारी मेहनत नेक लगी यह लश्कर जिनोंका आ पहुंचा बारे मुबारकने उनसे मिलजुलकर पूछा कि कहां का इरादा कियाहै वुह बोले कि बादशाहने तुम्हारे इस्तिक़बालके वास्ते हमें तइनात कियाहै अब तुम्हारे फ़रमाबरदार हैं अगर कहो तो एक दममें इसफ़हान लेचलें मुबारकने कहा देखो किस मेहनतोंसे ख़ुदाने बादशाहके हुज़ूरमें

हमें मुलक किया अब जलदी क्या ज़रूर है अगर खुदा नख्वास्तः कुछ खलल होजावे तो हमारी मेहनत अकारत हो और जहांपनाहकी गुस्सेमें पड़ें सभोंने कहा कि इसके तुम मुख्तार हो जिस तरह जीचाहे चलो अगरचेः सब तरहका आरामथः पर रात दिन चलनेसे कामथा जब नज़दीक जापहुंचा मैं मुबारकको सोता देखकर उस नाज़नीनके कदमोंपर सिर रखकर अपने दिलकी बेकरारी और मलिक सादिकके सबबसे लाचारी नेहायत मिन्नत ओ ज़ारीसे कहने लगा कि जिस रोज़से तुम्हारी तसवीर देखी है खाना सोना और आराम मैंने अपने ऊपर हराम कियाहै अब जो खुदाने यह दिन दिखाया तो महज़ बेगानः होरहाहूं फरमाने लगी कि मेराभी दिल तुम्हारी तरफ माइलहै कि तुमने मेरी खातिर क्या क्या हर्ज मर्ज उठाया और किस किस मशक्कतोंसे लाये हो खुदाको यादकरो और मुझे भूल नजाइयो देखो तो परदे गैबसे क्या ज़ाहिर होताहै यह कहकर ऐसी बेइखतियार डाढ़ मारकर रोई कि हिचकी लगगई इधर मेरा यह हाल उधर उसका वुह अहवाल इसमें मुबारककी नीन्द टूट गई वुह दोनों मुशताकोंका रोना देखकर रोने लगा और बोला खातिरजमा रखो एक रोग़न मेरे पासहै इस गुलबदनके बदनमें मलदूंगा उसकी बूसे मलिक सादिकका जी हट जायगा यकीनहै कि तुम्होंको बख्शदे ॥

मुबारकसे यह तदबीर सुनकर दिलको ढाढ़स होगई उसके गलेसे लगकर लाडकिया और कहा ऐ दादा अब तू मेरे बापकी जघः है तेरे बाइस मेरी जान बची अबभी ऐसा कामकर जिसमें मेरी जिन्दगानी हो नहीं तो इस ग़ममें मर जाऊंगा उसने बहुतसी तसल्लीदी जब रोज़ रोशन हुवा आवाज़ जिनोंकी मालूम होने लगी देखा तो कई खवास मलिकसादिकके आये हैं और दो सिरे पाउ भारी हमारे लिये लायेहैं और एक चौडोल मोतियोंकी तोर पड़ी हुई उनके साथहै मुबारकने उस नाज़नीनको तेल मल दिया और पोशाक पहना बनाकर मलिकसादिकके पास लेचला बादशाहने देखकर मुझे बहुत सरफराज़ किया और इज़्ज़त और हुरमतसे बैठाया और फरमाने लगा कि तुझसे मैं ऐसा सलूक करूंगा कि किसूने नकिया होगा बादशाहत तो तेरे बापकी मोजूदहै अलावः अब तू मेरे बेटेकी जघः हुवा ये मेहरबानीकी बातें कर रहाथा इतनेमें वह नाज़नीनभी रूबरू आई उस रोगनकी बूसे एकाएकी दिमाग परागन्दः

हुवा और हाल बेहाल होगया तब उस बासको नखासका उठ्कर बाहर चलागया और हम दोनोंको बुलवाया और मुबारककी तरफ़ मुतवज्जः होकर फ़रमाया कि ख्वाजी ख़ूबशुर्त बजालाय ॥

मैंने ख़बरदार कर दियाथा कि अगर ख़यानत करोगे तो ख़फ़्गीमें पड़ोगे यह बू कैसी है अब देखो तुम्हारा क्या हाल करताहूं बहुत गुस्सा हुआ मुबारकने मारे डरके अपना इज़ारबन्द खोलकर दिखादिया कि बादशाह सलामत् जब हुज़ूरके हुकुमसे हम उस्कामके मुतइयन हुयेथे गुलामने पहलेही अपनी अलामत काट्कर डिबयामें बन्दकरके सर बमुहरसरकारके ख़ज़ानचीके हवाले करदीथी और मरहम मुलेमानी लगाकर रवानः हुवाथा मुबारकसे यह जवाब सुनकर मेरी तरफ़ आंखें निकालके घूरा और कहने लगा तो यह तेरा कामहै और तैशमें आकर मुंहसे बुरा भला बकने लगा उस वक़्त उस्के बातकहावसे यों मालूम होताथा कि शायद जानसे मुझे मरवाडालेगा जब मैंने उसके बशरेसे यह दरयाफ़त् किया अपने जीसे हाथ धोकर और जानखोकर सिरगिलाफ़ मुबारककी कमरसे खेंचकर मलिक सादिककी तोंदमें मारी कड़ोके लगतेही निहुड़ा और झूमा मैंने हैरान होकर जाना कि मुकर्रर मरगया फिर अपने दिलमें ख़याल किया कि ज़ख़म तो ऐसा कारी नहीं लगा यह क्या सबब हुवा मैं खड़ा देखताथा कि वुह ज़मीनपर लोट्लाट् गेंदकी सूरत बनकर आसमानकी तरफ़ उड़ चला ऐसा बलन्द हुवा कि आख़िर नज़रोंसे ग़ाइब होगया फिर एक पलके बाद बिजलीकी तरह कड़का और गुस्से में कुछ बेमाने बका हुवा निचे आया और मुझे एक लात मारी कि तेवराकर चारोंशाने चित गिरपड़ा और जी डूब गया ख़ुदा जाने कितनी देरमें होशमें आया आंखें खोलकर जो देखा तो एक ऐसे जंगलमें पड़ाहूं कि सिवाय केकड और टेटी और झड़बेरीके दरख़तोंके कुछ और नज़र नहीं आता अब उस घड़ी अक़ल कुछ कामनहीं करती कि क्या करूं और कहां जाऊं नाउम्मेदीसे एक आह भरकर एक तरफ़को राहली अगर कहीं कोई आदमीकी सूरत नज़र पड़ती तो मलिकसादिकका नाम पूछता वुह दीवाना जानकर जवाब देता कि हमने तो उस्का नांमभी नहीं सुना ॥

एक रोज़ पहाड़पर जाकर मैंने भी इरादा किया कि अपने तईं गिराकर जाया करूं जो मुकर्रर गिरनेको हुवा वुही सवार बुरकापोश आपहुंचा और बोला कि क्यों जान खोताहै आदमीपर दुख दर्द सब कुछ होताहै अब तेरे बुरे दिन गये और भले दिन आये जल्द रूमकोजा तीन शख्स औरभी आगे गयेहैं उनसे मुलाकात कर और वहांके सुलतानसे मिल तुम पांचोंका मतलब एकही जगः मिलेगा ॥

इस फकीरकी सैरका यह माजरा है जो अर्ज किया बारे बशारतसे अपने मौला मुश्किल कुशाकी मुरशिदोंकी हजूरीमें आपहुंचाहूं और बादशाहकीभी मुलाजिमत हासिल हुई चाहिये कि अब सबकी खातिरजमा हो ॥

ये बातें चार दरवेश और बादशाह आजादबख़्तमें होरहीथीं कि इतनेमें एक महली बादशाहके महलमेंसे दौड़ा हुआ आया और मुबारकबादीकी तसलीमें बादशाहके हजूर बजा लाया और अर्जकी कि इस वक्त शाहजादा पैदा हुआ कि सूरज चन्द्रमा उस्के हुस्नके रूबरू शरमिन्दःहै बादशाहने मुतअजिब होकर पूछा कि जाहिरमें तो किसूका हमल नथा यह आफताब किस्के बुर्ज हमलसे नमूद हुआ उसने इलतिमास किया कि माहरू खवास जो बहुत दिनोंसे गजब बादशाहीमें पड़ीथी बेकसोंकी मानन्द एक कोनेमें रहतीथी और मारे डरके उस्के नजदीक कोई नजाता नअहवाल पूछताथा उस पर यह फजल इलाही हुआ कि चान्दसा बेटा उस्के पेटसे पैदा हुआ ॥

बादशाहको ऐसी खुशी हासिल हुई कि शायद शादीमर्ग होजाय चारों फकीरोंने भी दुआदी कि बाबा तेरा घर आबाद रहे और उस्का कदम मुबारकहो तेरे सायेके तले बूढ़ा बड़ाहो बादशाहने कहा यह तुम्हारे कदमकी बरकतहै इजाज़त हो तो जाकर देखूं दरवेशोंने कहा बिसमिल्लाह सिधारिये बादशाह महलमें तशरीफ लेगये शाहजादेको गोदमें लिया और शुक्र परवरदिगारकी दरगाहमें किया कलेजा ठण्ढा हुआ वोंहीं छातीसे लगाये हुये लाकर फकीरोंके कदमोंपर डाला दरवेशोंने दुआयें पढ़कर झाड़ फोंक दिया बादशाहने जशनकी तय्यारीकी दोहरी नौबतें झड़ने लगीं खजानेका मुंह खोल दिया दाद दिहिशमे एक कौड़ीके मोहताजको लाखपती करदिया अर्कान दौलत जितनेथे सबको दुचन्द जागीर मनसबके फरमान होगये जितना लशकरथा उन्हें पांच बरसकी तनख्वाह इनआम हुई और तीन बरसका खजाना रय्यतको माफ किया मारे

खुशीके हर एक शादमाना बादशाह वक्त वक्त बैठा चैन खुशीमें एक बारगी महलके भीतरसे रोने पीटनेका गुल उठा खवासें और खोजे सिरमें खाक डालते हुवे बाहर निकल आये और बादशाहसे कहा कि जिस वक्त शाहजादेको नहला धुलाकर दाईकी गोदमें दिया एक बादलका टुकड़ा आया और दाईको घेर लिया बाद एक दमके देखें तो दाई बेहोश पड़ीहै और शाहजादा गाइब होगया यह क्या कयामत टूटी बादशाह यह ताज्जुबात सुनकर हैरान हो रहा और तमाम मुल्कमें मातम पडी दो दिनतलक किसूके घर हांडी नचढी शाहजादेका गमखाते और लहू अपना पीतेथे॥

गरज जिन्दगानीसे लाचारथे जो इस तरह जीतेथे जब तीसरा दिन हुआ वुही बादल फिर आया और एक खिलौना जड़ाऊ मोतियोंकी तोड़ पड़ी हुई लाया उसी महलमें रखकर आप हवा हुवा लोगोंने शाहजादेको उसमें अंगूठा चूसते हुवे पाया बादशाहबेगमने जलदी बलायें लेकर हाथोंमें उठाकर छातीसे लगा लिया देखा तो कुरता आबेरवांका मोतियोंका दर दामनहै और गलेमें हेकल गैारतनकी पड़ीहै और भुनभुना चुसनी चट्टे बट्टे जड़ाऊ धरेहैं सब मारे खुशीके वारी फेरी होने लगीं और दुआयें देने लगीं कि तेरी मा बापका पेट ठंढा रहे और तू बूढा आढाहो॥

बादशाहने एक बड़ा महल नया तामीर करवाकर और फर्श बिछवा उसमें दरवेशोंको रखा जब सलतनतके कामसे फरागत होती तब आबैठते और बतरहसे खिदमत और खबरगीरी करते लेकिन हरमाहकी गैाचन्दी जुमेरातको वुही टुकड़ा बादलका आता और शाहजादेको लेजाता बाद दोदिनके तुहफे खिलौने और सोगातें हरएक मुल्ककी शाहजादेके साथ लेआता जिनके देखनेसे अक्ल इनसानकी हैरान होजाती इसी काइदेसे बादशाहजादेने खैरयतसे सातवें बरसमें पांव दिया जनसाल गिरहके रोज बादशाह आजादबखतने फकीरोंसे कहा कि साओ अल्लाह कुछ मालूम नहीं होता कि शाहजादेको कोन लेजाताहै और फिर देजाताहे बड़ा ताज्जुबहै देखिये अंजाम इसका क्या होताहै दरवेशोंने कहा एक काम करो एक रुक्का इस मजमूनका लिखकर शाहजादेके पालनेमें रखदो कि तुम्हारी मेहरबानगी और मुहब्बत देखकर अपना भी दिल मुश्ताक मुलाकातका हुवाहै अगर दोस्तोंकी राहसे अपने अहवालकी इत्तला दीजिये तो खातिर जमाहो और हैरानी बिलकुल दफाहो बादशाहने मुवाफिक

सलाह दरवेशोंके अफशानी कागजपर एक रुक्का इसी इबारतका लिखा और उसी खटोलेमें रखदिया शाहजादा बमोजिब कायदः कदीमके गाइब हुवा जब शामहुई आजादबख्त दरवेशोंके बिस्तरोंपर आकर बैठे और कलमः कलाम होने लगा एक कागज लिपटा हुवा बादशाहके पास आपड़ा खोलकर पढा तो जवाब उसी शुक्केका था यही दोसतरें लिखीथीं कि हमें भी अपना मुशताक जानिये सवारीके लिये तखत जाताहै इसवक्त अगर तशरीफ लाइये तो बेहतरहै बाहम मुलाकातहो सब असबाब ऐशका तइयारहै साहिबहीकी जगः खालीहै ॥

बादशाह आजादबखत दरवेशोंको साथ लेकर तखतपर बैठे वुह तखत हजरत सुलेमानके तखतके मानन्द हवापर चला जाते जाते ऐसे मकानपर जाउतरे कि इमारत आलीशान और तइयारीका सामान नजर आताहै लेकिन यह मालूम नहीं होता कि यहां कोई है या नहीं इतनेमें किसूने एक एक सलाई सुलेमानी सुरमेकी उन पांचोंकी आंखूमें फेरदी दो दो बूंदें आंसूकी टपक पड़ीं परियोंका अखाड़ा देखा कि इस्तकबालकी खातिर गुलाबपाश लिये हुवे और रंग बरंगके जोड़ेपहने हुवे खड़ाहै आजादबखत आगे चले तो दुरुयः हजारों परीजाद बाअदब खड़ेहैं और सदरमें एक तखत जमर्रुदका धराहै उसपर मलिकशाहबाल शाहरुखका बेटा तकिये लगाये बड़े तुजकसे बैठाहै और एक परीजाद लड़की रूबरू बैठी शाहजादा बखतयारके साथ खेल रहीहै और दोनों बगलमें कुरसियां करीनोंसे बिछीहैं उनपर बड़ेबड़े परीजाद बैठेहैं मलिकशाहबाल बादशाहको देखतेही खड़ा हुवा और तखतसे उतरकर बगलगीर हुवा और हाथमें हाथ पकड़े अपने बराबर तखतपर लाकर बिठाया और बड़े तपाक और गर्म जोशीसे बाहम गुफतगू होने लगी तमामरोज हंसी खुशी खाने और मेवे और खुशबूइयोंकी जियाफत रही और रागरंग सुना किये दूसरे दिन जब फिर दोनों बादशाह जमा हुवे शाहबालने बादशाहसे दरवेशोंके साथ लानेकी कैफीयत पूछी ॥

बादशाहने चारोंफकीरोंका माजरा जो सुनाथा मुफस्सल बयां किया और सुफारिश कीऔर मदद चाहीकि इन्होंने इतनी मेहनत और मुसीबत खेंचीहै अब साहिबकी मेहरबानीसे अगर अपने अपने मकसदको पहुंचें तो सवाबअजीमहै और यह मुखलिस

सो तमाम उमर शुक्र गुजार रहेगा आपकी मेहरबानीसे हम सबका बेड़ापार होता है मलिकशाहबालने सुनकर कहा सिर आंखोंपर मैं तुम्हारे फर्मानसे बाहर नहीं यह कहकर निगाह गर्मसे देवों और परियोंकी तरफ देखा और बड़े बड़े जिन जो वहां सरदारथे उनको नामे लिखे कि इस फरमानके देखतेही अपने तईं हजूरमें हाजिर करो अगर किसीके आनेमें देर होगा तो अपनी सजा पावेगा और पकड़ा हुआ आवेगा और आदमजाद खुाह औरत खाह मर्द जिसके पासहो अपने साथ लिये आवे अगर कोई पोशीदःकर रक्खेगा और पीछे जाहर होगा तो उसका जनअ्क्षः कोल्हूमें पेड़ा जायगा और उसका नाम निशान् बाकी नरहेगा यह हुकुमनामा लेकर देव चारों तरफ तयइयुन हुवे यहां दोनों बादशाहोंमें मुहब्बत गर्म हुई और बातें यखतलासकी होने लगीं उसमें मलिकशाहबाल दरवेशोंसे मुखातिब होकर बोला कि अपने तईंभी बड़ी आरजू लड़के होनेकी थी और दिलमें यह अहद कियाथा कि अगर खुदा बेटा दे याबेटी तो उसकी शादी बनीआदमके बादशाहके यहां जो लड़का पैदा होगा उससे करूंगा इस नियत करनेके बाद मालूम हुवा कि बादशाह बेगम पेटसे हैं बारे दिन और घड़ियां और महीने गिन्ते गिन्ते पूरे दिन हुवे और यह लड़की पैदा हुई मुवाफिक वादेके तलाश करनेके वास्ते जिन्नोंको मैंने हुकुम किया चारदांग दुनयामें तलाशकरो जिस बादशाह या शहनशाहके यहां फरजन्द पैदा हुवाहो उसको बजिनस इहतयातसे जल्द उठाकर लेआवो वुहीं बमोजिब फरमानके परीजाद चारोंसिमत परागन्दःहुवे बाद देरके इसशाहजादेको मेरे पास लेआये ॥

मैंने शुक्र खुदाका किया और अपनी गोदमें लेलिया अपनी बेटीसे जियादः उसकी मुहब्बत मेरे दिलमें पैदा हुई जी नहीं चाहता कि एक दम नजरोंसे जुदा करूं लेकिन इस खातिर भेज देताहूं कि अगर उसके मा बाप नदेखेंगे उनका क्या अहवाल होगा लिहजा हर महीनेमें एकबार मंगालेताहूं कई दिन अपने नजदीक रखकर फिर भेज देताहूं इनशा अल्लाहताला अब हमारी तुम्हारे मुलाकात हुई उसकी कतखुदाई कर देताहूं मौत जिन्दगी सबको लगी पड़ी भला जीतेजी इनका सेहरा देखूं ॥

बादशाह आजादबखत ये बातें मलिकशाहबालकी सुनकर और इसकी खूबियां

देखकर निहायत महजूज़ हुवे और बोले पहले हमको शाहज़ादेके मारे जानेके और फिर आनेसे अजब अजब तरहके खतरे दिलमें आतेथे लेकिन अब साहबकी गुफ्तगूसे तसल्ली हुई यह बेटा अब तुम्हाराहै जिसमें तुम्हारी खुशी हो सो कीजिये गरज दोनों बादशाहोंकी सुहबत मानन्द शीरशकरके रहनी और ऐश करते दस पांच दिनके अरसेमें बड़े बड़े बादशाह गुलिस्तान इरमके और कोहिस्तानके और जज़ीरोंके जिनकी तलबकी खातिर लोग तैनात हुवेथे सब आकर हुजूरमें हाजिर हुवे पहले मलिक सादिकसे फरमाया कि तेरे पास जो आदमजाद है हाजिर कर उसने निपट गमखाकर लाचार उस गुलबदनको हाजिर किया और विलायत उम्मानके बादशाहसे शाहजादी जिनकी (जिसके वास्ते शाहजादा मुल्क नीमरोजका माव सवार होकर सौदाई बनाथा) मांगी उसनेभी बहुतसी उज़र करके हाजिरकी जब बादशाह फरंग की बेटी और बहज़ादखानको तलब किया सब मुनकिर पाकहुवे और हज़रत सुलैमान की कसम खाने लगे आखिर दरयाय कुलजुमके बादशाहसे जब पूछनेकी नौबत आई तो वुह सिर नीचाकरके चुप होरहा मलिक शाहबालने उसकी खातिर की और कसम दी और उम्मैदवार सरफराजीका किया और कुछ धौंस धड़काभी दिया तब वुहभी हाथ जोड़कर अर्ज़ करने लगा कि बादशाह सलामत हकीकत यह है कि जब बादशाह अपने बेटेके इसतकबालकी खातिर दर्या पर आया और शाहजादेने मारे जल्दीके घोड़ा दर्यामें डाला इत्तफाकन मैं उस रोज सैर औ शिकारकी खातिर निकलाथा उस जघः मेरा गुज़र हुआ सवारी खड़ी करके यह तमाशा देख रहाथा उसमें शाहजादीकोभी घोड़ी दर्यामें लेगई ॥

मेरी निगाह जा उस पर पड़ी दिल बेइखतियार हुआ परीजादोंको हुकुम किया कि शाहज़ादीको मै घोड़ी लेआवो उसके पीछे बहज़ादखानने घोड़ा फेंका जब वुहभी गोते खाने लगा उसकी दिलावरी और मर्दानगी पसन्द आई उसको भी हाथों हाथ पकड़ लिया उन दोनोंको लेकर मैंने सवारी फेरी सो व दोनों सही सलामत मेरे पास मौजूद हैं ॥

यह अहवाल कहकर दोनोंको रूबरू बुलाया और मुल्तानशामकी शाहज़ादीकी तलाश बहुतकी और सभोंसे बमसुली औ मुलाइमतस पूछा लेकिन किसूने हामी नभरी

और तमाम निशान बताया तब मलिक शाहबालने फरमाया कि कोई बादशाह या सरदार गैर हाजिरभीहै या सब आचुके जिन्होंने अर्जकी कि जहांपनाह सब हजूरमें आयेहैं मगर एक मसलसलजादू जिसने कोह काफके परदेमें एक किलः जादूके इल्मसे बनायाहै वुह अपने गरूरसे नहीं आयाहै और हम गुलामोंको ताकत नहीं जो बजोर उसको पकड़ लावें वुह बड़ा सख्त मकानहै और वुह आपभी बड़ा शैतानहै ॥

यह सुनकर मलिकशाहबालको तैश आया और लड़ाकी फौज जिन्नों और परीजादों की तैनातकी और फरमाया अगर राज़ीमें उस शाहजादीको साथ लेकर हाजिर हो तो बेहतर और नहीं तो उसको मार पीटके मुश्कें बांधकर लेआवो और उसके गढ़ और मुल्कको नेस्तनाबूद करके गधेका हल फिरवादो वोंहीं हुकुम होतेही वैसी कितनी फौज रवानः हुई कि एक आधदिनके अर्सेमें वैसे जोशखरोशवाले सर्कशको हलकः बगोश करके पकड़लाये और हजूरमें दस्तबस्तः खड़ा किया मलिकशाहबालने हर्चन्दसरजनिश करकर पूछा लेकिन उस मग़रूरने सिवाय नाहके हांनकी नेहायतको गुस्से होकर फरमाया कि इस मरदूदके बन्द बन्द जुदा करो और खाल खेंचकर भुस भरो और परीजादके लश्करको तहयुन किया कि कोहकाफमें जाकर ढूंढ़ ढांढ़कर पैदा करो वुह लश्कर उस शाहजादीकोभी तलाश करके लेआया और हजूरमें पहुंचाया उन सब असीरोंने और चारों फकीरोंने मलिक शाहबालका हुकुम और इनसाफ देखकर दुआयें दीं और शाद हुवे बादशाह आज़ादबख़्तभी बहुत खुश हुआ तब मलिक शाहबालने फरमाया कि मर्दोंको दीवान खासमें और औरतोंको बादशाही महलमें दाखिलकरो और शहरमें आईनः बन्दीका हुकुम करो और शादीकी तइयारी जल्दी हो गोया हुकुमकी देरीथी ॥

एक रोज़ नेकसाअत औ मुबारक महूरत देखकर शाहजादः बख़्तयारका अक़्द अपनी बेटी रोशन अख़्तरसे बांधा और ख़्वाजःजादा यमनको दिमिश्ककी शाहजादीसे ब्याहा और मुल्क फारिसके शाहजादेका निकाह बसरेकी शाहजादीसे कर दिया और अजमके बादशाहजादेको फिरंगकी मलिकःसे मनसूब किया और नीमरोजके बादशाह की बेटीको बहज़ादखानको दिया और शाहजादः नीमरोज़को जिनकी शाहज़ादी हवाले की और चीनके शाहजादेको उस पीरमर्द अजमीकी बेटीसे जो मलिक सादिकके कबज़ेमें थी कतखुदा किया हर एक नामुराद सब्बसे मलिक शाहबालके अपने अपने

मकसद और मुरादको पोंहचे बाद उसके चालीस दिन तलक जशन फरमाया और ऐश अशरतमें रात दिन मशगूल रहे ॥

आखिर मलिक शाहबालने हर एक बादशाहजादेको तुहफे और सौगातें और माल असबाब देदेकर अपने अपने वतनको रुखसत किया वह सब बखुशी औ खातिर जमईसे रवानः हुये और खैर आफियतसे जापहुंचे और बादशाहत करने लगे मगर एक बहज़ादखान और शाहज़ादा यमनका अपनी खुशीसे बादशाह आज़ादबख़्तकी रिफाकतमें रहे आखिर यमनके शाहज़ादेको खानसामान और बहज़ादखानको मीर बख़्शी शाहज़ादः साहब इकबाल याने बख़्तयारकी फौजका किया जब तलक जीते रहे ऐश करते रहे ॥ इलाही जिस तरह यह चारों दरवेश और पांचवां बादशाह आज़ादबख़्त अपनी मुरादको पहुंचे इसी तरह हर एक नामुरादका मकसद दिली अपने करम और फज़लसे बरला कि सब कोई तेरे साथः रहमतसे सुख चैन करें इति ॥

॥ संपूर्णम् शुभमस्तु ॥

IMPERIAL LIBRARY

॥ गलतनामा ॥ २ ॥

॥ अशुद्ध ॥	॥ शुद्ध ॥	॥ पृष्ठ ॥	॥ पंक्ति ॥
नुखानुखा	नुखनुखा	१	५
मुकबरोंमें	मकबरोंमें	८	१२
मुराद	मजाव	८	२४
उस्की	उस्का	९	१३
शेखसत	शखसत्	११	१२
परसिवाथ	परसिवाय	१२	१३
पहेरमें	पहरमेवे	१२	२१
हिरनी	हिरने	१३	२२
सुनसुनाने	सनसनाने	१४	२४
माशूकोंको	माशूकको	१५	११
कलभावा	कलभावां	१७	९
चंदरचन्द	चन्दर चन्द	१९	१
थ्याशे	पियासे	२०	११
इसे	इसमें	२४	२३
उस्की	इस्की	२६	१४
इश्की	इश्ककी	२६	१५
मामूकके	माशूकके	२७	७
अमंबद	अमरंद	३४	२०
जियायत	जियाफत	३७	६
बादशाहत	बादशाहतका	५१	१८
शादीका	शाहजादीका	५१	२३
बाशंदोंको	बाशन्दोंको	५२	१३
कोटी	कोठा	५६	२३
रजमान	रमजान	६६	१५
उस	उस	६७	७
तंकहैयानात	तर्कहैवानात्	६८	२१

॥ गलतनामा ॥ २ ॥

॥ अशुद्ध ॥	॥ शुद्ध ॥	॥ पृष्ठ ॥	॥ पंक्ति ॥
सार	सरि	७२	२६
बदहेल	बदहैबत्	७६	२३
जब्ट	ज़ब्त	८५	६
उन	इन	८५	२३
उन	इन	८५	२५
वहांखाता	वहां देखाता	८६	१०
हगमाममें	हम्माममें	८८	६
कुलेचे	कुलचेको	९३	१८
खोबची	खोपची	९५	४
वैसी	वैसे	१७	१
मेली कुचेली कपड़ा	मैले कुचैले कपड़े	१०४	२१
सुराग	सुराम	१०६	६
सुपारिश	सुपारिश	१०८	६
हालिये	होलिये	१०९	२०
नुनकार	नुनकर	११०	२
मुवह	सुबह	११७	२४
दवानः	दीवानः	१२९	२
कीमतक	कीमतके	११९	१५
खागुन	खावागोन	१२०	४
जांगस	जांगसे	१२५	८
तमझा	तमन्ना	१३१	७
मुपारिश	सुपारिश	१३४	१९
चाहताह	चाहताहै	१३४	४
बांग	बाग	१३८	२३
काड़ो	जकड़ी	१४२	१३
यहीं	यही	१५१	६